॥ श्रीः ॥

कविरत्नमाला।

प्रथम भाग।

जोधपुर निवासी

मुंशी देवीप्रसाद मुन्सिफ

लिखित

जिसमें

यथासाध्य निज परिश्रम और कई वर्षोंके प्रयत्नसे

राजपूतानेके १०८ कवि कोविदोंकी कविता

संग्रह करके जीवनीसहित

लिखी गयी।

कलकत्ता

रत्नमित्र प्रेसमें बाबू नवलकिशोर गुप्तके

प्रबन्धसे मुद्रित।

संवत् १९६८।

॥ श्रीः ॥

कविरत्नमाला

प्रथम भाग

जोधपुर निवासी

मुंशी देवीप्रसाद मुन्सिफ

लिखित

जिसमें

यथासाध्य निज परिश्रम और कई वर्षोंके प्रयत्नसे

राजपूतानेके १०८ कवि कोविदोंकी कविता

संग्रह करके जीवनीसहित

लिखी गयी ।

कलकत्ता

भारतमित्र प्रेससें बाबू नवलकिशोर गुप्तके

प्रबन्धसे मुद्रित ।

संवत् १९६८ ।

भूमिका।

कविताका घर बड़ा है। अनेक कवि हो गये हैं और अनेक अभी विद्यमान हैं; परन्तु कवियोंके जीवन चरित्र लिखने और उनकी कविता प्राप्त करके एक पुस्तकमें एकत्र करनेकी चाल हमारे देशमें कम रही है, जिससे बहुतसे कवियोंकी कविता नष्ट हो गयी और बहुतसे कवियोंके नाम ही पृथ्वीतलसे जाते रहे हैं और जो अभी किसीने एकाध ग्रन्थ इस विषयका बनाया भी है तो वह सन्तोषदायक नहीं है क्योंकि जो उसमें कविताका संग्रह है तो कवियोंका वृत्तान्त नहीं है। इसके उपरान्त यह बड़ा पाप है कि जिस किसीके पास ऐसा कोई ग्रन्थ हुआ भी तो वह देता नहीं। संसारमें पुस्तक पिशाच भी बहुत हैं जो सर्पको नाईं पुस्तकरूपी धनको दबाये बैठे हैं न आप उससे कुछ लाभ उठाते हैं और न दूसरोंको उठाने देते हैं।

मैं बहुत दिनोंसे सुनता हूं कि भाषा कवियोंके वृत्तान्तमें "रत्नानि गुण भाण्डागार" और "क्षीरार्णव" नामक दो ग्रन्थ २०० वर्ष पहलेके बने हुए हैं परन्तु वे मिले नहीं क्योंकि जिनके पास हैं वे छिपाये हुए हैं।

इस समय जैसी सुगमता छापे वगैरासे ग्रन्थोंके प्रसिद्ध होनेमें है, वैसी प्राचीन कालमें नहीं थी; तो भी ग्रन्थोंकी रचनाका उत्साह बहुत था क्योंकि जितनी कवियोंकी कदर पहले थी उतनी अब नहीं है। परन्तु यह बात भी कुछ कम नहीं है कि ग्रन्थोंके पढ़ने पढ़ानेकी रुचि सर्व साधारणमें बढ़ती जाती है और सुशिक्षित लोग देश हितैषितासे अब ऐसे ऐसे ग्रन्थ रचने लगे हैं कि जिनसे भारतका गौरव बढ़ता है। इस काममें हमारे स्वर्गीय मित्रवर काशी निवासी भारतेन्दु, बाबू हरिश्चन्द्रजी बांकीपुर निवासी बाबू रामदीन सिंहजी और गुड़यानी निवासी भूतपूर्व सम्पादक भारत-

४५ गोस्वामी जगदीशलाल ।
४६ गोस्वामी कन्हैयालाल ।
४७ गोस्वामी कर्दमलाल ।
४८ बोहरा तुलाराम ।
४९ बोहरा जीवनलाल ।
५० हनुमत कवि हनुमन्तसिंह हाडा ।
५१ राव चतुर्भुजसहाय ।
५२ राव प्रतापसहाय ।
५३ राव हरलाल ।
५४ कविराव गुलाबसिंह ।
५५ कविराव रामनाथसिंह ।
५६ कुंवर माधोसिंह ।
५७ चन्द्रकलाबाई ।
५८ कविराव चण्डोदान चारण मेशन
५९ कविराज सूरजमल ।
६० कविराज मुरारदान ।

कोटेके कवि

६१ कविराज चण्डीदान ।

झालावाडके कवि

६२ पण्डित गिरधारीलाल ।

जेसलमेरके कवि

६३ श्रीनाथ षटशास्त्री ।
६४ तैलिङ्गभट्ट ।
६५ कवि कल्याण ।

कविरत्नमाला ।

कवि भट्ट मुरलीधरजी ।

ये तैलिङ्ग ब्राह्मण अलवरके राव राजा बखतावरसिंहजीके दरबारमें थे इनकी कवितासे खुश होकर राव राजाजीने इनको गांव "नाथा पाड़ा" जागीरमें दिया जो लछमनगढ़के परगनेमें है। इनके और इनके बेटे श्रीकृष्णजी और पोते दामोदरजीके कवित्त ठाकुरबिरदसिंहजीने कृपा करके भेजे थे सो यहां लिखे जाते हैं;—

कवित्त ।

छाकी प्रेम छाकनके नेमसें छबीली छैल,
छैलकी वसुरियाके छलनमें छली गयी ।
गहरे गुलाबनके गहरे गरूर गरे,
गोरीकी सुगन्ध गैल गोकुल गली गयी ॥
दरमें दरीनहूंमें दीपत दिवारी दरी,
दन्तकी दमक द्युति दामिनि दली गयी ।
चौसर चमेली चारु चञ्चल चकोरन तें,
चांदनीमें चन्द्रमुखी चौंकत चली गयी ॥१॥

सवैया ।

तब नीचहि नैंन किये रहती अब नैंनन नैंन नचावति हौ ।
तब होती लजीली खखैंगतिकों अब प्रेमजूलंक लचावती हौ ॥
तब बोलनी हूं न बुलाय कहूं अब तो बतियान रचावती हौ ।
हिलकीनके सोर गये कित वैंसलकीनके सोर मचावती हौं ॥१॥

भट्ट श्रीकृष्णजी ।

भट्ट मुरलीधरजीके बेटे अलवरके राव राजा बखतावरसिंहजीके समयमें थे यह कवित्त उनका बनाया हुआ है;—

कवित्त ।

रासके विलास बीच बीची सुधा शीतलके,
शीतल सुगन्ध मन्द पवन उपङ्गनी ।
गोपिनकी गान धुनि सुनि सुनि श्रवनन,
अतिहीं अचल भई मन मथ रंगनी ॥
कज्जल कलित नीर हीर जहिरांने नैन,
तेरे ही कृपा तैं भई दरसन संगनी ।
तापत्रय भञ्जनी हौ तीन गुन रंजनी हौ,
श्याम रंग रंगनी हौ जमुना तरंगनी ॥१॥

दास कवि ।

ये भट्ट श्रीकृष्णजीके बेटे दामोदरजी अलवर निवासी हैं इनका जन्म असाढ़ सुदी १४ संवत् १८८७ को हुआ था । यह उनका कवित्त है ।

कवित्त ।

प्रथम लगाय रज मलय सुगन्ध अङ्ग,
ठोक भुजदंड दृढ़ भूखन अकथके ।
रति बहु भांति तेई दांव बहु भांति करै,
जोरहि उसम आली प्रेम ही अनथके ।
तज तरु माली पटकाटितैं लिपटि दोऊ,
हटत न नैक कोऊ तजैया लाज पथके ।
भट्ट कवि दास कहै तरफके अखारे मांहि,
भये गथपत्थ दोऊ मल्ल मनसथके ॥१॥

सवैया ।

नारद राज कहो कवि कौन है कौन सो अङ्ग है दानको दीबू ।
कौन जरै सधि सित्रनते संग कारन वीरको कौन गनीबू ॥
कामकी वासको नाम कहा अरु मावकी दारिसैं कौन खटीबू ।
षट प्रश्ननके षट उत्तर येह बिना कर नारि उछारत नीबू ॥१॥

दोहा।

कुच गति लखियत मीन हरि कंचुकि भाजन बीन।
मधुसूदन हिय सिन्धु धरि लखि पूरबली रीत ॥१॥

पूरणमलजी ब्रह्मराय।

ये कवि अलवरके राव राजा बखतसिंहजीके कवियोंमें नौकर थे और कवितामें मुख्य गिने जाते थे। इनके ये ४ कवित्त इनके पोते जयदेवजीने अलवरसे भेजे थे।

कवित्त।

बासर विभावरी बिलोकिये बराबरसे,
बरहो बचन बाद बोलैं बारबर हैं।
बिछुरैं न बालमसौं बालबनबीजुरीसी,
बसन बनाय बपु बिबिधि बिहार हैं॥
बिरह बिपत्तिकों बिदारिये बिहारीजूसौं
बिहंसि बिशेष कैन बिलम्ब बिचार है।
बारिद बयारि बारि बूंदैं बनबेली बाग
बनिता बिनोद बर बरषा बहार है॥१॥
ललित लवंग लवलीन मलयाचलकी,
मंजु मृदु मारुत मनोज सुखसार है।
मौलसिरी मालती सुमाधवी रसाल मौर,
मौरन पै गुञ्जत मलिन्दनको भार है॥
कोकिला कलाप कल कोमल कुलाहल कै,
पूरण प्रतिच्छ कुहू कुहू किलकार है।
वाटिका विहार बाग बीथिन बिनोद बाल,
विपिन बिलोकिबो बसन्तकी बहार है॥२॥

सवैया।

शीतल वायु बहै निशि बासर शीतल अम्बर भूमि लता है।
शीतके भीत सबै जग कंपित कीनो कठोर हिमन्त हला है॥

ऐसे मैं पीव पयान जो ठानत दीनी दई तुमैं कौन कला है ।
मैं कर जोरि करौं हो निहोरि दिना दश और रहौ तौ भला है॥३॥

कवित्त ।

कीनो नाहिं वेद भेद भयो वलमीक तें न,
जनम्यो न नाभि हरिदासन असुर ईश ।
भाष्यकार नाहिं पुनि कहि न पुरान कथा,
जागत जगत जश पावन सुर सरीश ॥
पूरण प्रसित होत रञ्च कथहूकी कछू,
देव मग देखि दस गिनती गिनै गुनीश ।
सुन अधिकोन अप्रमान भगवान तव,
कैसे कै बखान करूं मेरे तौ है एक जीभ ॥४॥

इन्द्रमलजी ।

ये पूरणमलजीके बेटे थे और अच्छे कवि थे । इनकी क-
विता यह है ।

कवित्त ।

दीखत हौ जोतसी सुजान जातैं पूछौं तुमैं,
लगि है लगन कवै लगन विचारौ तौ ।
कौनसे महूरतमें ऐहै वह धूरत,
हमारे गेह नेह इन्द्र सुदिन उम्हारौ तौ ॥
देहों दान दक्षिणा अनेक द्रव्य मेटो दुख,
ग्रहके संयोगतें वियोग विथा टारौ तौ ।
मेरो मन मोहनतें लागि चुक्यो भांति भांति,
मोतें मनमोहनको लगि है विचारौ तौ ॥१॥

जयदेवजी ।

ये इन्द्रमलजीके बेटे हैं । भाद्रपद शुक्ला १४ संवत् १८२८ को जन्मे । अलवर दरबारके कवीश्वरोंके बेड़ेमें नौकर हैं । इन्होंने ठाकुर विड़दसिंहजीसे कविता सीखी है । इन्होंने अपने कवित्त भी उन्हीं ठाकुर साहिबके द्वारा भेजे थे सो यहां लिखे जाते हैं ।

कवित्त।

लसत तमाल तरु सेवक विशाल अंग,
चंचरीक घंटा बलि शबद सुनायो है।
पुष्प मकरन्दनके झरत अनन्त मद,
शीतल पवन मन्द गवन सुहायो है॥
कवि जयदेव कोकिलादिक मदत्त लोग,
लतिका जंजीर जाल पायन बंधायो है॥
मदन महीपतिको दीरघ दिमाकदार,
आज ऋतुराज गजराज बनि आयो है॥१॥
केशरि कुसुम रंग भासत अनूप अंग,
कोकिलको शब्द नद्द उद्धत सुनायो है।
रुचिर रसाल मौर रदन कराल राजैं,
केशू छवि लाल नख जाल दरसायो है॥
कवि जयदेव केते बिरह वितुंड मारि,
मोतिया सुमोतिनको पुंज बगरायो है।
बापुरो वियोगी बन जीवन बधन काज,
आज ऋतुराज मृगराज बनि आयो है॥२॥
धारे पट अंग कुसुमावली विविध रंग,
पवन तुरंग चढ़ि ढंग दरसायो है।
कोकिलकी कूक सोई पढ़त अमन्द छन्द,
अरुन पराग विन्दु वंदन लगायो है॥
कवि जयदेश बहु भृंग शिष्य सङ्ग रहैं,
श्रीफल अनन्त सभा जीति जीति लायो है।
मदन महीपतिको सुघर समाज देखि,
आज ऋतुराज कविराज बनि आयो है॥३॥
कञ्ज मृदु लोचन विशाल अलि अच्छ माल,
चन्दन पराग अनुरागमों लगायो है।
चटकै गुलाब सोई आहट खराउनको,
कोकिलको शब्द श्रुति शासन सुनायो है॥
कवि जयदेव पात पातक पुराने टारि,

पल्लव पसारि तप तेज दरसायो है ।
मदन महीपतिकी आशिष करन काज,
आज ऋतुराज ऋषिराज बनि आयो है ॥४॥
मुख अरविन्द मकरन्द श्रम स्वेद बुन्द,
मंजुल मिलिन्द वृन्द कच छबि छाई है ।
उत्पल अमल नैन कोकिल मधुर बैन,
कुन्दकली कांतिरद पांति दरसाई है ॥
कवि जयदेव कीर नासिका प्रतान चीर,
त्रिविधि समीर मुख स्वास सुखदाई है ।
लाज भरी आज ब्रजराजके बिलोकिबेकौं,
बनिता अनूप ह्वै बसन्त बनि आई है ॥५॥

सवैया ।

नूतन पल्लव ओठ अनूप दिपैं तन चंपक चारु गुराई ।
बिल्व उरोज सरोज बिलोचन ओढ़नी बेलि बितान बनाई ॥
सेत प्रसून विकाश मनोहर हास विलासनकी सरसाई ।
जोवन तन्त अनन्त बनाय बसन्त किधौं बनिता बनि आई ॥६॥
पट पीतल सैवन केशरिको तन श्याम तमालनके अनुहार है ।
सरसीरुह आनन ओप बनो वनमाल प्रसून अनेक प्रकार है ॥
अलि पुञ्जनि कुंजन गुञ्ज करै मुरली धुनि सो नित होत अपार है ।
उपजावत मार सबै सुखसार बसन्त बहार कि नन्दकुमार है ॥७॥
फैली सुगन्ध भरी लतिका सुइ गोरखधन्ध प्रबन्ध बनायो ।
त्यों जयदेव विभूतिकी भांति बड़े अनुराग पराग लगायो ॥
नीरज नील निचोल अमोल पिकी धुनि बोल अतोल सुनायो ।
प्राणकी भीष वियोगिनि पै ऋतुराज फकीर ह्वै मांगन आयो ॥८॥
बद्दरि लाल प्रवालनकी पिक शब्द अपूर बतूर बजायो ।
पौनकी फेरी दशौ दिशि देत मिलिन्द मुरीदनके मन भायो ॥
सेत सरोजके ओढ़न धारि विभूतिकी भांति पराग रमायो ।
प्रानकी भीष वियोगिनि पै ऋतुराज फकीर ह्वै मांगन आयो ॥९॥
फूलि हैं फूल दशो दिशिमें तन चौगुनी पीर समीर करैंगे ।
गुञ्ज घनी अलि पुञ्ज सुनाय निकुञ्जनमें चितचेत हरैंगे ॥

कोकिल कूकतैं हूक हिये उठि हैं तब कैसेकै धीर धरैंगे।
बैरी बसन्तके आवत ही कपुरे विरही बिन मौत मरैंगे ॥१०॥
घोरनको करिकै चहुं ओरन मोद भरे बन मोर नचेंगे।
वारिद बिज्जु छटा जुत देखि वियोगिनिके तन ताप तचैंगे ॥
त्यों जयदेव उमंगन सों नर नारि अपार विहार रचैंगे।
पावसकी ऋतुमैं सजनी विन पीतमके किमि प्रान बचैंगे ॥
क्यों बचिहौं बरषा ऋतु वीर बलाहक बैरी पुकारन लागे।
मोर मलार मचाय घनी हियरानकौं हाय बिदारन लागैं ॥
मारुत मन्द दगौं दिसितैं विरहोनके अंग पजारन लागे।
आन मक्रू करिकै रहि हैं पपिहा कहि पीव पुकारन लागे ॥१२॥

कवित्त।

आनन अमल चन्द्र चन्द्रिका पटीरपंक,
दसन अमन्द कुन्द कलिका सुढंगकी।
खञ्जन नयन पद पानि मृदुकंजनके,
मंजुल मराल चाल चलत उमंगकी ॥
कवि जयदेव नभ नखत समेत सोई,
ओढ़े चारु चूनरि नवीन नील रंगकी।
लाज भरी आज बृजराजके रिझाइबेकौं,
सुन्दरी ह्वै शरद सिधाई शुचि अंगकी ॥१३॥
फगवा अनेक भांति लेती बरजोरी करि,
कोरी भरि पीतमके कण्ठ भुज मेलती।
अंगमें अनंगकी तरंग उपजावत जे,
नाच राग रंगनमें लोक लाज पेलती ॥
कवि जयदेव चोवा चन्दन कपूर चूर,
अबिर गुलाल आदि सौंधन सकेलती।
सब सुख साज कौन काज बिन मोहनके,
होते बृजराज तो मैं आज होरी खेलती।

सवैया।

वह कामकी कामिनितैं कमनीय कछु मृदुबैन सुनाती रही।

बतियां सुनि काम कलोलनकी अरगाय चितै बतराती रही ॥
इत औसर पाय प्रवीन प्रिया पल आधिक लौं बतराती रही।
गुरु लोगनके डर चौंकतसी छिन छाती छुवायकै जाती रही ॥१५॥
ये कछु कौडिन संग चले रहिजात धरी निधि जो धरनीकी।
स्वारथके सुत औ बनितादिक बंधन प्रीति पिता जननीकी ॥
मानुष देह मिली अति पावन पाय कृपा तिहुं लोक धनीकी।
वाजिब तौ हिय ही इहिं कारन या जगमें करनी करनीकी ॥१६॥

उमेदरामजी।

ये बारहट जातिके चारण राजधानी अलवरमें थे. इन्होंने तिजारेके महाराज बलवत सिंहके वास्ते वाणीभूषण नाम १ ग्रन्थ अलङ्कारोंका बनाया है जिसका मङ्गलाचरण यह है।

चौपाई।

बन्दो श्री गणपत पदपङ्कज। सुर तेतीकोट बंछित रज ॥
एकबसै पितुवचन मान उर। लियो रामबनवास धर्मधुर ॥
चित्रकूट तरवरकी छाया। बैठे सियारामरघुराया ॥
कीन्ह प्रणित सौमित्र जोरकर। राज्यनीति कहिये सीतावर ॥
हुवे प्रसन्न बोले रघुनायक। लोकअजाद वेदमयबायक ॥

(१) ये अलवरके महाराजा बखतावर सिंहजीके बेटे मूसीनाम बेश्यासे थे, जब महाराजाका देहान्त हुआ तो इन्होंने मुसलमानोंकी सहायतासे राज्य लेनेका उद्योग किया जिसके यथार्थ अधिकारी महाराज बनेसिंह जी थे, जो महाराजा बखतावर सिंहजीकी रानीसे थे राजपूत सब उनके पक्षमें हुए। निदान इनको ४ लाखकी जागीरसे तिजारा दिया गया जो इनके अपुत्र मरनेपर फिर महाराज बने सिंहजीको मिल गया।

इनका नाम विड़द सिंह जी है अलवर इलाकेके गांव किशन पुरेके जागीरदार हैं इनका निकास नीमरानेके चौहान राजाओंसे है जो दिल्लीपति महाराजा पृथ्वीराज जीके बंशमें हैं।

नीमराणेके राजा डूंगरसिंहजीके दो बेटे रामदास और खड्गदास थे रामदास बादशाहके हुक्मसे किसी लड़ाईमें गये थे पीछेसे डूंगरसिंहजीका देहान्त हो गया तो रामदासने अपने छोटे भाईको यह लिख भेजा कि मैं लड़ाई छोड़कर नहीं आ सकता हूं और गद्दीका खाली रहना उचित नहीं है। इसलिये तुम बैठ जाओ।

खड्गदास इस तरह अपने भाईकी आज्ञा पाकर राजा हो गये पीछेसे रामदास लड़ाई जीतकर आये तो अलवरसे १२ कोस पर रामपुरा नामक एक गांव बसाकर वहां रहने लगे। उनके चार बेटे भगवानदास, राघोदास, बाघसिंह और किसनदास हुए।

भगवानदासने रामपुरेसे ६ कोस पूरबको बेनक नामक एक गांवमें अपना राज्य जमाया। उनके बेटे अचलदास थे। अचलदासके पृथ्वीसिंह, उनके गङ्गाराम, उनके बखतसिंह, उनके देवीसिंह, उनके फतहसिंह, उनके नाहरसिंह, उनके कृपाराम हुए जिनको १२घोड़ोंकी जागीरमें तीनगांव, किशनपुरा, वगैरा दरबार अलवरसे मिले, क्योंकि उनकी बाईका व्याह अलवरके महाराज मंगलसिंहजीसे हुआ था। इनके कुंवर बिड़दसिंहजी अब किशनपुरेके ठाकुर हैं। इनका जन्म सम्वत १९८७ में असाढ़ सुदी १ को हुआ था। इन्होंने काव्य रचना कविराव गुलाबसिंहजीसे सीखी है और कवि रावजीने ही पहले इनके कवि होनेका व्योरा हमको दिया था फिर इनके छोटे भाई ईश्वरीसिंहजी जोधपुरमें हमसे मिले और उन्होंने बिड़दसिंहजीकी और अलवरके कई दूसरे कवियोंकी कविता मंगाकर हमको दी जिसके लिये हम इनका बहुत उपकार मानते हैं।

बिड़दसिंहजीकी कविता विद्वत्तासे परिपूर्ण है। इनकी पद अच्छे, युक्ति अच्छी और भाव भी अच्छा होता है उसमेंसे कुछ यहां लिखी जाती है—

सवैया।

नहीं गाजत बाजत दुंदुभि हैं चपला न कढ़ी तरवारि अली।
धरवान तुरङ्ग ये माधव चातक मोरन बोलन वीर बली॥
जलधार न जार मिलो सुखको घन हैं न मतङ्गनकी अवली।
बरषा न विचारि भटू भिरपै सजि साज मनोजकी फौज चली॥१॥

पापि पपीहा पुकारिके पीव जगाय है जीव विथा बहुतेरी ।
दादुर झींगर शोर मचाये रचाय हैं मोर मलार घनेरी ॥
माधव एक तो मैनकी गाढ़ल दूजै असाढ़की रैन अंधेरी ।
हाय वियोगनि क्यों बचिहैं घन घोरकै चञ्चला आय है नेरी ॥२॥
यह भूमि हरी पजराय खरी चुनि इंदु बधून कहूं धरि दै ।
पिक मोरन मारि निकारि झिल्ली बिष चातक चोंचनमें भरि दै ॥
चहि मोहि जिवायो जो मेरी हितू पिय माधव आगमको ररि दै ।
दुखदायनि दाम निदूरि दुरा बदरानकों बेगि बिदा करि दै ॥३॥
कोकिल कूकतैं हूक हिये उठि है चपलानतैं प्रान डरैंगे ।
देखिकै बुंदनको झर लोचन सोचनतैं अंसुवा न झरैंगे ॥
माधव पीवकी याद दिवाय पपीहहू चित्तको चेत हरैंगे ।
प्रीति छिपी अब क्यों रहि है सखि ये बदरा बदनाम करैंगे ॥४॥
दन्त कढे बकपन्तिन हैं घुमडे घन हैं न मतङ्गजकारे ।
माधव वीर समीरन है धुर वाज तुरङ्गन लेत तरारे ॥
मोर पिकादि न लोग मदत्तके घोरत घोरन तोप धुकारै ।
भागहु रे विरही बरषा न ये मैन महीपतिके चमुवारै ॥५॥
बरषाकी अनीति कहांलौं कहौं कल हंसनको कुल जात भग्यो ।
विन जीभके बोलि बिगारत कान शिखंडिनके मन मैंन जग्यो ॥
कहि माधव जीवन दायक हू जग मारग रोकन रंग रंग्यो ।
धन छाड़ि विदेशन मैधनितें अब बूढ़नकों रंग होंन लग्यो ॥६॥
सोहत है किसलैक फनीवर बेलि बितानकों फैंट बनायो ।
कुन्दकली करि कौड़िन माल विभूति ज्यों अंग परोग लगायो ॥
माधव केलि प्रसूनलै खप्पर कोकिल कूक सदालै सुनायो ।
प्रानकी भीख वियोगिनिपै ऋतुराज फकीर ह्वै मांगन आयो ॥७॥

कवित्त ।

नूपुर निहारि मन मेरो गयो जहरिपै,
सुरवा चढ़ि नीबीके छोरनमैं झटक्यो ।
किंकिनी करीन फिरि ह्वांतें नाभिगाढ़परि,
निसरि रुमावलि ह्वै कुच ओर सटक्यो ॥
माधव सुकवि पाय लोचर या औसरमैं,

यक छिन चौसर सुनी सरसैं अटक्यो ।
सुलफ कपोलनपै पटकनि खाय पुनि,
जाय नथुनीकी लटकनि बीच लटक्यो ॥८॥
जाके रंगराती तजे गोती हितू नाती साख,
ननद रिसाती गुरु सीखन सुहाती है ।
नीद नहीं आती औ तलफत बिताती रैन
धीर न धराती न सिराती छिन छाती है ॥
पान न चबाती सतराती लखि भूषनन,
सा बिनलैकाती भयो मदन आघाती है ।
छीन परो जाती नित माधव अंदेश यहै,
वा बीसासघातीको सन्देश हू न पाती है ॥९॥

सवैया ।

सखि घात परोसनि सैन दई बस नेह मनोतिहिं गेह गयो ।
धरि माधव अङ्क मयङ्कमुखी कलकामकलानि कलाप ठयो ॥
परिरम्भन चुम्बन हौंन लगे इतने महिं आनि बिहान भयो ।
बुधिहीन बिरंचते का कहिये सपनौं न संपूरन होन दयो ॥१०॥
विपरीति रची सपने रमनी लटलूमि कपोलन औपबढ़ैं ।
अरविन्द मिलिन्दनकी अवली कि कलानिधिपै अहिबाल चढ़ैं ॥
उचकैं कुच माधव लङ्कलचे कल किंकिन कोक कलासो पढ़ैं ।
तजि बैरिनि नैनन नींद गई पै अजौं हियतैं न अनन्द कढ़ैं ॥११॥
रंग्यो जिहिं जावकके रंग भाल गुलाल करे दृग पानकी पीक ।
हिये बिच कुंकुम छाप लगाय दई अधरानमैं अञ्जन लीक ॥
मयङ्ककला सम अङ्क किये नखतैं लिखि माधव अंग न ठीक ।
कहा इमते जनि राखहु गोपि लला वहकी रमनी रमनीक ॥१२॥

कवित्त ।

राखै यसि जास जास जनया बगीचा है,
पै उन अचेनतैं कछु न सहाय है
मालिनी सी माली टोऊ करे रखवाली जोऊ,
तौकौ आय कौन चोर चोरो कर जाय है ॥

माधव निकारि तिन्हैं सङ्गकी सहेली छांडि,
रहिहैं। अकेली आज कीन्हो यो उपाय है ।
जानिकै निकुञ्ज मंजु सूनौ वह लोभ लग्यो,
जोपै नेक आय है तौ नीके फल पाय है ॥१३॥
काहू कर्म मुख्य राख्यो काहूनै उपासनाकौ,
विविध विधान करि जतायो सुडौल है ।
काहू पञ्च भूत मन बुधि चित अहंकार,
औरहू प्रकृतिनसौं लियो करि तोल है ॥
सत्य सरबज्ञ सर्व व्यापक अखण्ड एक,
अलख अलेख ऐसैं बधो काहू बोल है ।
है न आदि अन्त जाकौ ताकौ कहि सकत कौन
दृष्टि करि देखौ तौ दिखात गोलमोल है ॥१४॥

सवैया ।

तन प्रान दुहूनके पोषनकौ धनवाननके जिन पाय परै ।
तनकौ तनकौ न निशान रहै मृतिकामै मिलै या कृशानु जरै ॥
सुख औ दुखतैं नित प्रान असंग घटै न बढ़ै न जरै न मरै ।
भव त्रास दुरास बिसारि सबै किन रामके नाम बिसास करै ॥१५॥
आछे अवास अवासे दिखात सुहात न जे पट धारिबे लायक ।
ताल सुखात जरै तरु पात बहै खरबात अतात सहायक ॥
माधव गात पसेव चुचात सिरात न रात तपै दिन नायक ।
ग्रीषम घात सह्यो नहिं जात सुकाहिन आत हौ जीवन दायक ॥१॥

सवैया ।

इहि चोर सिहींचनी गाज परो विन काज अजान मैं आय फंसी ।
कर छूइवेके दुरि औरन तैं हरवाय अंध्यारे निकुंज धसी ॥
रंग सांवरो माधव सूझि परयो न अचानक ठोकर खाय खसी ।
चुरियां भइ चूर भरे अंग धूर तुम्हैं बिन बात क्यों आत हंसी ॥१॥
प्रोति परे करि प्रीतमकी परि प्रेम पयोधि भलैं अवगाह्यौ ।
गारि सही गुरु लोगनकीरु वृथा विरहानल मैं तन दाह्यौ ॥
माधव मैं समुझी न सनै यह ह्वैहै चवाइनको चित चाह्यौ ।
रावरे काज तजी कुल लाज भलौ वृजराजजू नेह निबाह्यौ ॥२॥

प्रिया संग केलि ठई सपने मिलि माधव चित्त लह्यौ अति चैन ।
उरून उठाय उरोज गहे मन लोल भयो अधरामृत लैन ॥
सकेटत अंक मयंकमुखी सिसकी भरिकै कहैं कोमल बैन ।
बजी कल पीठिपै पैजनियां इतने महिं नींद गई तजि नैन ॥३॥
सपने नव बालइ कंत बिलोकि अचानक जाय भुजान भरी ।
मुख चूमि उरोज हिये बिच लाय मिलाय उरू चित चाही करी ॥
कहि माधव अंग दबैं करि सी सफरी जिम अंकसैं तैं उछरी ।
कर ऐंचि धरौं परयंक लै फेरि इतै अखियां दुखिया उघरी ॥४॥

दोहा ।

संग रहैं अपसर बिबुध लोय न अंग बिसेस ।
बसु बरसत परदार प्रिय पुरहू तकि संग सेस ॥५॥

ये २ सवैये इनके कवि राव गुलाबसिंहजीने बूंदीसे भेजे थे ।

सवैया ।

इकंत बिलोकि अनन्दित होय दुकूलन दूर किये अति प्रीत ।
समाधिके हेत विधान अनेक न साधत आसन सो विपरीत ॥
सिखयो गुरु तोहि विदेह मनो दई माधव ताने अद्वैतता नीति ।
निरन्तर सीकर मन्त्र उचार लखी सब भोगमैं योगकी रीति ॥१॥
कलङ्क धरे पुनि दोष करे निसिमैं बिचरे रह बंक हमेस ।
उदे लखि मित्रको होत मलीन कमोदनिको सुखदान बिसेस ॥
रखै रुचि माधव वारुणीकी बपुरे बिरहीनको देत कलेस ।
न जानिये कौन विचार बिरंच रच्यो यहि चंदको नाम द्विजेस ॥२॥

ईश्वरीसिंघजी ।

ये माधव कवि बिड़दसिंजीके छोटे भाई हैं । इनका जन्म मंगसर बदि ५ सोमवार संवत् १८१३ को हुआ है । जोधपुरमें कई वर्ष पहले इनसे मेरी मुलाकात हुई थी । बहुत गुणी और सज्जन पुरुष हैं । इन्होंने मुझको अपनी भी कविता इस ग्रन्थके वास्ते दी और अपने भाई और अलवरके दूसरे कवियोंकी भी मंगा दी जिसका मैं पहले गुणानुवाद कर चुका हूं । ईश्वरीसिंहजीकी कविता बहुत सरल सरस और सुखद है उसमेंसे कुछ सहर्ष यहां लिखी जाती है ।

घनाक्षरी ।

बालपनै ज्ञान हीन कौतुक ा लीन भयो,
भूत लौं भ्रमत रह्यो लिप्त होय कर्म कीच ।
यौवनके आवत ही कामको गुलाम बनि,
बाम रत होय लषो नेकहूं न ऊंच नीच ॥
चिन्ता अधिकात बुधि बलहू नशात जात,
जरातें ग्रसित गात सूझत समीप मीच ।
जानि बूझि रहे अजान होत नाहिं सावधान,
मन्दमति मो समान आनको जहान बीच ॥१॥
अन्तरको जानत बखानत बनैं न यातें,
तौऊ निज बिथा कछू भाषत ढिठाई ठानि ।
क्रोध बिकराल रूप धारि तन जारै पुनि,
तमकि अपार लोभ डारै गरै पासी आनि ॥
तीच्छन सरन मार बेधत हियें दुसार,
रावरी शरण अबै आयोहूं भरोस मानि ।
विपति निहारि पुनि आरत पुकार सुनि,
राखि लेहु दीनानाथ निपट अनाथ जानि ॥२॥

सवैया ।

डस्यो ा व व्याल कराल महा उर सांझ उठी विष ज्वाल विशाल ।
रही सु धहू न विहाल भयो न कछू उपचार बनै इहिं काल ॥
महा । दुगारुरी आय सुने सुमया करि ताप हरो ततकाल ।
दया ा करौ दुख दारुण देखि तौ काहि कहावत दीनदयाल ॥१॥

चन्द्रायणा ।

पायो नरतनु जन्म भयो यह दावरै ।
हरिभजि विषयाधीन होय जिन वावरै ॥
पुनि यह दुर्लभ देह कबूनहि पायहै ।
छिन छिन वीती जाय आयु पछतायहै ॥४॥

मनोहर ।

प्रीतम पियारो आय विनती करत चाय,
अतिहि लजाय रह्यौ नैंन निननायहै ।

हाथ जोरि हाहाखाय एरी तुव पाय पर्यो,
तौऊ किहिं भाय तेरे आवत न दाय है ॥
ईश्वरहियेतैं एतो कियो है कठोर काहा,
हठहि बिहाय हठ ठानैं रस जाय है।
नेह सरसाय उठि उरतैं लगाय लैरी,
रिस न जनाय नतो पाछै पछितायहै ॥५॥

सवैया।

कबहू नहि साधी समाधिको रीति न ब्रह्मकी जीवमैं ज्योति जगी।
कबहू परजङ्कमैं अङ्कनलीनो मयङ्कमुखी रस प्रेम पगी ॥
कवि ईश्वर प्यारीकी बातनहू कबहू नहि चित्तकी चाह भगी।
यह आयु गई सब हाय वृथा गरसेली लगी न नवेली लगी ॥६॥
नैनन धीर धरै जियरा कोउ लाखनहू उपचार करो किन।
ईश्वर जानिहै वेई विथा पहिलैं कबहू यह पीर सही जिन ॥
मोमनको गति जाति कही न नसौ जुगकी सम बीततहै छिन।
लागतहै विष कन्द बराबर चैतकी चांदनी चन्दमुखी बिन ॥७॥
सन्तत सन्त सरोज विकासत नासक दुष्ट कुमोद असेसहै।
दीन दरिद्र तुषार अपार निवारन हेत उदोत हमेसहै ॥
सालक सत्रु उलूकनको प्रतिपालक बांधवको कविसेस है।
भूप सिरोमनि औजयसिंह नरेसको तेज प्रचण्ड दिनेसहै ॥८॥

दोहा।

अलवरतैं पश्चिम तरफ, पञ्चकोस परमान।
ग्राम किसनपुर नाम मम, जन्म भूमिको थान ॥९॥
तीन ग्राम जागीरके, तेरह हयके मांहि।
अलवर पतिकी औरतैं, लिखित पटा विच आंहि ॥१०॥
पुनि डेडरिया खापमैं, आल्हणोत चौहान।
नाम ईश्वरीसिंह नित, कविजन दास निदान ॥११॥

सवैया।

हंसि खेलनकी चित चाह नहीं परवाह न रागरु रंगकी है।
तियनेह उमङ्गन अङ्गनमैं नहीं सञ्चय द्रव्य प्रसङ्गकी है ॥

कवि ईश्वर मानहूको नहि ध्यान पसन्द न वीरता जगकी है ।
कछु और न साध रही मनमें इक चाह अबै सतसंगकी है ॥१३॥

बरवै ।

हरि भजि तजि मन बौरे विषयन चाह ।
बहै दुख दूर मिलै ज्यौं सुखकी राह ॥१४॥

रामद्विज ।

इनका नाम रामचन्द्र है कान्यकुब्ज ब्राह्मण और हाई स्कूल अलवरके अध्यापक है जन्म श्रावण सुदी ४ सम्वत् १८०७ का है ठाकुर विड़दसिंहजीके शिष्य हैं इन्होंने जानकीमंगल नामका एक ग्रन्थ बनाया है उसीमेंके ये पद कुछ कवित्त और कुछ सवैये उन्हीं ठाकुर साहिब द्वारा भेजे थे ।

पद जानकी मङ्गलका ।

सिय शिर सैंदुर रघुवर दीनौ ॥टेक॥
किधौं प्रफुल्लित जानि कमल,
अलि आवलिन हल्लौ कीनौ ।
कि धौं फणीमणि धारि सुधाहित,
नखत नाथ गहि लीनौ ॥
कै तम तजि रिस तिहिं निय शिर धरि ।
भौ निशनाथ अधीनौं ॥
किधौं निहारिन यो निज नायक ।
निशि मणि नजर नवीनौ ॥
किधौं राम अनुराग प्रगट करि ।
सिय सुहाग रंग भीनौ ॥१॥
राम हिय सिय मेली जयमाल ॥टेक॥
मानौ घन बिच रच्यौ चञ्चला ।
सुरपति चाप विशाल ॥
लखिकै सकल भूप जिय झुरसे ।
ज्यौं जवास जल काल ॥
सुमनस सिखी नचत धुनि सुनिकै ।
दुंदुभि गरज रसाल ॥

कहि द्विज राम छावहुर गावत।
जनु जल कप्ठन जाल ॥२॥

कवित्त।

तरु पतझारै मन पापन निवारै कल,
अंकुर निकारै दृढ़ ज्ञान उपजायो है।
त्रिविध समीर झर षटु त्रयताप हर,
सहित पराग अरु वीत राग गायो है॥
सुमन विकास वर ब्रह्मको प्रकाश करै,
जिज्ञासू मधुकर न मधु मन भायो है।
सुख सरसंत यह नवल वसन्त कैधौं,
सदज स्वतन्त्र सन्त जगहित आयो है ॥३॥

सवैया।

मौरन मौर मनोहर मौलि अमोल हराहिय मोतिया भायो,
नूतन पल्लव साजि झंगा पटका कटि सौन जुही छवि छायो।
कोकिल गायन भृंग बराती चढ्यो पवमान तुरंग सुहायो,
छाय उछाह दिगन्तनराम ललाम वसन्त बनो बनि आयो ॥४॥

कवित्त।

वारिद वरुण साजि परु हिम रुत दाजि,
चञ्चला चढ़ाय चिल्ला रोहित कमान है।
चातक मयूर झिल्ली कोयल करत शोर,
लीने ये अभारें हेत लोग यममान है॥
मृगनी वियोगनि विलोकि व्रजकाननमें,
राम रचि पाखि चन्दलतिका वितान है।
घेरी हूँ अहेरी बान बुन्द बरसाय हाय,
नजर करेरी करि घेरी पञ्चबान है ॥५॥
कहत बनै न जिन्हैं देखि देखि वोही चहै,
परम अनूप रूप भूपकुल जाये हैं।
विष्णुभुज चयार शिवजूके नागहार,
छार कै सुख कुमार मार अनतु बताये हैं॥

राम द्विज ऐसो कौन सुखमा कदूह भौन,
निज कर आजलौंन विधना बनाये हैं ।
गञ्जनी अपार भुव भार टारिबेकौ काज,
मानौं ब्रह्म दुइ अवतार धारि आये हैं ॥६॥
सहज सलोनौं श्याम घन सो सुभग अंग,
जिनमें अनंग होत तंग मन गारे हैं ।
कुन्द इन्दु मन्दकर दूसर कुंवर नीके,
परम उमंग संग विधना संवारे हैं ।
राम द्विज देखि मन मोहे नर नारिनके,
कौशिक मुनीशजूके मख रखवारे हैं ।
गञ्जन महीपमान रञ्जन जनकजूकौं,
ऐसो निरञ्जन धनु भञ्जन पधारे हैं ॥७॥

सवैया ।

गावत हैं गुण शेष सुरेश प्रजेश दिनेश सबै मन भावत,
भावत माधुरी मूरति राम अली छबिसौं शत काम लजावत ।
जावत है न प्रतीति हिये तैं लगै न इन्हैं पल चाप चढ़ावत,
ढ़ावत ये गिरसे गन दैत्य तरी मुनि ती पगधूरि लगावत ॥८॥

कवित्त ।

देन कह्यो तोहि राज दीनी बन कौन काज,
मोसी अभागिन आज कोऊ ना जहानमैं ।
कैकई कुमन्त्र साज वशिके अवधराज,
सुवश बसत गाज पारयो है सुथानमैं ॥
रामद्विज धारि ताज भरत किलेय राज,
ऐसे जो बुध समाज मुख्य नीतिवान मैं ।
कहूं ना वियोग दाज छाड़ि कुल कान पाज,
अङ्ग चलूं रघुराज विपन महान मैं ॥९॥
कहो अवधेश अब दीजिये निदेश मोहि,
चन्द्र नांहि चूरिकै निचोरि सुधा लाऊं मैं ।
जायकै पताल ताल मारि जीति शेषजूकौं,
आदकुली नागनकौ गनिकै नशाऊं मैं ॥

रामद्विज मण्डितयश मार्तण्ड मण्डलकौ,
प्रबल प्रचंड तेज सीतल बनाऊं मैं ।
खंड यमदंडकों उदंड भुजदंडनसौं
वीरबल बंड पौन पूत न कहाऊं मैं ॥१०॥
इन्द्र यम वरुण कुबेर रुद्र देवहवै,
करैं जो सहाय तऊ मेघनाद मारिहौं ।
असुर समूह लेय धावै दसकन्ध अन्ध,
फारि कै उदर भुज बीसहु उपारिहौं ॥
रामद्विज छाय यश आज रघुराजजूकौ,
देकै विभीषण राज वैरिनकों मारिहौं ॥
रंककै मंदोदरी निशंक डंक दै निशान,
लङ्ककौं उपारि पङ्क वारिधमें गारिहौं ॥११॥
घूंघट पलकमें न पलक छिपावैं मुख,
जोवैं रुख कान्ह कानि कुलकी न धारे हैं ।
बर बरुनीनतैं चलात पिचकारी भारी,
ललित ललाई पट अंग अरुणारे हैं ॥
ऊधौ यह ऊधम मच्यो है ब्रज धाम धाम,
राम अभिराम अश्रु रङ्गके पनारे हैं ।
करि बरजोरी बरजोरीमें रहत हित,
नित प्रति होरी नैन खेलत हमारे हैं ॥१२॥
यावक न भाल यह ललित गुलाल लाल,
उर कुच छाप नाहिं केसर लगाये हौ ।
मुरली न जान पिचकारी कर धारी श्याम,
राम अभिराम रूप सरस सुहाये हौ ॥
गात जल जात पर देखो श्रम बुन्द नाहिं,
रङ्गकी तरंग अंग छीटैं छवि छाये हौ ।
कछु तुतरात इतरातसे करत बात,
होरी खेलि राति कित प्रात इत आये हौ ॥१३॥

रामगोपाल कवि ।

ये सनाढ्य ब्राह्मण वैद्य अलवर दरबारके आश्रित हैं । जन्म

जेठ बदी ७ संवत् १८८६ का है। कविता अच्छी करते हैं। इनके ये २ कवित्त ठाकुर बिड़दसिंहजीने भेजे थे।

कवित्त ।

चन्द हौसुचैदो भयो चाकर चिराकै गई,
मीन मृग मौन गही सूने भये सौंधे हैं।
खञ्जन कैरञ्ज हुयो कोकिल कमीन हुये,
किंशुक कसाई सरे चीता चित चौंधे हैं॥
भूपति अनंगकी सुअंग सरदारी सब,
मालतीके मल्लिनके मान मन मौंधे हैं।
दामिनि दबैल हुई रति विधवासी हुई,
मदन महीपके नगारे आज औंधे हैं॥१॥
झिल्ली मोर मंडुकन फौजैं फूटि फैल गई
चोपदार चलत तड़ाका फेर फुरतीको
चातक तंबूर बजि कंदर्प्प कम्पू चढ़े,
घेर लियो धूमधाम धूमधाम धरतीको,
मान घिरयो कठिन किलापै मची मारामार,
पारावार हुकुम वियोगिनकी भरतीको।
पावस उजीर नये हाकिमको शोर नयो,
तौर नयो मदन महीप चक्रवरतीको॥२॥

दत्त कवि ।

उमादत्तजी कानकुब्ज अलवरके कवियोंमें नौकर हैं इनकी रुचिर और रसमयि कविता जो हमको ठाकुर बिड़दसिंहजीकी गुणज्ञतासे प्राप्त हुई थी सो यहां बड़ी प्रसन्नतासे लिखी जाती है।

कवित्त ।

गेहतैं निकसि बैठि बेचत कुसमहार,
देह द्युति देखि दीह दामिन लजाकरै।
मदन उमङ्ग नव जोवन तरङ्ग उठै,
बसन सुरंग अंग भूषण सजा करै॥
दत्तकवि कहै प्रेम पालन प्रवीननसों,
बोलत अमोल बैन बीनसी बजा करै।

गाजव गुजारती वजारमैं नचाय नैन,
मञ्जुल मजेज भरी आलिन मजा करै ॥१॥
छीन कटि छैलता छिपावति बदन फेरि,
हेरति हजारनमैं नैकन हटा करैं ।
मन्द मन्द हंसति लसति देह दामनसी
परम प्रवीन पुञ्ज प्रेमके पटा करैं ॥
दत्तकवि कहैं उपपतिके मिलाप हेतु,
निपट निशङ्क पनघट पैं डटा करै ।
घायल करत पाय पायल वजाय हाय,
नैन वान घालिकै कलारिन कटा करै ॥२॥

सवैया ।

कैरति रङ्क रचो हमसौ सिखि साजि भली विधि सेज समाजा,
कैमुख फेरि इतैं हंसि हेरिकै टेरि भलै मृदु वैन सुनाजा ।
त्यौं कवि दत्त न भावत मोहि लखे विन तोहिं कछू सुख साजा,
कै अपनै छन हाथन लायकै हाय हलाहल घोरि पिलाजा ॥३॥
करिकै सब अङ्ग सिंगार भलैं निकसी रुचि रूप प्रभा धरिकै,
धरिकै पग पाट पै ऐंचि रही रसरी रस रीति हियें भरिकै ।
भरिकै गगरी डगरी हितसौं कवि दत्त गयन्दगति हरिकै,
हरिकै मन मेरो मयङ्क मुखी गई कोरि कटाक्ष कटाकरिकै ॥४॥
चन्दनके चहलैमें परी परी पङ्कजकी पखुरी नरमीमैं,
धाय धसीख सखा न नहाय निकुञ्जन पुञ्जनमें भरमीमै ।
त्यौं कवि दत्त उपाय अनेक किये सगरी सही वेसरमीमै,
शीतल कौन करै छतियां विन पीतम ग्रीषमकी गरमीमें ॥५॥

कवित्त ।

जटा जूट है न वेनी रुचिर बनाइ यह,
मृगमद कण्ठ ताहि गरल विचारै क्यों ।
शशी है न शीश सोहै सुमन समूह स्वच्छ,
चन्दनकी विन्दुनैन अनल निहारै क्यों ॥
दत्त कवि कहै ये तो अलकैं छुटी हैं वक्र,
भूषण भुजङ्ग जानि रोष उर धारै क्यों ।

अबल न अङ्ग पीव विरह धवलताई,
धोखे त्रिपुरारिके मनोज मोहि मारे क्यों ॥६
तूक जाती मौतें सबै दीरघ दिमाक देखि,
रसिक विलोकि होत विकल निहारेमें।
अरत न मारे थके गारडू बिचारे जरी,
जन्त्र मन्त्र विविध प्रकार उपचारेमें
दत्त कवि कहै मन धरत न धीर अजों,
कैसे बचैं कुटिल कटाक्ष फुसकारेमें।
विषधर भारे नागकारे नैन कामिनीके,
काटि छिपि जात हाय पलक पिटारेमें ॥७॥

कुमारकवि (रामकुमार खंडेलवाल)

ये अलवरके खण्डेलवाल बनिये हैं, मङ्गसर बदी १० सम्वत् १८८० को जन्मे थे इनकी यह कविता ठाकुर विड़दसिंहजीने भेजी थी।

कवित्त।

एक बेर टेरेतैं पधारे वेग द्वारिकातैं,
द्रौपदीकी लाज कुरराजतैं बचाई है।
जन प्रहलादकी पुकार निरदम्भ सुनि,
खम्भतैं प्रगट व्हैके विपति नशाई है॥
मुकवि कुमार रखि बालक विहङ्गमके,
भारतमें भीषमकी पैजकौं निभाई है।
पारन ज्यों आरत पुकार करौं बार बार,
मेरी बार येती नाथ बार क्यों लगाई है॥१॥

सवैया।

कुल कानि बिसारि दई सगरी गुरु लोगनते सकुचानौं पर्यो,
अविवेक कहा कहिये अपनौ मनि मानक दै पछितानौं पर्यो।
बिरहानल तापन सौंतपिके निशद्योसखरौ अकुलानौ पर्यो,
कुमसौं नवनेह लगाय हमैं अंसुवानके मेहमें न्हानौ पर्यो ॥२॥

नलसिंघ।

बूंदीके कविराव रामनाथसिंहजीने विजेपालरासेका थोड़ासा

भाग भेजा है और लिखा है कि यह राव नल्लजी कृत है इसका इतना ही भाग मिला है विजयपाल वृजबंशी यादव राजा थे और इनका बड़ा राज्य था। इन्होंने एक सन्तके बरदानसे सर्वत्र दिग्विजय पायी थी इनके कवि राव नल्लसिंह, पल्लसिंह, दल्लसिंह और जल्लसिंह चारों भाई सिरोहिया जातिके राव थे इन्होंने यह रासा बनाया था जिसकी दक्षिणामें महाराज विजयपालने इनको हिंडोन नगर सात सौ ग्रामों सहित दिया था जिसकी बात इन्होंने इस दोहे और छप्पैमें कही है।

दोहा।

भये भट्ट प्रथु जन्नतें है सिरोहिया अल्ल।
वृत्तेश्वर जदु वंशके नल्ल पल्ल दल जल्ल ॥१॥

छप्पय।

वीसा सौ गजराज वाजि सोलह सौ माते।
दिये सात सौ ग्राम सहर हिन्दू न सुदांते ॥
सुतर दिये द्वै सहस रकम गिलमैं भरि अम्बर।
कञ्चन रत्न जड़ाव वहुत दीनेजु अडम्बर ॥
कुलपूजित राव सिरोहिया यादवपति निज जस कियव।
नृप विजयपालजू विजयगढ़ साहूये जु समर्प्पियव ॥२॥

महाराजा विजयपालकी राजधानी विजयगढ़में थी और वहीसे यह शासन इनको दिया गया था इनके वंशमें चतुरभुजसहाय प्रतापसहाय आदि शिरोहिया राव हुये जिनके वंशज अब कोटे राज्यके गांव हरनावदा आदि ग्रामोंमें रहते हैं जो कुछ पढ़े लिखे नहीं हैं और जो करौलीके राज्यमें हैं वे सब ही अच्छे विद्वान हैं।

नल्लसिंह कृत विजयपाल रासेकी कविता इस ढङ्गकी है।

दोहा।

व्रज वंश विजपाल भय शील शुद्ध भ्रुव अंग।
राजा सब जीते समर विजयपाल सिर जंग ॥१॥

छप्पय।

बैठि पाट विजयपाल दाट गज्जन लगि दिल्लिय।
खुरासान असपहां रूम चञ्चल चढ़ि लिल्लिय ॥

ईरानी तूरान भंजि बलकी वपुभारी।
गज्झिदेश हवश न पेशलीनी हितकारी॥
फिरगांन मारि दह वट्ट किय तुरकानी कानी कियब।
झालरि मृदंग जंगी शवद यौं परिहरि अनुरत्न दियब॥२॥
१०८३ दश शत वर्ष तिरान मास फागुन गुरु ग्यारसि।
पाय सिद्ध बरदान तेग जहव कर धारसि॥
जीति सर्व तुरकान बलख खुरसान सुगजनिय।
रूम स्याम असपहां फ्रंगहबशान सुभ जनिय॥
ईराण तोरि तूराण असिखौ सिरबंग खंधार सब।
बलबण्ड पिण्ड हिन्दवान हद चढ़िव बीर विजयपाल तब॥३॥
काविल अरु खुरसान खौसि खग्गन बरु लिन्निय।
अंग वंग तोमर तिलंग कीरिद्धि विहिन्निय॥
खौसि कोट खंधार दाटिगढ़ गजनी मारिय।
रूम स्याम असपहां फ्रंग ह्वैरे उजारिय॥
लै मिले भेट अगणित नृपति पातसाह पावन लगे।
नृप विजयपाल महाराजजू जवै बीर रसमें पगे॥४॥
अति दुर्गम गिरि दुसह दुर्ग दिवद्रोह अरिन्दह।
कोट ओट बन विकट कोट भट भीर सुरिन्दह॥
धजा धर्म्म अनपाल खूब खाई छिति रच्चिय।
वापी वृन्द विनोद सीर सारस सर सच्चिय॥
नव नगर नगर नागर निधिप सिद्धि पण्ड पुरडण्डयम्।
रचि रुचिर उर्वि अमरावती विजयपाल ब्रज मण्डियम॥५॥
सजै शूर पखरैत लक्ख चालीस हयन्दह।
वर हजार बत्तीस नीलगिरिनिन्द गयन्दह॥
प्यादगान परमान लक्ख असीरज रक्खन।
लक्ख तीन भर पत्थ सुतर समवाय सुपक्खन॥
तहं तोप तीस हज्जार प्रति वज्रपात अरि खण्डनिय।
गजसहसवृन्द बत्तीस सुनि विजयपाल दल मण्डनिय॥६॥
चालीस लख हय सुभट फील बत्तीस सहस कह।
असी लक्ष पायक्क ऊंट लख तीन कटक चहं॥

इक लख रत्थ सुभट्ट लगे वाजी अमोल तहं।
तोपसु तीस हजार चलैं चहुं ओर घसं कहं॥
पुनि दस हजार नीसान वर बज धुकार धरनी हलैं।
लुप्पै सुभानु कवि नल्ल कहि विजयपाल जब चढ़ि चलैं ७॥
हुक्म होत चढ़ि चलैं तोप नीसान बान सज।
स्यदन पैदल तुरीहद्द चिक्कर तनद्द गज॥
पल्लय होत पिसान मंडमण्डल रज मण्डिय।
भजत सत्रु तजि अङ्क आस जीवनकी छण्डिय॥
दरसै न भानु कवि नल्ल कहि ररसरिता सुखि होत थल।
जद्दव नरेस विजपालको जब दिसानकूं बढ़त दल॥८॥

छन्द पद्धरी।

बैठतैं पाट विजय पाल वीर, अल्ली लखान जीत्यो गहीर।
इक कस्मीर इहवट्ट कीन, दो राखरिद्धि सब खोसि लीन॥९॥
साहिह्न दीन गजनी हंकारि, तत्तार खानको मान मारि।
खुरसान खग्गनि सत्नि जीति, राखी सुटेक जद्दव सुरीति॥१०॥
तेगन असोरि तूरान तोरि, ईराल पेस कस लीन मोरि।
बरकीनि मारि बल्लख उजारि, कन्धार कोट सब दियो पारि॥११॥
काविली किलङ्गी रोह जीति, राखिय नरेन्द्र हिन्दवान रीति।
बलकी भुखार सन जेर कीन, खुरसान खोसि हवसान लीन॥१२॥
आरबी रूम लटियाल कूटि, फिरगांन देस दुइ बार लूटि।
लोनीस पेस कस अवर देस, राखियो धर्म जद्दव नरेस॥१३॥
पांचाल देस बयराट मारि, अजमेर सोमकौ गर्व गारि।
मण्डोवर परिहार डण्डि, जोहूया पारस खग निखण्डि॥१४॥
तोवर अनङ्ग दिल्ली सुमांनि, थापियो थान सग पन्न जांनि।
ढुंढ़ाहर हय खुरनि गाहि, पज्जूनि करत नित सेव चाहि॥१५॥
मेवात सुरस्थल महि लीन, उतराध पन्थ सब जेर कोन।
इहिं तेज तपस विजयपाल राज, जाहरां तेग जादव समाज॥१६॥

दोहा।

करत राज विजयपाल नृप निष्कण्टक धर सब।
मुसलमान हिन्दून हंति निसिवासर पग सेत्र॥१७॥

चौपाई ।

सिद्ध राव जब दूत पठायव ।
धरि पत्री जादव ढिग आयव ॥
गज सिक्का अरु तौल चलायव ।
नांतर हम तुम जूझि मिलायव ॥१८॥
जब जादव नृप पत्री बञ्चिव ।
करि मन क्रोध भौंह चख खञ्चिव ॥
तब चतुरङ्गी सेना सज्जिय ।
सिंहनाद विजपाल सुगज्जिय ॥१९॥

दोहा ।

सजि चतुरङ्गी सेन वर यादव चढ्यो मरद्द ।
चाल कपर दल सज्जिकें राखन छत्री हद्द ॥२०॥

मौक्तिदाम ।

चल्यो चढ़ि यादव सेन सुसज्जि, मह्रा भर भादव ज्यौं घन गज्जि ।
अपुत्त सुपील किये अगवान, फिरैं जिमि पावस ज्यौं तडिदान ॥२१॥
तुरङ्ग सतेज उतङ्ग पयाल, मनौ सुरराज सुसाजि विमान ।
तुरी साव द्वादश सङ्ग जवान, दरक्कलि ये खुर लक्ष अमान ॥२२॥
कियैं दरकूच सुचल्लिय राज, वगत्तर पक्खर सेन समाज ।
धनीचित्र कोट वधाय वराह, रुको तब फौज हरोल अथाह ॥२३॥
भिदी तब डोठिसौं डोठि जवान, चलायव तेज तुरी बलवान ।
अन्यो अनि आयुध वाहत वीर, जनो जन युद्ध विरुद्ध गहीर ॥२४॥
त्रहैं कर सायक दायक छूठि, समै उरहीके निकारत पूठि ।
वहैं कर सेल सुखेल मरद्द, परैं दववार सुफूटि जरद्द ॥२५॥
वहैं शिर आय गुरज्ज विखून, फटैं वर टोप उतङ्ग वग चून ।
वहैं करवाल विशाल सुधार, गिरैं गण नाहज नेउ उतार ॥२६॥
वहैं जमडाढ़ सुपञ्जर पार, किधौं रङ्ग झांकियके खुलि द्वार ।
पहरे लुड्योड़ भयो युध मध्य, भजी तब रावल फौज प्रसिद्ध ॥२७॥
लई जय यादव जोर अमान, पत्नौ सुरकोश महारण थान ॥२८॥

दोहा ।

पञ्च सहस हय वर पगि ग्यारह सहस जवान ।
जय लीनी यादव मरद सिटी फौज खुंमान ॥२९॥

[पङ्गके युद्धका वर्णन]

दोहा।

उतै पङ्ग वजरङ्ग वर इत यादव अनभङ्ग।
दुहूं सूर दातार पन दुहूं विरङ्गे अङ्ग ॥१॥

छन्द (मोतीदाम)

जुरे जुध यादव पङ्ग मरट्ट, गही कर तेग चढ्यो रणरट्ट।
हकारि जुद्ध दुहूं दल सूर, मनौं गिरि सीस जल घरि पूर ॥२॥
हलौं हिल हांक वजी दल सद्धि, भई दिन जगत कूक प्रसिद्धि।
परस्पर तोप वहैं विकराल, गजैं सुर भुम्मि सरग्ग पताल ॥३॥
लगैं वर यन्त्रिय छत्तिय शुद्ध, गिरै भुवभार अपार विरुद्ध।
वहैं भुववांन ढप्यो असमान, खयङ्गर खेचर पावै न जान ॥४॥
वहैं कर सायक यायक जङ्ग, लखैं विष आशिय पासिय अङ्ग।
वहैं भिड पालक पाल लगन्त, उड़ैं शिर ढीव धरनि पतंग ॥५॥
वहैं कर संकुल सीस निसार, परैं विकराल लैंवार,सुमार।
वहन्त गुरज्जग हन्त मरट्ट, भये शिर चून विरून गरट्ट ॥६॥
मुदग्गर मार वहैं विकराल, लटक्कत भुम्मि फटन्त कपाल।
वहैं कर कत्तिय मत्तिय मार, गिरैं धर मध्य प्रसिद्धि जुझार ॥७॥
लगैं उर सांगिसु कंगल पार, लटक्कत सूर चटक्क कुठार।
लगैं किरवान सुकन्द कुतार, कटै वरह डुजनेनु उतार ॥८॥
लगैं खपुवा जमडाढ़ सुमार, किधौं खिरकी दिय छुट्टत द्वार।
वहैं कर खञ्जर पञ्जर भीर, मनौं मत वात करै मुड चीर ॥९॥
वहै कर रञ्जक गञ्जक हाल, निकस्सत वंविय फोरि सुव्याल।
कटक्क कुटन्त गिरन्त कपाल, खटक्कत खाग चलैं रत लाल ॥१०॥
गटक्कत गोठिय गिद्धनि गाल, घुटक्कत जुग्गीनि घुण्ड कपाल।
नदन्निमि नाचय तांवत नाच, चटक्कत चूरि कि रञ्जुत आंच ॥११॥

(१) यह रासा भी पृथ्वीराजके समान इतिहासके विरुद्ध बहुत पीछे अटकलसे बनाया हुआ जाना जाता है नल्लसिंहका भी विजयपालके समयमें होना सही नहीं है।

खुमानसिंह।

ये नल्ल वंशी सिरोहिया राव करौलीमें अच्छे कवि हो गये हैं

इनको महाराजा मदनपालने उमेदपुरा गांव और हाथी देकर करौलीके सब गांवोंमें चन्दा भी इनका पीढ़ी दर पीढ़ी चलू कर दिया था और भाट चारण वगैराको विदाका दानाध्यक्ष भी बना दिया था जिसमें १००) तक महाराजासे पूछे बिना विदा देनेका इनको अधिकार था इनकी यह कविता है ।

कवित्त ।

तिलक विजैको निरभैको नव तेज पुञ्ज,
जबर जिरहैको जोट जाहर अनीपको ।
छत्रिनको छत्र है नक्षत्र पतिजूको बंश,
जगत प्रशंस सुख सजन समीपको ॥
करण उदार देव तरु सो पुनीत सार,
उम्मर दराज बजि साहस प्रदीपको ।
चन्दन सो चन्द्र सोच हूंयां चारु चन्द्रिका सो,
दीप दीप छायो यश मदन महीपको ॥१॥
जलपति जौ जलेश दलपति महासेन,
बलपति बालि जैसे अहिपति शेष है ।
इलापति इन्द्र जैसे दिगपति दिग्गज हैं,
सिद्धपति शिव जैसे गणपति गणेश है ॥
सुकवि खुमान द्वन्द युद्धपति भीमसेन,
पैजपति अङ्गद उदार अवधेश है ॥
विज्ञानपति गौ ऋषि ज्यौंध्यान पति ध्रुव जैसे,
दानपति जहव महीप मदनेश है ॥२॥
कलप तरु कञ्जसे सवाल करणीके कोष,
प्रभुकौं प्रमाणिक प्रचण्ड बलवेशके ।
भञ्जन दरिद्र गढ़गञ्जन गनीरूनके,
मालिक मूलक जङ्ग जालिम हमेशके ॥
सुकवि खुमान मोद मनके उजीर वीर,
सजके समूह हैं रखैया वृज देशके ।
कृष्ण कुल मण्डन अमीन दल दण्डन ये,
हाती दे नहात हैं महीप मदनेशके ॥३॥

करण करी सो कछू नैनन निहारि नाँहि,
कानन सुनीकै बेलि कीरति कोवै गये ।
चौसुनाथ चौगुणी चलाय करी चारयों ओर,
अति अवदात नेक लोभ चित दै गये ॥
मदन महीप दीप दीने पाटि दौलत सू,
यशहिंदवानमैं वितान छिति छै गये ।
तेरी दान धाराकी पुनीत छत्र छाया जासूं,
सभी क्षिति मण्डलके छत्रपति है गये ॥४॥
करत सलाह दुरि दसपति दरीन बीच,
जो बनवास वास करो कन्त लङ्काको ।
जीवन बचैंगे तौपै सुरति रचैंगे यहां,
वहां उतपात होत यदुकुल हङ्काको ॥
सुकवि खुमानको लङ्कपति वन्नेरे छेरे,
हेरे ना मिलत शब्द सुनत निशङ्काको ।
सिंह निसियार सिंह गात न छिपात नाम,
सुनत महीप मदनेश बीर बङ्काको ॥५॥

जीवनसिंह ।

ये राव खुमानके बेटे करौलीमें हैं और अच्छी कविता करते हैं यह कवित्त इनका है ।

कवित्त ।

उद्दित उमङ्गी महाराज श्रीअमरपाल,
करण करौलीमें प्रकट दरसावें जू ।
हाथी देत हरषि हजारन कविन्द्रनकूं,
बाजनके बृन्दनकूं बांटत ही पावैजूं ॥
जीवन अनेकनकों वकसें इनाम भारी,
ग्रामनकी बकस विशेष चित लावैंजू ।
लावै नहीं बार आवै संपति कुबेरहूकी,
आवै जो सुमेर ताहि तुरत लुटावैजू ॥१॥

कृष्णाकरजी।

ये राव जीवनसिंहके बड़े बेटे हैं और अपनी कुल परम्पराके अनुसार कविता करते हैं जिसका नमूना नीचे देखिये।

कवित्त।

चितवनि चोरकी मरोरकी चपल चखु,
होत ध्वनि नीकी मुरलीकी मन्द घोरकी।
कृष्णाकर कुण्डल कलित कल कामन त्यौं,
आनन खिलित ओस पाखैं पुञ्ज भोरकी॥
अति सुकुमारी वृषभानुकी दुलारि सङ्ग,
लहत विहार ब्राजनीकै छांही ओरकी।
मैं तो देखि आई तोहि चलै तो दिखाय लाऊं
छवि अलबेला हेली युगलकिशोरकी॥१॥
लाल गुलालमें लाल करी,
मनि माल दै ताल वृथा तुम तोरी।
त्यौं कृष्णाकर कुंकुम जाल,
दिये भरि भाल औ बांह मरोरी॥
बादवकी नथको कबहू हम,
जानी जुवा कुल लाज है थोरी।
जोरी भलो सुखरोरी अहे हरि,
होरो करौ कि करौ तुम जोरी॥२॥
घुमडैं घन आय दसौं दिसतैं,
चपला चमकै चमके जिय रातमें।
त्यौं कृष्णाकर कूकत कोकिला,
पोपी पुकारैं पपीहरा पातमैं॥
मत्त मयूरनके सुनि बैन परै,
पल चैन नहीं निज गातमै।
बाढ़ै व्यथा विरहानलकी,
बिन पीव अली अब या बरसातमैं॥३॥

विश्रामसिंहजी।

यह राव जीवनसिंहके बिचले बेटे हैं इनमें विशेष बात यह है

कि भाषाके सिवाय संस्कृतकी भी कविता करते हैं और साहित्य शास्त्रमें काव्य प्रकाश तक पढ़े हैं इनकी भाषा और संस्कृत कविताका कुछ नमूना नीचे दिया जाता है।

कवित्त।

कटि जात पाप पुञ्ज कोटि कोटि जन्मनके,
कामादिक वैरिनकी वानि सो भगी रहै।
अष्ट सिद्धि नौहूंनिधि सेवकाई चाह्यो करैं,
लाखन मनोजनकी सुखमा पगी रहैं॥
विष्णु कवि पावै मन चीते काम मोक्ष सदा,
होत जगदीश मोद नाई उमगी रहैं।
त्यागि जग जाल सर्व धारि एकताई हिये,
कृष्ण पद पङ्कजमैं प्रीत जो लगी रहैं॥१॥
करुणा निधान नाम जाहर तिहारो जग,
यातैं करो मोपै अब करुणा अपारी है।
और तो न चाहत कछू ही भक्त वत्सलमैं,
विनती यै एक सुनौ जो मैं मन धारी है॥
विष्णु कवि कृष्ण कृष्ण दामोदर वासुदेव,
मो मुख विराजो नाम येही हितकारी है।
ये हो नन्द नन्दविभु कृष्ण चन्द्रनाथ यह,
अरजी हमारी आगै मरजी तुम्हारी है॥२॥

संस्कृते हरिगीत छन्दः।

गायन्तिये तव गुण गणानि हते प्रयान्ति नदुर्गतिं,
कवि विष्णु रिति कथयत्य हो सम्प्रान्य वन्ति परन्मतिं।
भव मोहतिमिरदिनेश जागतां नाथ भव भयकर विभो,
मद पङ्कज द्वयमत्र वन्दे हंस दान स्तुते प्रभो॥१॥

बिहारीदासजी।

साहित्य संसारके विचारनेवालोंमें कोई ऐसा न होगा कि जो कविवर बिहारीदास और इनकी रची हुई सतसईका नाम न जानता हो पर इन्होंने तो उसमें अपनी जाति पांति वंश और जन्म

भूमि आदिका कुछ पता नहीं दिया है दूसरे लोगोंकी दन्त कथा-ओंसे ऐसा सुना जाता है कि इन्होंने जैपुरके महाराजा जयसिंहके समयमें ७०० दोहोंकी सतसई बनाई थी और महाराजाने एक एक दोहेकी एक एक मोहर दक्षिणा दी थी कोई कहते हैं कि कुछ दिया ही नहीं था जिससे इन्होंने उनकी निन्दा भी की थी देनेके पक्ष-पाती तो बिहारीदासजीका कहा कुछ प्रमाण नहीं देते हैं और निन्दाके पक्षपाती कई दोहे उनके कहे हुये पढ़ते हैं जिनमेंसे एक यह है।

दोहा।

जलचरको बनकर कहें कहो कहांकी रीत।
जुगल खटाईके मिले क्यो न हो बिपरीत ॥१॥

जब उनसे पूछा जाता है कि इसका क्या प्रमाण है कि ये दोहें बिहारीदासके ही कहे हैं तो कहते हैं कि कविताका रंग ढंग मिलता हुआ है और इनका भी वैसा ही गूढ़ार्थ है जो सतसईके दूसरे दोहोंका है।

अब पढ़े लिखे सज्जनोंकी बातें लीजिये कोई तो बिहारीदा-सको रसिक-प्रियाके कर्त्ता केशवदासका बेटा बताते हैं और कोई कहते हैं नहीं वह केशव दूसरे थे ऐसे ही भूल बिहारीदासजीकी जातिमें भी पड़ी हुई है कोई कन्नोजिया कोई माथुर और कोई चौबे बताते हैं इसी तरहकी और भी बातें इतिहासके विरुद्ध लोगोंने बना रखी हैं इसका कारण यही है कि संस्कृत ग्रन्थक-र्त्ताओंके समान बिहारीदासजीने भी अपना कुछ पता नहीं दिया है ग्रन्थ बनानेके समयका यह दोहा भी किसी प्रतिमें तो हैं और किसीमें नहीं भी है।

दोहा॥

सम्बत ग्रह ससि जलधि छिति छठ तिथि बासर चन्द।
चैत्र मास पछ कृष्नमें पूरन आनन्द कन्द ॥७०८॥

बहुधा लोग इस दोहेको बिहारीदासका कहा हुआ नहीं मानते हैं और इसीसे यह भ्रम पड़ रहा है कि बिहारीदास किस राजा जयसिंहके समयमें थे। क्योंकि जयसिंह दो हुये हैं एक मिरजा

राजा जयसिंह और दूसरे सवाई जयसिंह।

लल्लूजी लाल कविने तो अपनी टीकामें बिहारीदासजीको सवाई जयसिंहजीके समयमें हो लिखा है परन्तु यह भी एक भूल है।

हमने ऐतिहासिक दृष्टिसे जो कुछ निर्णय किया है उसका सविस्तार वृत्तान्त तो बिहारीदासजीके एक स्वतन्त्र जीवन चरित्रमें लिखेंगे यहां इतना ही लिखना काफी समझते हैं कि बिहारीदासजी घरबारी अल्लके माथुर चौबे थे और वेही अपने कुलमें प्रसिद्ध हुए इसीसे उनके बाप दादाके नाम अप्रसिद्ध हैं। उनकी सन्तान अब बूंदीमें है वह भी बिहारीदासजीसे पहलेकी पीढ़ियां नहीं जानती। बिहारीदासजी मिरजा राजा जयसिंहके समयमें थे। सवाई जयसिंहके समयमें नहीं थे सतसई मिरजा राजाके ही समयमें बनी थी जिसका प्रमाण उसके इस दोहेमें है।

दोहा।

यों दल काढ़्या बलखतैं जयसिंह भुवाल।

उदिर अघासुरके पड़े ज्यों हरि गाय गुवाल ॥१॥

और यह ऐतिहासिक प्रमाण है क्योंकि बलखमें शाहजहां बादशाहकी फौजके साथ मिरजा राजा ही गये थे सवाई राजा नहीं गये थे और न कभी उनको अटकपार जानेका काम पड़ा था।

इसके सिवाय और कोई यथार्थ बात बिहारीदासजीको जीवनीकी नहीं जानी गयी है वे कब जन्मे थे, कहां विद्या पढ़ी किससे ऐसी अनोखी काव्यरचना सीखी, आमेरके सिवाय और कहां कहां गये किस किस राजासे क्या क्या पाया और अन्तमें कहां मरे ये सब घटनाएं ठीक ठीक जब उनके वंशजोंको ही नहीं मालूम हैं तो दूसरा कौन कह सकता है और जो कोई कहे भी तो कहां तक सही और सन्तोषदायक हो सकती हैं।

अब रही बिहारीजीकी कविता सो उनकी सतसईको सब ही जानते हैं उसके सिवाय और कोई कविता उनकी प्रसिद्ध नहीं है मानो उन्होंने उमर भरमें यही एक ग्रन्थ बनाया है और अपनी सारी काव्यशक्ति इसीमें खर्च कर दी है जिसकी प्रशंसामें किसी मर्मज्ञ कविने कहा है।

दोहा।

सतसईयाको दोहरो ज्यौं नावकको तीर।
दीखतमें छोटो लगे घाव करै गम्भीर ॥१॥

सतसई जैसी विचित्र पुस्तक है वैसीही उसमें यह विचित्रता भी है कि उसकी भिन्न भिन्न प्रतियोंका स्वरूप भी भिन्न ही है। दोहोंकी संख्या किसीमें ७०० से कुछ कम और किसीमें ८०० से भी अधिक है और फिर दोहोंका क्रम भी विलक्षण है "मेरी भवबाधा हरो" वाला दोहा यदि किसी प्रतिके आदिमें है तो किसीके मध्यमें भी है ऐसे ही और दोहे भी उलट फेरसे लिखे हैं इससे यही बात जानी जाती है कि विहारीदासजीके दोहोंका संग्रह उनके पीछे दूसरे लोगोंने भिन्न भिन्न क्रमसे किया है और जैसे पाये वैसेही आगे पीछे धर दिये हैं।

सतसईके सिवाय हमको यह एक कवित्त उनका बहुतसी ढूंढ़ ढांढ़ करने पर मिला है जो मिरजा राजाके दादा महाराजा मानसिंहकी प्रशंसामें है।

कवित्त।

महाराजा मानसिंह पूरब पठान मारे,
श्रोणितके सरिता अजों न समिटत है।
सुकवि विहारी अजों उठत कबंध कूद,
अजों लग रणतें रणोही ना मिटत है॥
अजोंलों पिसाचनकी चहेलनतें चोक चोक,
सची मघवाकी छतियांतें लपटत है।
अजों लग ओढे है कपाली आली आली खाले,
अजों लग काली मुख लालीना मिटत है ॥१॥

कुलपतिमिश्र।

कहते हैं कि यह कविवर चौबे परसरामके बेटे और सतसई कर्त्ता विहारीदासके भांजे थे और उन्हींके प्रसङ्गसे आमेरमें आ रहे थे पहले आगरेमें रहते थे इनके वंशके कई कवि जयपुर औ अलवरमें हैं।

कुलपतको मिरजा राजा (१) जयसिंहने कविवरकी पदवी और जागीर दी थी जो अबतक इनके घरानेमें चली आती है। इनके पड़पोते श्याम कवि जयपुरमें हैं उन्होंने एक बार पत्रमें ऐसा लिखा था कि कुलपतजीने मिरजा राजा आदि दो तीन राजाओंकी सेवा की थी और नवो रसोंके ३४ ग्रन्थ बनाये थे परन्तु मेरे देखनेमें दो ही ग्रन्थ आये हैं।

(१) संग्रामसार जिसमें महाभारतके द्रोण पर्वकी संक्षिप्त कथा है और जो मिरजा राजाके पुत्र राजा रामसिंहके समयमें बना है।

(२) रस रहस्य जो साहित्यकी विद्यामें है।

कुलपतमिश्रकी कविता इस प्रकारकी है।

संग्रामसारका मङ्गल-चरण।

छप्पय।

दुर्दन जय मदन विघ्नतावर बरडन खरडन,
सुरडा दरड भुरड प्रचरड दनुज हरि शिवकुल मरडन।
अरुन बरन भय भीत हरन सुमरन सुव जिज्जय,
भारत भाषा करन विविध वरं भारथ दिज्जय॥
उद्दाम रीति पद बरन गुन वन्द छन्द रचना सुघट,
है रम्भहु काज किज्जय कहू जुद्ध क्रुद्ध सेना सुभट॥१॥

रस रहस्यका मङ्गलाचरण और कलस।

सवैया।

रसिय कुञ्ज बने छवि पुञ्ज रहे अलि गुञ्जत यौं सुख लीजे,
नैन विशाल हिये बनमाल विलोकत रूप सुधारस पीजे।
जामिनि जामकी कौतुकतैं जुग जातन जानिये ज्यौं छिन छीजै,
आनन्द यो उमग्योई रहै पिये मोहनको मुख देखिवो कीजै॥१॥

दोहा।

बसत आगरै आगरै, गुन तपसील विलास।
विप्र मथुरिया मिश्र है, हरि चरननको दास॥

(१) मिरजा राजा जयसिंहने सम्बत् १६८४से सम्बत् १७२४ तक राज किया था (२) मिरजा राजा १ रामसिंह २ विशनसिंह ३ जो सम्बत् १७४६ में गद्दी पर बैठा था।

अभू मिश्र जिन वंशमें, परसराम जिम राम ।
तिनके सुत कुलपति (१) कियो, रस रहस्य सुख धाम ॥१४२॥
जिते साज हैं कविन्हके, सस्फुट कहे बखानि ॥
ते सब भाषामें कहे, रस रहस्यमें आनि ॥१४३॥
सम्वत सतराखै बरस बीते सत्ताईस ।
कातिक वदि एकादशी वार वरन बानीस ॥१४४॥

चतुर्भुज कवि ।

(२) ये कुलपति वंशी कवि जयपुरके पिछले महाराजा रामसिंह-जीके आश्रित थे इनका देहान्त सम्वत् १९४६में हुआ सन्तान न होनेसे इनके भाई रघुनाथके छोटे बेटे प्यारेलाल इनके गोद आये हैं ।

मैंने इनके वनाये दो ग्रन्थ सम्वत् १९५४ में कवि प्यासलालके पास देखे थे एकका नाम "ब्रज परिक्रमा सतसई" है और दूसरेका "वंश विनोद" जिसमें जयपुरकी वंशावली है ।

इनकी कविताका नमूना यह है ।

ब्रजपरिक्रमा सतसईसे ।

दोहा ।

कुलपति कुलपति मिश्रके, चरन कमल उर धार ।
रच्यो ग्रंथ निज बुद्धि बल, छन्दो बन्ध सम्भार ॥१॥

वंश विनोदसे कवि वंश ।

दोहा ।

कुलपति कविपतिके तनय, गोविन्द राय सुजान ।
तिनके सुत अति बुद्धि युत, सदा सुखहि मत मान ॥१॥

छप्पय ।

रामनाथ तिहिं पुत्र प्रगट भये द्वै मत सागर,
सिंभूरामजु एक द्वितिय हीरानंद नागर ।

(१) काशी-नागरी-प्रचारिणी सभाकी हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथोंकी अङ्गरेजी रिपोर्ट सन् १९०० ई०में कुलपतिमिश्रकी वंश परम्परा इस प्रकार लिखी है (१) अभयराम मिश्र (२) तारापति (३) मयालाल (४) हरिकृष्ण (५) परशुराम (६) कुलपति ।

(२) इनका राजत्वकाल सम्वत् १९३६ से १९८१ तक था ।

कानीराम तिहिं तनय विनययुत दीपचन्द कहु,
गणपति तिनको भयो द्वितिय गणपति समान चहुं।
अब सेढूराम तिनके तनय ता सुत हुव भुज चार धर,
लघु भ्रात नाम रघुनाथजू हरि चरननको दास वर ॥१॥

दोहा।

विजयसिंह रावल जहां, जयपुर गङ्गा पोर।
निकट रामजी दासके, काव चतुरनकी ठौर ॥
मेरी मत अनुसार यह, बरन्यो वस बिनोद।
कवि चतुरनसों बीनती, भूल्यो सोजो सोद ॥

सम्वत् १८३५।

दोहा।

पावत भूत अरु नेन शिव, नवनिध रदन गणेश।
फागण सुदिकी तीज है, वंस विनोद सुवेस ॥

रघुनाथ कवि।

चतुर्भुजजीके छोटे भाई थे इन्होंने कोई ग्रन्थ नहीं बनाया फुटकर कविता करते थे सम्वत् १८५० में इनका देहान्त हो गया इनके बेटे श्यामलाल हैं इन्हींके भाई प्यारेलाल चतुर्भुजजीके गोद गये हैं।

श्याम कवि।

इनका नाम श्यामलाल है माथुर ब्राह्मण कुलपतिजीके वंशमें हैं। मैंने बूंदीके कवि अमरकृष्णजीसे इनके पिता रघुनाथजी और ताऊ चतुर्भुजजीका पता पाकर इनको पत्र भेजा था जिसका यह उत्तर इन्होंने दोहोंमें दिया।

दोहा।

चतुर वेद माथुर प्रगट, गल्लजु मिश्र कुलीन।
परसराम सुत भयेहु कवि, कुलपति मिश्र प्रवीन ॥१॥
मिरजा जयसिंह (१) आदि अरु, सेवे भूपति तीन।
दुइ विंसत द्वादश अधिक, ग्रन्थ नवों रस कीन ॥२॥

---

(१) अर्थात् जयसिंह प्रथम।

कुलपति कविता रचि भये, जनम मरणसों हीन।
इहितें जनमऽरु मरणकी, बरस लिखत घन कीन ॥३॥
कवि पदवी कविवर लही, चलीजु अब लग आत।
अधिक न्यून कछु ना भये, रचे ग्रन्थ नृप गात ॥४॥
कहि कारण कवि वंशकी, वंश मालकी चाह।
आपहु अपनो भेद कुल, कहिये कर उतसाह ॥५॥
प्रश्न एक बाकी रहा, सो उत्तरके बाद।
जयपुरतें कवि स्याम भनि, सुनहु देविपरशाद ॥६॥
सुकवि चतुरभुज नायरघु, करत स्वर्गमें वास।
स्याम पियारेलाल हैं, बाल सुकविके दास ॥७॥

फिर मैं सम्वत् १९५४ के भादोंमें इनके मकान पर गया तो बड़ी प्रसन्नतासे मिले और साथ चलकर कवि राधा बल्लभजीसे भी मिलाया और कवि चतुर्भुजजीके बनाये हुये ग्रन्थ भी बताये और कुछ कविता अपनी भी लिखाई जो यहां लिखता हूं।

दोहा।

अति सुनीत कर राजत्वे, दिये प्रजा सुख हर्ष।
भवनेश्वरि विकटोरिया, चिरंजीवो बहु वर्ष ॥

सवैया।

अरजी कवि लोग करें गरजी, चित देकर सो सुन लीजियेजी।
पुन छन्द कवित्त कहा करके, कविताको सुधा रस पीजियेजी ॥
कवि स्याम विचार कहे इहिमें, सरदार सदा चित दीजियेजी।
यशके करता कवि हैं जगमें, तिनतें अभिमान न कीजियेजी ॥१॥

ब्रज कवि (चौबे ब्रजलालजी)

ये २५ वर्षकी उमरमें साहित्य शास्त्र पढ़कर अपनी जन्मभूमि (मथुरा) से महाराजा सवाई जयसिंहजीके कुंवर माधवसिंहजीके पास गये जो उस समय अपने मामा महाराणा जगतसिंहजीके दिये हुये गांव रामपुरे प्रखभानमें रहते थे और अपने बड़े भाई ईश्वरी-सिहजीसे जयपुर लेनेका उद्योग कर रहे थे। उन्होंने इनकी काव्य-कुशलतासे प्रसन्न होकर अपने पास रख लिया और जब

सम्वत् १८०१ में जैपुरका राज्य उनके हाथ आया तो इनको भी जीविका दे दी जो अबतक चल्लू है। इनके वंशमें राधावल्लभजी अच्छे कवि हैं मैं उनसे मिला हूं।

ये ये कवित्त कवि ब्रजलालजीके बनाये हुये राधावल्लभजीने दिये थे।

कवित्त।

बैठ्यो रामचन्द्रके तखत बरखत दान,
झर हरखत मघवाज्यौं सोभ सरजें।
माने जे न सासन ते देसतैं निकार यत,
आठौंहिं दिसाके अवनीस याते तरजें॥
कहे ब्रजलाल महाराज माधवेस तेरे,
महा मनसूवा सुनि सूबा सब लरजें।
बलख बुखारे हब सान हद्द पारें कहि,
आवत सकारें पातसाहनकी अरजें॥१॥
मान महीपालतें सुरत्तब मवायो देत,
सोधि देत साथ वडी चमू चतुरङ्गको।
हाथी घोरे अम्बर जवाहर असङ्क देत,
आयुध विजय भाखे पूरब प्रसङ्गको॥
कहे ब्रजलाल महाराज माधवेस जाके,
पूजेभुजदण्ड जसदेत उतमंगको।
बार२ बेगमें दिलीपति यूं बोल कहे,
लाज पातसाहीकी निसान पचरंगको॥२

वल्लभ कवि।

नाम राधावल्लभजी माथुरा ब्राह्मण कवि ब्रजलालजीकी पांचवी पीढ़ीमें हैं जैसे इनके मूल पुरुष ब्रजलालजी जयपुरके अगले महाराजा माधवसिंहजीके गुणोंका गान करते थे वैसेही येभी वर्तमान महाराजा माधवसिंहजीके गुण गाते हैं।

इनका नाम और पता संवत १८५३में मुझको बूंदीके कवि अमरकृष्णजीसे लगा था और उसी समय मैंने इनको पत्र लिखा था

उसके जवाबमें इन्होंने कृपा करके कुछ हाल अपने वंशका लिखा और ये २ कवित्त भेजे ।

कवित्त ।

देविप्रशाद अनन्द करो नित हो तुम तो गुनगाहक भारे ।
कायथके कुलमें प्रगटे तब क्यों न बढ़े महिमा कवि धारे ॥
वल्लभ देत असीस भली विधि राजत हो कविके रखवारे ।
देश विदेशनमें दिन ही दिन दौरत हैं जसके हलकारे ॥१॥
अम्बरमें जैसे चन्द है राजत जन्हु सुता जोई भूतल जानो ।
सैल भयो प्रभु शङ्करको अरु सैलसुता गलहार प्रमानो ॥
ज्हे गजराज लसे सुरराजके बाहन है विधिको सुख सानो ।
या कलिकाल करालहिमें यह देविप्रसादको कौतुक मानो ॥२॥

फिर मैं संवत १९५४ में जयपुर जाकर इनसे मिला तो इनको बहुत सज्जन सुशील और शान्तिस्वरूप पाया इन्होंने भी मेरा खूब सत्कार किया और अपनी पुस्तकमेंसे कई कवित्त लिखाये जिनमेंसे कुछ ये हैं ।

मन्द मन्द मारुत बहेंगे चहूं ओरनतें,
मोरनके सोरन अपार छबि छायेंगे ।
वरखा बिलोकि बीर बरसे बधूटी वृन्द,
बोलत पपीहा पीव पीव मन भायेंगे ॥
चारों ओर चपला चमंके चित चोरें लेत,
दादुर दरेरो देत आनंद बढ़ायेंगे ।
वल्लभ विचार हिये सुनरी सयानी सखी,
ऐसे समय नाथ परदेश तें न आयेंगे ॥

रसरासि कवि ।

इनका नाम रामनारायन था जयपुरके राजराजेन्द्र महाराजा श्रीसवाईप्रतापसिंहजीके दीवान सिङ्घी जीवराजके पास रहते थे । कविता बहुत अनोखी और चटकीली करते थे उन्हीं सिङ्घीजीके आश्रय देनेसे इन्होंने "कवित्तरत्नमालिका" नामएक उत्तम ग्रन्थ प्राचीन कवियोंकी रंगीली, रसीली और चुटीली कविता संग्रह करके र

है उसमें ८०१ कवित्त तो प्राचीन कवियोंके १६६ विषयके हैं और १०८ कवित्त इनके बनाये हुए भी प्रत्येक विषयके उनमें मिले हुए हैं जिनका कुछ परिचय इस कवित्तसे होता है।

कवित्त।

नौसे नौ कवित्त नवरतननकी माला तामें
नूतन बनाय रसराशि एक सौरु आठ।
एक अरु आठसौ कवित्त कविराजनके,
जिनकी विशुद्धबानी प्रेमको प्रवाह पाठ॥
एक कवि काहूंसो बन्यो न ऐसो ग्रन्थ अरु,
अबहू बने न क्योंहूं ऐसो अद्भुत ठाठ।
यहै उरधारी उरधारेंगे रसिक याको,
तोरवो विचारेंगे वे नीरस कुकवि काठ॥१॥

इतने विषयोंके इन प्राचीन कवित्तोंके संग्रह करनेमें निःसन्देह इनको बहुतही परिश्रम करना पड़ा होगा और फिर कवित्तोंके चुननेका काम भी बड़ी योग्यताका था सो भी इन्होंने अति सावधानीसे किया है।

यह रसमय ग्रन्थ अगहन बदी ९ संवत् १८२७को समाप्त हुआ है। बड़े खेदकी बात है कि यह अलौकिक ग्रन्थ अब तक नहीं छपा है और हस्तलिखित भी बहुत कम मिलता है। हमको बड़ी खोजनासे थोड़ेसे समयके लिये एक जगहसे देखनेके लिये मिला था उसमेंसे यथा अवकाश यह थोड़ीसी कविता इन काव्यकुशल कविजीकी छांट ली थी सो यहां लिखी जाती है।

कवित्त।

सुखदायक प्रान पियारे सुनो तुमतो रसराशि कहावत हो।
फिरी ऐसी कहो तुम भूले हमें इन बातन यों बहकावत हो॥
तुम्हरे चितकी गति जानि परी अति रीभ भरे दरसावत हो।
लखि रूप कनोड़े भये जिनको अनखों हे सुभाय रिझावत हो॥
लोने लोने लोल लोल ललचोहैं नैननसों,
चौंकि चौंकि कुञ्जनके द्वार द्वार त्यों निहारि।

गहरे उसास लेके भले जू भले जू कहि,
कान्ह तुम्हें टेरि टेरि हेरत ही एक नारि ॥
आज लौं न देखी ऐसी कौन है कहांकीहै जू,
हाथनं सवारी मनो मनमथ सचे ढारि।
नन्दके कुंअर रसरासि तुम्हें वाहीकीसों,
सांची कहो रावरी ये कबकी है लगवारि ॥२॥

जब तुम आय ललचाय हाहाखाय केऊ,
विनती सुनाय धस्यो पांयनसें भाल है।
मुरली बजाय कबहुक उठे गाय,
बिन मोलके कहाय गूंथि ल्याये फूलमाल है ॥
मेहूं रीझ छाय दयोमृदु मुसकाय तुम,
बलि बलि जाय रसरास राखी चाल है।
अब तुम दीठकों दुरावत कहा हो हाय,
रावरे तो ख्याल यामे औरनको काल है ॥३॥

केलि कलाकी झलानिकों झेली,
रचि रसरासि रचो सुख थाती।
अंगन अंग समोय रही कछु,
सोइ रही रस आलवसाती ॥
ऐसे में आय गयो है अचानक,
कंज पराग भस्यो उतपाती।
प्रीतमके हिय लागी तऊ उहिं,
सीरे समीर जराई ले छाती ॥४॥

कटि कसि कढ़े हैं रसातलके राहगीर,
लोभके लुभाये जो बकत आकबाक हैं ॥
काहूको सुरेश कहैं काहूको महेश कहैं,
देवनके दोखी बड़े जीभके चलाक हैं ॥
कवि रसरासि जिन्हैं लोक परलोककौ,
सकोच है न सोच महा कपटी कजाक हैं।
कायर हैं क्रोधी हैं कुबधी हैं कुसंगी कामी,
कुछित कुचील वे कुकवि करि काक हैं ॥५॥

रस रासिकत कुछ गानेकी चीजें जो इसी ग्रन्थके पीछे लिखी थीं।

राग सारङ्ग।

हम सङ्गी गिरधरलालके।
दधि माखनके लूटनवारे, ऐंडी बैंडी चालके।
जानत घात जगात दानकी, निपट परखया मालके॥
नोक मजाखनके अति गाढे, बांके जवाब सवालके।
रस गोरसके राते माते, समुझैया सुर तालके॥
मना, मनसुखा, सुवल सुदामा, सब हौं सखा गुपालके।
बहु सङ्गी वृन्दावन बासो, कान मरोरत कालके॥
सांचे सूरे सुघढ सनेही, टूटे एक ही डालके।
तुमरे सास मथुनिया दधिकी, चमकत बेंदा भालके॥
दान दिये बिन कित जैहो, बस परि गई लौंढे ग्वालके।
लिये लकुटिया मोहन ठाढ़े, स्वादी नयो रसालके॥
तनक तनक दधि देन लालको, आओ और तमालके।
क्यों सब ही तुम सटपटात हो, देहु लेहु सुख नेह जालके
मिलि चलियो रसरास कुंवरसों, खुले मनोरथ ख्यालके॥१॥

राग लूहर।

कानाजी म्हाने कुञ्जामें ले चालो।
म्है तो राज रे कांधे चढ़ चालस्या पगमें छे छालो,
रिम झिम रिम झिम मेहा बरसे मारग छे आलो।
भीजेली म्हारी सुरङ्ग चूनदड़ी दीजे राजदुसालो,
राखांला म्हे थां पर छाया रीझां छां देख दुमालो॥
हरया कदम रीझाला मांही लाल हिंडोलो घालो,
वाहां जोडी हींड मचास्यां पीस्यां रंगरो प्यालो।
सरस सुहावणा सावणमें म्हारो मनड़ो हुवा छे मतवालो,
गाये लो रसरास सखोने ये तो लटक मटकता हालो॥१॥

काफी।

गुजरिया लाग भरी यह मोहनकी लगवारि।
अरबीलीं गरबीली अंखियन आई अंजन सारि,
फागुन मास लग्यो ताही दिन रही रङ्गाय धमारि।

गावत लजीली अति उरझीली गांव गसीली गारि,
बारही बार पौर जसुदाकी रहत निहार निहारि ।
अपनो बोल सुनाय बुलावत ऐसी चतुर खिलारि,
तनक झनक सुन श्याम सुन्दर वर घेरलई ललकारि ॥
तबकी कहि न परत छवि मौपै रची रसीली रारे,
लाल गुलाल उड़ाय चहूं दिस दीन्हे परदा डार ।
लपट गई रसराश कुंवरसूं गौंकी समुझन हार ॥१॥

कालङ्गड़ा ।

म्हारे लारे लाग्या लाग्या लाग्या कांई आओ छो ।
आओ छो आओ छो नेण घुलावो छो,
देखेली म्हांरी सासू नणदल घरमें राड मचावो छो ।
व्योत पड्यो तो हाजर हो स्यां नाहक हाहा खाओ छो,
मन मोहो न रसरासि कुंवर ये कुब्जामें क्यों न जाओ छो ॥२॥

ब्रजनाथ और बिजेनाथ ।

ये किशनावत बारहट थे इनके मूल पुरुष मारवाड़से ढूंढाड़ चले गये थे और वहां गांवमें डकया पाया था विजेनाथ जयपुरमें महाराजा रामसिंहजीके पास रहते थे और पढ़े बहुत थे जिससे पण्डित कहलाते थे इनको भी महाराजाने एक गांव दिया था जिसका नामसाखलाका बास है इनका देहान्त सम्बत् १८३४ में हो गया ।

ये डिङ्गल और पिङ्गल दोनों प्रकारकी कविता उत्तम रीतिसे करते थे इनके २ कवित्त मिले सो नीचे लिखे हैं

कवित्त

अन्योक्तिका ।

स्वादको न देश त्यों सुगन्धको न लेश कहूं,
पेसलैं न रेश त्यों माग छव पाइना ।
भूखन न सिंह नामलन्द मकरन्द लेत,
उतरे न रङ्ग ऐसी अङ्ग अरु नाई ना ॥
अन्तर मुतालबकी (१) कोई उमदाई है न,

१ मतलब ।

गालब दवाई बैद्य ग्रंथनमें गाई ना।
कहैं ब्रजनाथ सठ रोहराके फूल तेरो,
कोरो सुन्दराईको हमारे हाथ आई ना ॥१॥

जोधपुरके महाराजा भीतखतसिंहजीका मरसिया।

कवित्त।

आज छत छत्रिनको भानसो अस्त भयो,
आज पात(१) पंछिनको पारिजात परिगो।
आज मान सिन्धु फूटो मञ्जन मरालनको,
आज गुन गाहकी गिरीसगञ्ज गिरिगो॥
आज पन्यपनको पताका टूटो बिजेनाथ,
आज हौंस हरख हजारनको हरिगो।
हाय हाय जगके अभाग तखतेस राज॥
आज कलिकालको कन्हैया कूच करिगो ॥१॥

अजीतसिंहजी।

(२) खेतड़ीके राजा अजीतसिंहजी बड़े विद्वान और चतुर सुजान थे सम्वत् १९०८के आसोज सुदी १२ को गांव अलसीसरमें जन्मे और सम्वत् १९२७में अगले राजा फतहसिंहजीको(३) गोद आये इनको देशदेशान्तरोंमें घूमने राजा लोगों और अङ्गरेजी हाकिमोंसे मेल मिलाप करनेका बड़ा चाव था लन्दन भी हो आये थे। जोधपुर दरबारमें भी मेल जोल बढ़ाकर अपने बाप दादोंसे बढ़कर दरजा पा लिया था मैं भी एक बार मिला था बातचीत करनेमें भी अच्छे थे, अङ्गरेजी भी पढ़े थे, शास्त्री भी अच्छी जानते थे और कविता भी

(१) कवि।

(२) खेतड़ी जयपुरके राज्यमें एक बड़ा ठिकाना शेखावत कछवाहोंका है वहांके सरदारोंकी राजा पदवी है और अङ्गरेजी सरकारसे भी कोट पूतलीका परगना उनको अलग मिला हुआ है।

(३) राजा फतहसिंहजीका देहान्त मगसर सुदी १२ सम्वत् १९२७ को हुआ था।

करते थे खेदका विषय है कि सम्वत् १८२७ में अकस्मात अकबर बाद-
शाहके हौजे परसे गिरकर परलोकगामी हो गये उनके इकलौते कुंवर
राजा जयसिंह भी बहुत होनहार विद्यार्थी मेव कालेजके थे, चैत
बदी ६ सम्वत् १८६६ को १६ वर्षकी अवस्थामें काल ज्वरसे सत्वर
स्वर्गमें जा बसे अभी उनका विवाह भी नहीं हुआ था।

यह कवित्त राजा अजीतसिंहजीका बनाया हुआ है।

कवित्त

कहत नबीत आन राजोंको अजीत एक,
सुकृत करोगे जब लोगे सोही ताको है।
कौनके हैं पुत्र त्रिया बन्धुधन कौनको है,
कोन केहैं साज राज कौनको इलाको है॥
कौन केहैं सुभट गजराज हय कौनके हैं,
दिष्ट देर देखो जब बीजको झपाको है।
एक दिन फ़ाको दिन एक है नफ़ाको दिन,
एक है वफ़ाको एक सफ़स सफ़ाको है॥१॥

भैरूं कवि।

ये सीकरके लुहार थे और कविता भी करते थे इन्होंने खेत
ड़ीके राजा बाघसिंहजीको * बीरताके वर्णनमें वीररससे परिपू
बहुतसे कवित्त बनाये हैं उनमेंसे एक यह है।

कवित्त।

चूनीसे चरन चारु चांदनीपै धरती न,
चूकी फिरैं चहूं ओर कोर बुगलनकी
इन्दुसे बदन अरि बिन्दु द्युति मन्द होत,
दीनबेन कहैं वे असीरसे गलनकी।

* खेतड़ी एक प्रसिद्ध ठिकाना जयपुरके राज्यमें है र
बाघसिंहजीके पीछे अभैसिंहजी, उनके पीछे बखतावरसिंहजी, उन
पीछे शिवनाथसिंहजी, उनके पीछे फतहसिंहजी, उनके पीछे अज
सिंहजी, उनके पीछे जय सिंहजी हुए जो अभी सम्वत् १८६७में
ही मरे हैं।

पिया नेह छूटी लर टूटी कवि भैरौं कहैं,
लग गई हजार भार पींडीं जुगलनकी।
बाघ तेरी धाक सुन बन बन बिहाल फिरें,
डाल लाल गुलनशी बीबी मुगलनकी ॥१॥

कवीन्द्र कवि।

ये सीकरके राव राजा देवीसिंहजीके * आश्रित थे इन्होंने राव राजाजीकी वीरताके विषयमें वीररससे भरेहुवे खूब खूब कवित्त कहे हैं उनमेंसे १ यहहै।

कवित्त।

कूरम नरिन्ददेव कोप करि वैरिनतैं,
महवतकी सेना समसेरनतै भानी है।
भनत कविन्द भांत भांत दे असीसनको,
ईसनके सीसपे जमात दरसानी है॥
तहां एक जोगनी सुभट खोपरीको लिये,
श्रोणित पियत ताकी उपमा बतानी है।
प्यालो ले चीनीको छकी जोवन तरङ्ग मानो,
रङ्गहेत पीवत मजीठ मुगलानी है॥१॥

सिरोमणि कवि।

ये कन्नौजिया ब्राह्मण शाहजहां बादशाहके समयमें थे। इन्होंने कई ग्रन्थ बनाये हैं ऐसा सुना है, परन्तु हमारे देखनेमें नहीं आये केवल एक कवित्त मिला जो यहां लिखा जाता है।

कवित्त।

सागरके पार जुद्ध माच्यो राम रावनहिं,
सिरोमन भारी घमसान इकबार भो।

(१) * राज जयपुरमें सीकर १ बड़ा ठिकाना शेखावत सरदारोंका है देवीसिंहजीके पीछे लछमन सिंहजी, उनके पीछे प्रताप सिंहजी राव राजा हुए, प्रतापसिंह जीके संतान न रहनेसे उनके भाई भैरोंसिंहजी गद्दीपर बैठे वर्त्तमान राव राजा माधोसिंहजी जो एक गुणग्राही भूप हैं भैरोंसिंहजीके सपूत पुत्र हैं।

घुरत घायल जहां अलल अलल बोलैं,
बलल बलल बहे लोहू इकसार भो ॥
छिन छिन छूटत पनारे रतनारे भारे,
नारे खोरे मिलके समुद्र इकसार भो ।
बूड़ गयो बेल व्याल नायक निकर गयो,
गिर गई गिरजा गरीश पौर पार भो ॥१॥

दुलीचन्दजी ।

ये जैपुरके राजकवि थे इनको कवीन्दुकी पदवी मिली थी इन्होंने महाराजा रामसिंहजीके हुक्मसे महाभारतका भाषा कवितामें उलथा किया था इनकी कविताके बखान बहुत कुछ सुने गये थे परन्तु मंगानेपर भी इनके पुत्र रामप्रतापजीने किसी कारण विशेषसे नहीं भेजी । कहते हैं कि ये शिरोमणि कविके वंशमें थे ।

रामप्रतापजी ।

यह जयपुर राज्यके राज कवियोंमेंसे कवेन्दु दुलीचन्दजीके बेटे हैं । मैंने इनकी और इनके पिताकी कविता मांगनेके वास्ते दो बार पत्र भेजा तो इन्होंने यह उत्तर दिया ;

विधियुक्त अपर्चित विषय मांहि,
कबहूं न वाक्य निज व्यय कराहिं ॥१॥
एतत अनिंद्य गुण लखत जिन्हें,
पण्डित निहारि तिहिं प्रथम चिन्हें ॥२॥
कुलशीलन कोविद जानिये जाको ।
कह क्यों करि आवत अर्चन ताको ॥३॥

और नीचे अपनी फारसी मोहर लगाई जिसमें यह खुदा ज्ञानकुञ्ज कवकुलकुज रामप्रताप । इसके लिखनेका चाहे कुछ अभिप्राय हो हमको तो इनके गुणसे प्रयोजन था सो उसका नमूना मिल गया ।

कवि कृष्णराम ।

राजधानी जयपुरके पण्डितोंमेंसे ये गौतमगोत्री ब्राह्मण अ

पण्डित हैं इनके पिताका कुन्दनराम और दादाका लल्लूराम नाम था जो वैद्य भी थे।

कृष्णरामजीने जयपुर विलास नाम एक संस्कृत ग्रन्थ संवत् १९४४ में बनाया है जिसमें जयपुर नगरका सविस्तर वृत्तान्त है। इनके रचित मुक्तक मुक्तावली और सारशतक ये दो ग्रन्थ और भी हैं।

सार शतकमें कुछ भाषा कविता भी इन कविजीकी है उसमेंसे यह कवित्त यहां लिखा जाता है।

कवित्त।

माधव धराधवके प्रबल प्रयान होत,
तुरग तयार होत पौन पद पातमें।
कुञ्जर चलान होत नाद होत वीरनको,
रजको वितान होत जैसे तम रातमें॥
कहे कविराम और कालीके सुकाल होत,
मुंडनको माल होत हरजूके हातमें।
रिपुकुल हारे जात जिनघर जारे जात,
पकरि निकारे जात और ही विलातमें॥१॥

चौबे लोकनाथजी।

ये बूंदी नरेश बुधसिंहजीके राजमें थे इनके पूर्वजराव सुरजनजीके समयसे इस राज्यके आश्रित थे इन्होंने रावराजा बुधसिंहजीके नामसे रसतरंग नाम १ ग्रंथ साहित्यका बनाया था जिसकी रीझमें रावराजाजीने इनको ताजीम, सोना, हाथी कविराजाकी पदवीऔर २ गांवभी दिये थे जैसा कि इस कवित्तमें उन्हीं कविजीने कहा है।

कवित्त।

भूषण निवाज्यो जैसे सिवा महाराजजूने।
वारनदै बावन धरापै जस छाव है॥
दिल्ली साह दिलिप भये हैं खान खाना जिन।
गङ्गसे गुनीको लाखैं मौजैं मन भाव है॥
अब कविराजनमें सकल समस्या हेत,

हाथी घोरा तोरातैं बढ़ायो बहु गांव है।
बुद्धयी दिवान लोकनाथ कविराजा कहै,
दियो इक तोरा पुनि धोलपुर गांव है॥१॥

कविरानी लोकनाथार्धांगिनी जी।

लोकनाथजीकी पत्नी भी कवितामें निपुण थीं। एक समय लोकनाथजी राव राजा बुधसिंहजीके साथ दिल्लीको गये थे पीछेसे कविरानीजीने सुना कि राव राजाजीको अटक पार जानेका हु ... हुआ है और कवि राजाजी भी साथ जावेंगे तो यह सोचकर ... वहां जानेसे धर्म भ्रष्ट हो जायगा १ कवित्त कविराजाजीक... लिख भेजा जिसको राव राजाजीने भी बहुत पसन्द किया व ... चोजमय कवित्त यह है।

कवित्त।

मैं तो यह जानी ही कि लोकनाथ पाय पति
सङ्ग ही रहोंगी अरधङ्ग जैसे गिरिजा।
एते पै बिलक्षण व्है उत्तर गमन कीनो,
कैसेकै मिटत ये वियोग विधि सिरिजा॥
अब तो जरूर तुमे अरज करे ही बनै,
वे हू द्विज जानि फरमाय हैं कि फिरिजा।
जो पै तुम स्वामी आज अटक उलंघि जैहो,
पाती मांहि कैसे लिखूं मिश्र मीर मिरिजा॥१॥

लोकनाथजीका देहान्त राव राजा बुधसिंहजीसे पहले ह... था फिर जब बुधसिंहजीसे बूंदी छूटी तो लोकनाथजीके घ... घर बार लुट जानेसे उनियारेमें जा रहे जो एक बड़ा ... नरूका जातिके कछवाहोंका जयपुरके राज्यमें है।

चौबे फतहरामजी मिश्र।

ये लोकनाथजीकी सन्तानमें स्वरूपचन्दजीके बेटे थे ज... फिर बुधसिंहजीके बेटे उमेदसिंहजीका राज हुआ तो उ... राव राजा विष्णुसिंहजीके राजमें फतहरामजीने बूंदी ... फिर अपनी जमीन और जायदाद पायी। इन्होंने

कोई बनाया नहीं फुटकर कवित्त बनाया करते थे जिनमेंसे एक यह है।

कवित्त।

तेज निधरत निकला निधि कलान जान,
कोबिद विविध पंडु भीमबल ओजसो।
भारत विषम बेर पारथ प्रसिद्ध पवि,
कामनाको कल्पतरु चितधरि चोजसो॥
फतेराम नृप बिरनेस अजमाल सुत,
लहर ललित अति हुव हुन भोजसो।
मेरु मर्य्यादको महेश सोमहर बान,
मौजको महोदधि मनोहर मनोजसो॥१॥

चौबे सालगरामजी मिश्र।

ये फतहरामजीके (१) भाई मदनगुपालजीके बेटे थे। इनको राव राजा रामसिंहजीने करोलीमें महाराजा मदनपालजीके पास राजकाजके लिये भेजा था जिन्होंने संवत् १८१४ के गदरमें सेना भेजकर कोटेके महाराव रामसिंहजीको बड़ीसहायता दी थी जब कि उनकी फौज बदल गयी थी और लाला जयदयालने अगवानी होकर कोटेके किलेको घेर लिया था। इन्होंने उसी आशयको लेकर यह कवित्त करोली महाराजकी तारीफमें बनाया।

कवित्त।

वीर रणधीर मजबूत मन वारे ज्वान,
हेरिकै पठाये कमलास कर कीनो है॥
जाय करि त्वरित निकारिकै हटाय दियौ,
मारिकै भगाये वेष बदलि सुलीनो है॥
मदनगुपाल महराजको सुयश छायो,
गायो गुनवान त्योंही वीर रंग भीनो है।

(१) फतहरामजीके सन्तति कुछ न हुई। इनके छोटे भाई मदनगोपालके तीन बेटे वालमुकुन्द, सालगराम और हीरालाल हुए।

निसकहराम ऊदयामको जुलम मेटि,
जाहिर जहान बीच कोटा राखि दीनो है ॥१॥

ये कनोलीसे लौटते हुए रास्तेमें घोड़ेके गिर पड़नेसे जखमी होकर अपुत्र मर गये। इनकी कविता विशेष करके ईश्वरकी स्तुतिके विषयमें है।

सवैया।

विद्या बल नाहिन मेरे कछू न कुटुम्बको कीजिये चिन्ता विचारो।
देहमैं जोर न जाय सकों कहुं आन बनो सबही विधि भारी॥
भूप तो रीझत है गुनवानपै मैं गुनहीन सुनो गिरिधारी।
मेरी तो लाज सबै विधि आपको मैं ब्रज छैल तिहारो भिखारी ॥१॥

कवि मिश्र हीरालालजी।

ये मदनगोपालजीके छोटे बेटे थे छोटी ही अवस्थामें गुजर गये थे तो भी कविता अच्छी करते थे यह एक कवित्त उनका महाराव राजा रामसिंहजीकी प्रशंसामें है।

कवित्त।

बुद्धिमें गनेस रिद्धि सिद्धिमें कुबेर तुल्य,
दानमें करन सुवरन मेह बरसै।
देवनमें इन्द्र ऐसे राजनमें राजत हैं,
पण्डित प्रसन्न करि नित्य वित बरसै॥
कविनको राखै मान यथा योग्य जैसो जान,
रावरी बड़ाई करिबेमें मन हरसै।
पाट बिसनेसके प्रतापी चहुवान भानु,
सांचो दिन दूलह दिवान राम दरसै ॥१॥

कवि चौबे ब्नारसीरामजी।

यह मिश्र हीरालालजीके बेटे हैं इनका जन्म आसोज सुदी सम्वत् १८९०को हुआ था इन पर बूंदी दरबार महाराव राजा श्रीर बरसिंहजीकी बड़ी मेहरबानी है हरदम पास रखते हैं और पु ग्रन्थ कविताके सुनते हैं।

ये मिश्रजी शीघ्र कवि हैं इनको कविता बनाते कुछ देर नहीं लगती ५ मिनटमें कवित्त बना लेते हैं कई बार दरबार बूंदीने परीक्षाके लिये नीबू आकाशमें फिकवाया है वह अभी जमीन पर गिरने भी नहीं पाया था कि इन्होंने कवित्त बना दिया। बड़े सज्जन हैं हमको इनके वंशकी कविता इन्हींसे मिली है ये राजाकी चित्रशालाके अध्यक्ष भी हैं।

अबतक इन्होंने ४ ग्रन्थ बनाये हैं।

(१) वंशप्रदीप जिसमें दरबार बूंदीके वंशकी उत्पत्ति और उसका वर्णन है।

(२) सर्वसमुच्चय जिसमें महाराव राजा रामसिंहजीका यश है।

(३) ललित लहरी इसमें शृङ्गारका वर्णन है।

(४) रघुवीर सुयश प्रकाश वर्त्तमान महाराव राजा साहिबकी आज्ञासे बना है।

अब इनकी कविता लिखी जाती है।

वंशप्रदीपसे षटपदीः।

कलि हाय न इक सहस जात मत बौद्ध वढिग अति।
तिन दिन बलि सुतबाण तनय यह वढिय घोर मति॥
वेद रीति नहि चलत होत सब देव प्रकंपित।
कियहु विचार वसिष्ट करत यह निशिचर अनुचित॥
इमि जानि आय अर्बुद अचल ऋषिजन अमर नगन सहित।
मख कियहु आय यह वेद विधि निगम धर्म गो विप्र हित ॥१॥
अनल कुण्डतें कढ्यहु वीर चव अंश क्षत्रियन।
प्रथम कढ्यहु प्रति हार प्रबल कौणप कुल खण्डन॥
पुनि द्वितीय चालुक्य प्रबल प्रामार कृती यह।
अरु चतुर्थ चौहान प्रलंबित बाहु चारि यह॥
जिनकोहि नाम चण्डाग्निहुव चाहुवान चौहान भौ।
चहुवान चतुर्भुज आदि धरि जग विख्यात महान भौ ॥२॥

वेताल छन्द।

हुव वत्स गोत्र चौहानको अरु कौथमी शाखाह,
पुनि वेद सामरु सूत्र गोभिल प्रवर पञ्चक आह।

जमदग्नि आपन्वान भार्गव चिमन और्व पञ्च,
आषादि पूरा भक्ति बस सब हनिय दैत्य सपञ्च ॥१॥

सर्व्व समुच्चयसे कवित्त।

केते राज करत गुमावे दिन ख्यालनसें,
केते अबे सुभट समाजनके त्यागी हैं।
केते बड़ बड़ अभीमान उर धारि धारि,
मार बस अपर तियाके अनुरागी हैं॥
केते गये डूबि अजों डूबत सुरामें केते,
हानि लाभ सूझन अँधेरी दृग छागी है।
बहुत भुवालनकी यह गति देखिराम,
अति भयभागी नीति तुव सङ्ग लागी है ॥१॥
राजत गम्भीर मर्यादमें कुशल धीर,
करत प्रताप पुञ्ज प्रगटित आठों जाम।
चाहुवान मुकट प्रकाशित प्रबल आज,
तेरे त्रास चकित नसाये शत्रु धाम धाम॥
नीति निपुनाई धारि पालत प्रजाकों रोज,
साहिबीमें सुन्दर अमन्द ह्वै बढ़ायो नाम।
पारावार सदृस प्रियव्रत प्रभाकरसे,
पारथसे प्रथुसे पुरन्दरसे राजा राम ॥२॥
जादिन दिवान करै पूजन बरसहूको,
फैले तब अंशुक सुवासनके अंशमें।
जगर मगर दुति धारैं अंग अंगनसे,
प्रचुर बढ़ावैं शोभ सीस अवतंसमैं॥
वंशके प्रशंस कब बखानैं इमि समुहतैं,
हंस ज्यौं भुवाल तेरी कीरति प्रशंसमें।
प्रजा प्रतिपालन महीपनमैं राजा राम,
प्रगट्यो धनञ्जय धनञ्जयके वंशमै ॥३॥

ललित लहरीसे सवैया।

कम्पित गात कहा उतपात, न जानि व जात रहीं सचुपा
रोम उठै जल अङ्ग छुटै, न घटै चखकी छिन चञ्चलताई

हौं अब है दिनतैं दिकरी, लखिरी लखिरी उरमाहि उचाई,
दीजिये धूली मगाय दयाकरि, हौं तो गई सुनिये न जराई ॥१॥

रघुवीर सुयश प्रकाशसे

कवित्त।

डारि कृपा बारि प्रजा पोषनकों पोखो सदा,
सोखो सत्रु प्रानकों दण्ड भुज जोरलों।
तोखो बुध वृन्दनकों चोखो गुन धारि धारि,
रोखो चोर जारपै नीति रीति तोरलों॥
दोखिनको दोखो अनदोखिन अदोखो बढ़ो,
सुजस अनोखो अवनीके ओर छोर लों।
महाराव राजा रघुबीर इहिभांति आप,
सुतयुत राज करो बरस करोर लों ॥१॥
परम प्रताप बढ़ो सर्व महि मंडलमें,
चंड भुजदंडनपै बाढ़ो बल भीम ज्यों।
एकादशि रास बासदेव सम भक्ति बढ़ो,
राज बढ़ो विक्रम ज्यों साहस सलीम ज्यों॥
विभव विशाल बढ़ो इन्द्र ज्यों नरेन्द्र तेरो,
सील बढ़ो चन्द्रकला कलित असीम ज्यों॥
आसिष हमारी रघुबीर छत्रधारी सुनो,
फूलो फलो फैलो सुतयुक्त बड़े नीम ज्यों ॥२॥
नीति निपुनाई छाई सकल महीके बीच,
मलका सराहो अति लंधन नजीरकी।
लाट कलकत्ताको सराहै सूर सत्ता देखि,
तरुण वितत्ता अवै वीरता सरीरकी॥
एकादसि रास सर्वदान प्रणवान पूर,
परम प्रशंसनीय सुगति गंभीरकी।
और मैं कहांलों कहों पत्रमें लिखीन जात,
छत्रपति चाहत हैं छाया रघुबीरकी ॥३॥

फुटकर कबित्त जो लाला जवाहरलालजीने भेजे थे।

महाराव राजा रामसिंहजीकी प्रशंसामें।

पारद ज्यों है हरत असाध्य रोग लोगनको,

नारद व्है ज्ञान गूढ़ करत घनेरो है ।
शारद व्है सुबरन देत कवि वृन्दनकों,
बारिद व्है जगत लगावत उबेरो है ॥
सेस बनि सूचना करत निज धर्म्महूकी,
थिर चिरजीवनको करत बसेरो है ।
मौलि मुकटामणि महीपनके रामभूप,
खण्ड खण्ड मण्डित अखण्ड जस तेरो है ॥९॥

महारानी विक्टोरियाका यश ।

पूरब पछांह अरु उत्तर दक्षिणलों,
ठाम ठाम सुपथ चलाये नर कोरिया ।
पुनि अभिराम पञ्चतत्वनतैं लीन्हो काम,
सद्रुत विमान रेल कीन्ही सब ठौरियां ॥
केही गुन प्रचुर बढ़ाये पाठशाला रोपि,
दीननको कसन उढ़ाये शुभ्र डोरिया ।
सकल जहानको दियो यों सुख नाना भांति,
बुद्धिमान भूपर भई है विकटोरिया ॥

चौबे जगन्नाथजी ।

यह होनहार कवि कुमार मिश्र ज्ञारसीरामजीके इनका जन्म भादों सुदी ५ संवत १८२९का है ये भी अबतक छोटे ६ ग्रन्थ बना चुके हैं ।

१ अलङ्कारमाला जिसमेंका यह कवित्त है ।

भूमि कह्यो अम्बर दिगम्बर तिलक भाल,
विप्र उपबीत कह्यो यज्ञके हवनसैं ।
आतुर कहत सुरनाथ सुर भोग कह्यो,
वाहन बनायो विधि आपने गवनसैं ॥
विश्वको सिंगार भयो सुखमा अपार धारि,
चौरु निधि बाढ़ै तऊ कविकी लवनसैं ।
बुन्दीनाथ प्रबल प्रतापी रघुवीरसंह,
तेरो जसमावत न चौदहू भवनसैं ॥१॥

२ रामायणसार उसका १ यह कवित्त है ।

कवित्त ।

छाँड़ि सतसङ्गतिकी पङ्गतिको दीनबन्धु,
विषय अधीन होय अघ अनुरागी हौं ।
साधुनसों ईरषा असाधुनसों प्रीति करौं,
कपटी मलीन रति गुनगण त्यागी हौं ॥
कहांलौं बखानौं अपराध मेरे मेरे नाथ,
आपतै न छाने भयो नरक विभागी हौं ।
और न इलाज अवधेशके अधीन लाज,
कलिको कुजीव हौं महान मन्दभागी हौं ॥१॥

३ शाङ्करकुल कल्पद्रुम जिसमेंके ये दो दोहे हैं ।

सन्तोपति रघुबीरके कवि एकादश राम ।
मेरे पितु तिनको करौं द्वै कर जोरि प्रणाम ॥१॥
गङ्गा गिरा समान विभु गिरिजा सम अभिराम ।
रयो मास नव उदरमैं तिनको करौं प्रणाम ॥२॥

४ शिक्षादर्पण इसमें बालकोंको शिक्षाका वर्णन है
जिसके मङ्गलाचरणका यह पहला दोहा है ।

गनपति दिनपति शैलजा यमुना गंग सविभाव ।
मातु पिता गुरु विप्र यह मोपर होहु दयाल ॥१॥

५ जमुनापच्चीसी जिसके ये २ कवित्त हैं ।

लखिकै उदास निज दूत जमराज कहै,
बैठे क्यों अरेस एक ठौर मान मारेसों ।
जावो क्यों न विश्व पातकीकों क्यों न लावो यहां,
चाहत है काम भयो बन्धक है मारे सों ॥
माथुर कहत सुनि बचन कृतान्त मुख,
बोले करजोर बडै चित्त आनखारेसों ।
गमना तुमैं तो कहू दमना करत नित्य,
हमना कहेंगे जमुनाके न्हानवारेसों ॥१॥

सवैया।

जवै हम पातकी जावहिं लैन कहैं फुरवैन करैं दमना।
पुनि पाकत हैं व्रण जाकर देह सुई दुख पाव तसै गमना॥
निसि छोस पठावत लाखनकों अघ धोय असेसर है तमना।
जमदूत कहै जमराज सुनो जमलोक उजारत है जमुना॥२॥

फुटकर काव्य अनन्योक्ति।

कवित्त।

पावसने पूरव अखा न मेटी ब्रक्षनकी,
कैसे बुझै प्यास ओस पौनके उलीचे तैं।
आयो अब ग्रीषम बचैगो नाहि बाग तेरो,
वापी कूप झारिकैं निकारि नीर नीचे तैं॥
होय हौशियारके सम्हार बार बार कहौं,
हरे हरे रहैं रूख नित्य नीर सींचे तैं।
होनी हुती सोतो सब होय चुकी बागवान,
अब ना सरैगो फल सक द्रुग मीचे तैं॥१॥

महारानी विक्टोरियाका यश।

कवित्त।

पूरब किते ही बादशाह भये याही थल,
जिनकी अनीति भूमि प्रातलों पुकारती॥
तूतो सावधान प्रजा पालन मैं नीति धारि,
बड़े बड़े खलनके बलकों बिगारती।
तेरे राज इनसाफकी आवाज होत,
हिन्द इङ्गलेण्ड एक भांतिसों निहारती।
ऐसे न हैं होंहिंगे न तो सम जगत बीच,
वाह बाह महारानी भारतकी भारती॥१॥

कवि बालकृष्ण।

जिहिं विप्र विहारी वंस जात।
कवि बालकृष्ण प्रभू अन्न पात॥१॥
मैं ने बूंदीके प्रसिद्ध ग्रन्थ वंसभास्करका ऊपर लिखा पद

जब सम्वत् १९५३ के सावनमें अपने मित्र लाला जवाहरलालजीको चिट्ठी लिखकर बालकृष्णजीका हाल पूछा तो उन्होंने लिखा कि "सुविख्यात कविवर बिहारीदासजीके वंशज चौबे बालकृष्णजी सम्वत् १८८४ के लगभग बूंदीमें आये और कविताके प्रसङ्गसे महाराव राजा श्रीरामसिंहजीके दरबारमें रहने लगे सम्वत् १९०८ या ११ में बोहरा जीवनलालजी दीवानके नायब हो गये। आदमी लायक थे जिससे बहुत अधिकार पा गये परन्तु जब सम्वत् १९२४ में बोहराजीका काम उतरकर उनके आधीनोंसे हिसाब समझा जाने लगा तो चौबेजी डरके मारे भेष बदलकर भाग जानेके इरादेसे शहरके बाहर निकले उस दिन सूरज ग्रहन था दो सिपाहियोंने जो उनसे जले हुए थे पहिचानकर पकड़ लिया और दरबारमें अरज करायी। दरबारने उनको और उनके बेटे गोकुलकृष्णको कोटवालीमें कैद करके धन माल सब छीन लिया।

वे दोनों बाप बेटे तो कैदमें ही मरे और छोटे बेटे अमरकृष्णजी और समरकृष्णजी बूंदीसे जयपुर चले गये थे पर फिर कुछ वर्षों पीछे आये तो दरबारसे उनकी कुछ तनखाह हो गयी।

अब अमरकृष्णजी और उनके दो बेटे बिजयकृष्ण, गोपीकृष्ण और गोकुलकृष्णजीके २ बेटे गिरधर और गोविन्द ये ५ आदमी बूंदीमें हैं।

बालकृष्णजीने ग्रन्थ तो कोई नहीं बनाये मगर फुटकर काव्य करते थे उनकी कविता रसीली थी।

बालकृष्णजीके कवित्त।

पाटनमें केशव बिराजे रामसिंह सुनो,
प्रकट पगारिकैं प्रभाय रङ्ग भीनों सो।
केवल कृपाके गहु ग्रन्थपै बिराजे मौन,
मतलब एक इनहींको जान लीनोंसो॥
औरनको बुधिसे गुणोसों न सूझै ऐसो,
कूप अति गुप्त बालकृष्ण कहि दीनों सो।
फूट रह्यो चूनो ऐसो जानि बैकुंठ जूनो,
सुकमा स रित सूनो सूनों कर दीनों सो॥१॥

बिन गिनतीके दिन बोते जप्य जाप बिन,
कोइक तरैं सो वारलैंनी पेट भरनी।
यह जानि सुनिये सुजान नृप रामसिंह,
केशव पुनीत पाय पत्तनीय धरनी।
वंश शुभ वृत्ति सुरताके लिये निःवधि,
थान दै कराई सत्र शरनै सो करनो।
परगट पंखो पदमासी पिया पास नहीं,
करि कमलासन करै है वैठयो धरनी ॥२॥
इतरत तून पात आनन तो आपुसमैं,
छंनत हिलावो हक्कु पाय गहि मौनको।
राम छिनि पाल फाग ख्यालमें गुलाल गछु,
ऊंचो उड़ गयो दिव पेच पाय पौनको॥
बालकृष्ण बासव विलोक्यो पै विकल पल,
भर यह कौतुक निवारो हाल हौनको।
हाय ज्यो निमेष तो निमेष कल पावै मूंदे,
दोय कर लोचन सहस्र कौन कौनको ॥३॥

कवि अमरकृष्ण।

ये बिहारी सतसईके करता चौबे बिहारीदासजीकी आठव पीढ़ीमें दरबार बूंदीके आश्रित हैं मित्र वर्यलाला जवाहिरलाल- जीने मेरे लिखने पर जो इनसे इनके वंशका वृत्तान्त पूछा इन्होंने अपनी एक वंशावली बनाकर उनको दी और मेरे प्रश्नोंके उत्तर भी लिखाये जो बिहारीदासजीके जीवन पर सम्बन्ध रखते हैं।

वह पीढ़ीनामा यह है।

छप्पय।

प्रथम बिहारीदास प्रगट जिन्ह सप्तशती कृत।
विशद ज्ञानके धाम कहूं लवलेश न दुरमत॥
तिनके गोकुलदास तनय तिहि क्षेम करन गनि।
दयाराम सुत जासु बहुर तिनके मानिक भनि॥

जे गनेस तिनके तनय बालकृष्ण तिनके भयउ ।
गुन निपुन चतुरता सदन जो कविता निरमायक कहउ ॥१॥

दोहा ।

तिनके भो अति सन्त मति कवि जन विदुर जान ।
विद्या विमल विवेक निज अमरकृष्ण पहिचान ॥२॥

ये ढांढेजी इन पीढ़ियें दक्षाश्वर और इस बातके अधिकारी हैं कि जैसे चित्तौड़के जो हार अकबरसे गये नाहनहार राठौड़ जयमलजी मेड़तियाके पराक्रमकी कीर्ति पर मोहित होकर हिन्दुस्तानके बड़े लाट लार्ड हेस्टिङ्गने बदनौरके ठाकुरको लिखा था कि मैं आपके दादा जयमलजीकी वीरताको मानता हूं और उनके नामका अदब करता हूं वैसेही भाषाके कवियोंमें किशोरदासजीके नाम लेवा इन अमरकृष्णजीका आदर सत्कार किया जावे तो अनुचित नहीं है। ये कवित्त इनके बनाये हैं।

कवित्त ।

आरति हरन निगमागम बखानै तोहि
धारी निज बिरद प्रभाव क्यों पसारै ना ।
अमर अनन्त गुनहीन जन दीन जानि,
मीन ज्यों बिहीन बारि दीनता बिचारै ना ॥
अतुल उदार त्रिपुरारि मात प्यारे जग,
जलधि अथाह पेखि चित्त धीर धारैना ।
कारन कलुष कलि दारनमें सिंहरूप,
तारन कहाय नाम काहे पार पारैना ॥१॥
परम पवित्र मति अद्भुत चरित्र जाके,
चित्रमें विचित्र मित्र मूरति निहारती ।
अमर अनन्त जाकी कांतिको विलोकै केहु,
काम वाम आदि औ महेश वाम भारती ॥
जन अभिरामा धाम आयरौं बखानै वेद,
ता पै ललनाला वारि वारि डारैं आरती ।
प्रान मन लीन ऐसी बिरह बियागौं दीन
औधिके अधीन पीव पीवर्यो पुकारती ॥२॥

अम्बर विहीन गात शङ्करको देखि देखि,
लागी मन लाज तिहिं हेतु साजी बाहनी।
अमर भनन्त प्रानदान दैवो गायनको,
दूजै निरधारिकै बिलोकी पंक्ति दाहिनी॥
तीजैं कटि लीन्हीं यातै बालागन दीन होत,
याहीपै विचार कीनो नीति तो निबाहनी।
केहरिको वंश निरमूल करिबेके काज,
भूप रघुबीरतें मृगेन्द्र मात जाहनी॥३॥
बुन्दिय जलधि वीच शुक्तिय अमूल्य कवि,
प्रकट परे हैं जिन्हैं गोर करि जोइये।
अमर भनन्त खेद विविध अवेध सोई,
वेधिवे विचार करि उक्त जल धोइये॥
सुनिये नरेन्द्र श्रीदिवान रघुबीर सिंह,
जोंहरी सुजान अप्रशस्त पन गोइये।
पूरन कृपाकी दृष्टि सोई गुन ताके बीच,
अतुल उदार माला निजकर पोइये॥४॥

दोहा।

कविजन कमल दिनेश सम श्रीरघुबीर नरेश।
किरिणि कृपा तम हरणि लहि फूले रहत हमेश॥५॥

गोस्वामी कृष्णलालजी।

ये प्रसिद्ध गोस्वामी गदाधरलालजीके वंशमें महन्त श्रीमोहन लालजीके पुत्र हैं। इनके पूर्वज बहुत समयसे बूंदीमें प्रतिष्ठापूर्वक रहते हैं। इन्होंने संवत १८७२ में नायकाभेदका ग्रन्थ कृष्णविनोद और संवत १८७४ में दूसरा ग्रन्थ अलङ्कारोंका रसभूषण नाम बनाया था और महाराव राजा श्रीविष्णुसिंहजीकी रानी राठौड़जीके हुक्मसे भक्तमालकी टीका भी निर्माण की थी। इनकी कविता बहुत रंगीली और रसीली है जिसका कुछ परिचय नीचेके कवित्तोंसे होगा। इन्होंने महाराव राजा श्रीविष्णुसिंहजी और रामसिंहजीकी प्रशंसामें भी अच्छे अच्छे कवित्त बनाये हैं।

कृष्णविनोदके कवित्त।

कोमल विमल कल कोविद करेंरि केलि,
निपुन कलान राधे कहै कृष्णमतिकी।
जग जग जगें जोति मग मग जोबनकी,
लग लग लचें लंक अंक मधि गतिकी॥
बोलनि बिलोकनि हसनि हेरि मन्द सब,
सुभग सिंगार साजि आज रति अतिकी।
नाही सीसफूल स्वेत सोभित सिखासें यह,
मेरे जान सीस छत्र मैन छत्रपतिकी॥१॥

सवैया।

सूकि सफेद भई बिरहै जरि सोई गंगे गनि जरध दैनी।
अङ्ग मलीन अंगारके धूमसि सो जमुना जग जाहिर रैनी॥
ताहि समै भयो प्यारेको आवन सो अनुराग गिरागति लैनी।
कृष्ण कहै तब ही वर बालकै आय कढ़ी ततकाल त्रिबेनी॥

रसभूषणके कवित्त।

बूंदी आस्त्री विष्णुसिंहजीकी तारीफमें।

अरिकुलखण्डा जस जोति जग मण्डा मित्र,
करिकै अदण्डा रहै कृष्ण सुख साजाके।
लोभ लीक छण्डा छकि परम प्रचण्डा गढ़,
और केही दंड लिये राखि नर काजाके॥
भये भैरु भंडा समसेर करि संडा सब,
अत्रुनकी रंगा दरि रोय सुनि बाजाके।
हुकुम अखंडा बरबंडा बिसनेस ध्रुव,
पाटनमें झण्डा जाय मण्डा राव राजाके॥१॥
तोरे लोह लङ्गर मरोरे साज सङ्करके,
छूट्यो है मदन्ध मत्त मत्त भनि भीजिये।
सोरपुर पौर दौर दोरिकैं परत घोर,
तोर तरु ढाहत सुधाम धर तोजिये॥
राउ बिसने सबला देशके नरेश तेरे,
परखिन भांले मानि कहै कृष्ण दीजिये।

सोतो अरि रानी जोती सपने सरूप जाको,
सोती गज आयो कन्त कहो कैसैं कीजिये ।

कवित्त ।

श्रीरामसिंहजीकी तरवारिकी तारीफमें ।

कैधों शिव सकति विनासवेकी लेख विधि,
कैधों जमराज राज होत दुखकारो है ।
कैधों विष विषमा बिखेरी ताकी येरी छबि,
प्रबल प्रचण्ड कैधों प्रलैको प्रभारी है ॥
कैधों भवभावत सुभक भाग भावी भलि,
कहै कृष्ण तोहि कैधों वाडवाग्नि बारी है ।
कैधों सब शत्रुन संघारिबेको राम रूप,
कालकी कला है कैधों तुपक तिहारो है ॥३॥

सवैया ।

आवरे मित बिती सत आवरे आवरे ही बिरहा दुख दावरे ।
पावरे धार सुधारस पावरे पावरे पुन्य चला चहि धावरे ॥
गावरे गोकुल गावरे गोकुल गावरे गोकुल कृष्ण सुभावरे ।
बावरे चन्दकी चांदनी आजयों तावरे ज्यों तन तावरे तावरे ॥४

कवित्त ।

तेरो यश गावैं तोहि निशि दिन ध्यावैं धरा,
धोल छवि छावै कहै कृष्ण कविवरके ।
राखिहो रहैंगे नहीं राखिहो गहैंगे गैल,
हृदय न सोच प्रान पंछी तरवरके ॥
नो तो हम रावरे तकै न कहूं और ठौर,
गावै गुन सुनि सो गरीब परवरके ।
बूझैं चलि आय कोऊ कहो हंस कोनके हो,
कहैंगे तिहारे तोहि मान सरवरके ॥५॥

गोस्वामी जगदीशलालजी ।

ये महन्त कृष्णलालजीके पुत्र हैं और अपने पिताके रसमयी कविता करते हैं और अब तक १८ ग्रन्थ बना जिनमेंसे कुछ कुछ कविता नीचे लिखी जाती है ।

ब्रजविनोद नायिकाभेदकी ।

कवित्त

सरद सरोजसी सुखात दिन ह्वै कहोतें,
हेरि हेरि हियमें हिमन्त मुरझादैरी ।
कहै जगदीश लागि शिशिर कुलात नाहिं,
सुमति वसन्त सुखकान्त बिसरादैरी ॥
ग्रीषम विषम ताप तनकों तपाय तिय,
बोलत न बैन मनमैन मुरझादैरी ।
सावन पयान पिय सुनिकै रुयालि आज,
अंबुज अनूप दृग बुन्द बरखादैरी ॥१॥
तन अरविन्दवारो मन है मलिन्द वारो,
दृग मृग मन्दवारो चन्दवारो रेख्यो मैं ।
कहै जगदीश छकछन्दवारो कञ्जनपै,
सब सुखकन्दवारो फन्दवारो भेख्यो मैं ॥
आनन अमन्दवारो अलकैं सुगन्धवारो,
भृकुटि विलन्दवारो मैनमद छेख्यो मैं ।
मुरली सुरन्धवारो आली भुजबन्धवारो,
मोहन अनन्दवारो नन्दवारो देखोमैं ॥२॥
चञ्चल चितोन चख चरखो चलाय चाल,
चौंकि चख फेरीसी मचाई सुख धामकों ।
कहै जगदीश चारु चातुरी सुपरि नांट,
गांठि गहिदीनी दाम दोरि हित ग्रामकों ॥
हाव हिय टोनातें हिराग सुखदाय फिरि,
भौंहन कमान तान साधे तिन कामकों ।
अंकुस अनूप आछ धरिकै मयङ्कमुखी,
अंक दर कीने एरियङ्क हरि श्यामकों ॥२५
सज्जन सिंगार सैन गज्जत महीप मैन,
तज्जत निधान दैन चैन चित देखेकों ।
कहै जगदीश रङ्ग रचिदैं तुरङ्ग नख,
पङ्गु भये डोलत गयन्द गति पेखेकों ॥

अम्बर अनूप अङ्ग अवनि तरङ्ग छाय,
कबिसों छकाय अरि सोनि सिर लैबेकों ।
नाहसे नरिन्द बस करकें फिरन्द हित,
इन्दुमुखी राजत बिलन्द कर लैबेकों ॥४॥

२ शाङ्गिल्यशास्त्री ।

कवित्त ।

छपि छपि चञ्चला चलत चितचोरनकों,
मोरनकी मोज मन सोंच सरजैं लगी ।
कहैं जगदीश धोर सीतल समीर चलि,
चातक चकोरनकी चोज चरजैं लगी ॥
कोकिला कलापत कदम्बनपै ठोर ठोर,
घोर घटा घनकी घनेरी गरजैं लगी ।
कलित कलन्दी तट वंसीबट देखि देखि,
आली बनमालीकी हरोल हरजैं लगी ॥१॥
दोर दोर दामिनी दबावैं चहुवोरनतैं
घोर घोर घनकी घनेरी घटा छावैंरी ।
कहैं जगदीश थोर थोर बरसावैं बुन्द,
जोर जोर जमुना जमून दरसावैंरी ॥
चोर चोर चितकों चुरावै चोर चातक ये,
कोरि कोरि कोकिला करेजो कल पावैंरी ।
ठोर ठोर कोर मंडरात फिरैं मारनकों,
छोर छोर कान वन कोकिला सिधावैंरी ॥२॥

सवैया ।

सावनकों लखिकै सुकुमार बढ़ी बरसावनतैं हिय हूकैं ।
त्यौं जगदीश झरै झरना झनकारत झींगुर झार उलूकैं ॥
कारी घटा घनकी गरजैं इत चातक कीर कदम्बन कूकैं ।
ये अलि मोहि जरावनकों दइ मारे मयूर घरी नहि चूकैं ॥३

३ प्रस्तार प्रकाशमें ।

सवैया ।

सोचित संख्यहिकी समझावत फेर सहा प्रस्तार सुजानो ।

त्यों जगदीश सुची रचिकै हट नष्ट करोजु उदिष्ट बखानो ॥
मेरु ध्वजा कहिकै सुखदाय मनोहर मर्कटिसों मन आनों।
अष्ट क्रिया करिकै तुमनी फिरि यो इस प्रत्ययकों पहिचानों ॥१॥

४ बुन्दीन्द्र नृप रामसिंहजीकोहै।

कवित्त।

कालकी कलासी विकराल कालिकासी,
खासी सूरनकी कासी ये विलासी रण रङ्गकी।
कहैं जगदीश बाड़वानलसी भासी शास्त्र,
शुद्ध तनरासी यों प्रभासी रवि सङ्गकी॥
चारु चञ्चलासी चहु ओरन प्रकाशी यह,
विखकी लताशी उकतासी मति भङ्गकी।
बुन्दी गढवासी सुखरासी नृप राम तेरी,
तेग भुजदासी मीचिकासी अरि अङ्गका ॥१॥
उन्है गङ्ग आनों इन कीरतिको ठांनी,
वह वीची लपटानी यह तेज तन तानी है।
कहै जगदीश सुरलोक सुखदानी वह,
येहू नर लोकनमै मोद बरसानी है॥
वेदन बखानी यमसैं न सकुचानी वह,
येहू कवि गानी खल रीति सुरझानी है।
कृत युग मानी कलिमांझ दरसांनी हम,
भावतैं भगीरत समान राम जानी हैं ॥२॥
दिपति दिनेस सुख सम्पति सुरेस सुनि,
सांभृति महेस सेस तामैं सोस गायोमैं।
कहै जगदीश बल नलसैं विसेस गनि,
गुनसैं गनेस गोकुले सहित भायो मैं॥
वरसैं विधेस सरवरमैं न देस अरु,
सूरतिमैं सेस सूरतामैं राम ठायोमैं।
सुनिये हमेस सब सुमति सुदेस आज,
नरमै नरेस वला देस राम पायोमैं ॥३॥
दिन दिन दूनी दुति होहु महि मण्डलमैं,
कुण्डल अनूप मार्त्तंडलों तन्यो रहो।

कहै जगदीश देश देशके नरेसनकौ,
मिलन उमाह चित चोगुनो बन्यो रहौ ॥
फूलि फूलि फैलत फिरहु दसौं दिसमें,
देखि देखि मेरे उर आंनद सन्यो रहौ
बुन्दी नृप राय सुखधामको अखण्ड जस,
जाहिर जिहान कलिकुन्द सो ठन्यो रहौ ॥५॥

(५) श्रीलालबिहारी प्रागट पचीसीके ।

सवैया ।

मङ्गल रूप मयङ्क भये भुव, भक्तनमैं जुगदाधर नामी ।
त्यौं जगदीश जपौ दिन रैन, सुलाल सदा सुचि अन्तरयामी ॥
आन न आस कछु उरमैं, शुभ साधन ध्यान धरैं निष्कामी ।
सन्त सिरोमनि जानि सुजान, करैं जगके नर नारि नमामी ॥१॥

(६) श्रीलालबिहारी अष्टक ।

सवैया ।

मंजु मयूर किरीट लहैं दुति, अम्बर पीत अनूप निहारो ।
त्यो जगदीश बिसाल गरैं मनि, माल मतङ्गनकी छबि वारो ॥
कुंडल गोल कपोल निहारि, निहाल भयो मनदास तिहारो ।
लालबिहारी कृपा करि सुन्दर, मोउर मन्दिर मांहि बिधारो ॥१॥

(७) कलयुगाष्टकके ।

सवैया ।

प्रीति गई रजपूतनकी अरु, मीत गई निज नारिन केरी ।
त्यौं जगदीश प्रतीत गई श्रुति, नीति गई नृपके तन टेरी ॥
जीत गई सिगरे जगकी मति, जीति गई हरिके जन हेरी ।
या कलिकाल कृपा करि लालजू, राखिये लाज सबैं बिधि मेरी ॥१॥

(८) महावीराष्टकके ।

सवैया ।

लाल लगोट बिसाल बन्यो सुचि, भाल सिंदूर सदा छबि छाजैं ।
त्यौं जगदीश बड़े भुजदण्ड, अखंड धरै गिरि गुर्ज समाजैं ॥
भक्त सदा सुचि चाह करैं दुति, दारन देखि निशाचर लाजैं ।
या बिधि ध्यान धरौ हनुमानजू, जात सबैं सब संकट भाजैं ॥१॥

(९) नीति अष्टकके ।

सवैया ।

बात कभू न करैं हंसिराजकी, आतमै जायकैं नैक न बोलैं ।
त्यौं जगदीश हजारनकी हिय, बात सुनैं अपनी नहि खोलैं ॥
मोत परोसिनतैं न तजैं, पर वस्तु सदा विषके सम तोलैं ।
झूट कभू न कहैं मुखतैं, हरि नाम जपैं नर होत अमोलैं ॥१॥

(१०) षट उपदेशके ।

सवैया ।

सन्तनको करिये नित सङ्ग, असन्तनके पथ पाउ न दीजै ।
त्यौं जगदीश भजैं हरिकौं बलि, औरनको उपचार न कीजै ॥
बाद बिबाद करै न ब्रथा, सिगरे कुल लोगनको जस लीजै ।
राखिये जीवन पै जु दया, बिन हिंसक होय सदा जग जीजै ॥१॥

(११) ध्यान षटपदीके ।

कमल नैन कर कमल, कमल पद कमल कमल कर ।
अमल चन्द मुख चन्द, बिकट शिर चन्द चन्दधर ॥
मधुर मन्द मुसकानि, कान कुण्डल अति शोभित ।
बसन पीत मनि माल, माल गुञ्जन मन लोभित ॥
जगदीश भौंह अलकैं अधर, मन्द मन्द मुरली बजत ।
ब्रज चन्द अमन्द अलौकि, अलि आत देखि मन मथ लजत ॥१॥

(१२) कृष्णशतके ।

दोहा ।

गोकुलेश गोपेश प्रभु, गोपालक गोबिन्द ।
गोपी प्रिय गोवर्धरन, मुरली धरन मुकुन्द ॥१॥

(१३) विनयशतके ।

दोहा ।

वचन वस्तु अनमोल है, खोलन करिय खराब ।
बिन गाहक नाहक मिटै, ज्यों मोतिनकी आब ॥१॥

[१४] गुरु महिमाके ।

दोहा ।

गुरु प्रताप रवि उदय तैं, महा मोह तम जाय ।
काम क्रोध लोभादिके, सकल द्वन्द मिटि जाय ॥१॥

(१५) अश्व चालीसाके ।

दोहा ।

पद पङ्कज गहि लालके, निज मतिके अनुसार ।
कहैं अश्वके दोष गुन, कवि जगदीश विचार ॥१॥

(१६) सम्प्रदायारके ।

दोहा ।

च्यार वरणके ऊपरैं, च्यार आश्रमहि जान ।
तिन पै च्यारों सम्प्रदा, च्यारों जुग परिमान ॥१॥

(१७) उत्सव प्रकाशके ।

दोहा ।

मैं निज मति मापक कही, उत्सव रीति अपार ।
भूल चूक याकी सकल, छमा करहु हरिदार ॥१॥

(१८) पद पञ्चापके ।

पद ।

माई मैं तो री जमुना जात डरूं ।
या जमुनाके विकट करारे भ्रमतैं रपट परूं ।
सङ्कर्षणके तीर तीर पै देखत लाज मरूं ॥
जगपति और सङ्ग नहि कोऊ कैसैं करि उबरूं ॥१॥
हूं तो माने जाणा छां जी नन्द किसोर ।
निसि औरनके दिन औरनके हमको चाहत भोर ॥
झूटे प्रेम जनावत हमसौं तुम राचे सिर मोर ।
जगपति जानि लिये गिरिधरजी तुम सांचे चित चोर ॥२॥

गोस्वामी कन्हैयालालजी ।

ये गोस्वामी जगदीशलालजीके कुंवर हैं और कविताका अभ्यास करते हैं । इनका यह कवित्त है ।

श्रीबुन्दीन्द्र श्रीरामसिंहजीके घोड़ेकी तारीफमें।

कवित्त।

सुन्दर सुरङ्गवारे जाल मजु जंग वारे।
फैल फिरगांन वारे करत फिरन में॥
खान कसमीर वारे केस कासमीर वारे।
करन कंधार वारे सोहत धरनि में।
हीनै हरवान वारे दीखै जल जान वारे।
ओजे मुलतान वारे करत करन में॥
ऐसे नृपराम वारे बुन्दीगढ़ भानु वारे।
चंचल चलान वारे सोहत चरन में॥१॥

गोस्वामी कल्याणलालजी।

ये कन्हैया लालाजीके कंवर और जगद्गोपाललजीके भंवर हैं, आप दादा परदादाके समान कवितामें रुचि रखते हैं कवित्त भी अच्छे कहते हैं यह सवैया इनका है।

सवैया।

आवैं सदा हम जोही करैं बदनामो निसंक भलैं अंग छावैं।
छावैं कलीरसु मोहनके गुन दूपन भेदनको चित लावैं॥
लावैं अवैं हिय मूरति वाजदि लाज कहंब कहो किहि चावैं।
चावैं नहीं कुलकान हमें गुरु लोगनको डर भूलि न भावैं॥१॥

बोहरा तुलाराम।

नागर ब्राह्मणोंका १ घराना कई पीढ़ियोंसे बूंदीमें रहता है और राजका काम करता है उसमें बोहरा तुलारामजी अच्छे कवि हुए थे राव राजा विष्णुसिंहजी और रामसिंहजीके समयमें थे इनके ये २ कवित्त कविराव गुलाबसिंहजीने भेजे थे।

कवित्त।

कोऊ कहैं निरंजन निराकार सब ही पै,
कोऊ कहैं बैठ बदकुण्ठके तखत पै।
कोऊ कहैं छीर सरसया सेस साहिबी पै,
ओड़े हैं लिये ईसंग सहज हो सकत पै॥

बीते मतो मेरे मन सांची कर मान्यो जग,
जान्यो बिसनेसकी सहाय की भगत पै ॥
हयतैं परत धर धरतैं कढ़े हैं आनौं ।
फारि हरिखंभ प्रल्हादके बखत पै ॥१॥
कीनौ सुखचैन सेवसज्या सुभ सागर मैं ।
सबकी संभारि चित राखत अरज पै ॥
इतै मान आकुल ह्वै औचकि पधारे आप ।
काहू न विचारे कौन काज अचिरज पै ॥
भक्त बिसनेसकी सहाय कीनी बार बार ।
एक अद्भुत घात राखी है गरज पै ।
घोरे तैं परत दौरे पायन पयादे छोरे ।
संगके सबही जैसे गजकी गरज पै ॥२॥

इनके बेटे बोहरा जीवनलालजी थे ।

बोहरा जीवनलालजी नागर ।

ये बूंदी दरबारके कर्मचारियोंमेंसे थे माघ शुक्ला ६ सम्वत् १८७० गुरुवारको जन्मे भाद्रपद शुक्ला ८ सम्वत् १९२६ को ५५ वर्ष ७ महीने ३ दिनकी अवस्थामें देहान्त हुआ इन्होंने संस्कृत भाषा और राजकाजमें अच्छी निपुणता प्राप्त की थी जिससे प्रसन्न होकर महाराव राजा श्रीरामसिंहजीने अपने पास रखकर दिन दिन आदर सन्मान बढ़ाया और माघ शुक्ल पञ्चमी सम्वत् १८८८ को तो मुसाहिब अर्थात् प्रधान मन्त्रीका महत्व पद प्रदान किया उसी वर्ष महाराव राजा साहिब तीर्थयात्राको गये और १॥ वर्षतक बाहर रहे जिसमें ११ लाख रुपये खर्च हुए इस बड़ी यात्राका सब प्रबन्ध बोहरा जीवनलालजीने यथा योग्य किया। पहिले केशवरायजीके पाटनके परगनेमें बूंदीके राजका पूरा अधिकार नहीं था, कुछ हिस्सा उसका अङ्गरेजोंके नीचे था वह जीवनलालजीने बहुतसा परिश्रम करके अपने राजमें ले लिया जिसकी रीझमें राव राजा जीने इनको ताजीम, धराधर, हाथी मीनाकार कटारी, और खास पोशाक दी। सम्वत् १९०५ में लाट साहिब अजमेरमें आये

तो महाराव राजा साहिबने इनको अपनी तर्फसे मिलनेके वास्ते भेजा। सम्वत् १९१४ में कालोंका गदर हुआ तो उस समय इन्होंने बूंदीका ठीक बन्दोबस्त रखा। सम्वत् १९१९ में आगरेमें लाट साहबका दरबार हुआ उसमें महाराव राजा साहिबको जी० सी० एस० आई० का तमगा अङ्गरेजी सरकारसे मिला सम्वत् १९२२ में रावराजा साहिब महाशय महादेव आश्रमसे मिलनेको काशी गये वहांसे लौटते हुए रीवांमें व्याह हुआ इन सब कामोंमें लाखों ही रुपये खर्च पड़े जिनका प्रबन्ध लोहराजीने करके सब बातें ठीक ठाक कर दी। सम्वत् १९२३ में महारुद्र किया। यह तो संक्षिप्त वृत्तान्त इनकी राज क्रिया का है, हस्त क्रियामें भी वे बड़े चतुर रे कई काम ऐसे बनाते थे कि, जिसकी कारीगरी देखते ही बनती थी कहते नहीं बनती कागजके चित्र और अक्षर तो बहुत ही अद्भुत कतरते थे एक तोता, ऐसा कतरा था जिसकी चोंचमें भागवतका १ श्लोक भी वैसा ही कतरा हुआ था अङ्गरेजोंने, उसको बहुत पसन्द किया और लण्डनको भेज दिया ऐसे ही मोर वगैरा कई पशु पक्षी कागजके कतर कतरके सर्वाङ्ग सुन्दर और सुडौल बनाये थे सारांश यह है कि इनका हस्त चातुर्य भी प्रशंसनीय था।

अब इनकी साहित्य विद्याका भी थोड़ासा वर्णन किया जाता है जब इनकी १६ वर्षकी अवस्था थी तब कृष्णखंड नाम ग्रन्थ १३ हजार श्लोकोंका बनाया था जो फाल्गुन कृष्ण एकादशी भृगुवार सम्वत् १८८६ को समाप्त हुआ। फिर सम्वत् १९१४ के पीछे इतने भाषा ग्रन्थ बनाये।

१ ऊखाहरण, २ दुर्गा चरित्र, ३ श्रीमद्भागवत, ४ रामायण, ५ गंगाशतक, ६ अवतार माला, ७ संहिताका भाष्य।

ये फारसी भी पढ़े थे और उस भाषाकी गजलें भी बनाते थे परन्तु हमको कोई गजल तो नहीं मिली भाषाके ये कई कवित्त कविराव गुलाबजीने बूंदीसे भेजे थे सो यहां लिखे जाते हैं।

कवित्त।

पुहप अपारकों सम्हारि पुञ्ज पुष्प धनु।
चौंप भरे चाढ़त कमानैं छवि ओजकी॥

चलत चहुंघां मंजु सायक कुसुम वृन्द ।
झरत पराग फैली सौरभ सरोजकी ॥
राम नृप रावरे यौं फागके समाज काज ।
आज छवि छीनी कुसुमायुधके चोजकी ॥
भौंरे मानपतिके भुलानीसी भ्रमत भोरी ।
ग्रसत मयंकमुखी महिला मनोजकी ॥१॥

कीनीरंग भीनो फागलीला नृप राम ।
जित तित नहरैं सुरंग रंगैं गहरैं ॥
चंचला चलाचल चहूंघां पिचकारिन सैं ।
सातौं लोक ललित ललाई बढ़ी लहरैं ॥
फैलि फैलि पौनझकझोरैं जोर लगि लगि ।
ऊंची हरलोक लौं पहूं चाव चहरैं ॥
पीतपट ओढ़े पौढ़े दंपतिसो रमापति ।
जागे दीखे बसन बसन्ती अंग पहरे ॥२॥

ग्वाल हेत सातदिन धार्‌यौ एक कर ही सैं ।
गिरि गिरिराज ताकै कैसे अवमम आत ॥
विश्व भार उदर दिखायौ सुखद्वार करि ।
निरखें यशोदा कीनी चौंकीसी चकीसी मात ॥
धारो ब्रह्म अखण्ड अनेक रोम कूपजल ।
दीसै जगदीश अब यहै फैलकीसी बात ॥
उछरि उछरि आत गैंद जिसितो सैं लगि ।
मेरो मन अब आपहूं तै सौ न धीस्यौ जात ॥३॥

मज्जन किये पैजन चर्मनवतीके नीर ।
छीर निधिन्हाय पुनि तनकौं घिनै कहा ॥
रामनृप रावरे बडैजे शत्रुशल्य ताकौ ।
कृत्य निरखैं पै विधि विधिपै बनै कहा ॥
केशवके मन्दिरके अन्दर गये पै फेरि ।
सुन्दर पुरन्दर कौं घरकौं छिनै कहा ॥
पत्तनस्थ हरिरत्न रस मुक्ति मदमत्त ।
सुरपति पामरको पद्वी कौं गिनै कहा ॥४॥

डूबी देवलनके यवनके प्रभुत्व मांझ ।
भूप शत्रुशल्य रच्यो मन्दिर हट्यो नहीं ॥
रामनृप ताकै गुन निर्गुन सगुन हूंकै ।
तिन्हैं निज लोक दयो तदपि घट्यो नहीं ॥
कोश हेत कमला हूं दीनि कुल कोटिलगि ।
तुम्है पूरो पतन दयैं पैहू खट्यो नहीं ॥
बैठि पद्मासन लैं मौन अजौं केशवको ।
प्रति उपकारको विचारिबो मिट्यो नहीं ॥५॥

गुनि न बुलावै गुन देखिके चढ़ावे तिन्हैं ।
फेरि पहुंचावै पीछे निज ग्रह दूर है ॥
बसु बसुधाहै भरपूर करि पूरन कौं ।
रनमैं कटावै फेरि करि चूर चूर है ॥
रामनृप रावरै विशासन दै शत्रुनको ।
उन्है विरवासै नित अति बलपूर है ॥
प्रीति धरि जीति जग कीर्ति लैकै भूलिराति ।
नीति रावरीकै कछू दीसत गरूर हैं ॥६॥
चन्द्रमिस जाकौं चन्द्रशेखर चढ़ावै शीश ।
पटमिस धारै गिरा मूरति सवाबकी ॥
चन्दनकै मिस चारु चर्चित अगर सार
रमामिस हरि हिय धारै चित आवकी ॥
भूपरामसिंह तेरी कीरती कलाकी कांति ।
भांति भांति बाढ़ै छवि कविके किताबकी ॥
मित्रमुखपङ्ककारी आब माहताबकीत्यौं ।
शत्रु मुख रंग हारी ताब आफताबकी ॥७॥
विधिकृत चन्द्रतैं अनन्दित चकोर जन्तु ।
तव यश चन्द्रतैं कविंद्र सुख पातु हैं ॥
वह निशिराजै यह दिवा निशि समराजै ।
वह सकलङ्क अकलङ्क यहां भातु है ॥
वाहि लखे कंज पुञ्ज मुकुलित होत याहि ।
लखि कविवृन्द मुख कञ्ज विकसातु है ॥

हाथ वृद्धिवाकैं यह बढ़ै नित भूपराम ।
जाके अरि राह पातैं अरि राह आतु है ॥८॥
निरखि निरखि नैन सुनि सुनि गान बैन ।
हरखि हरखि मैन सैन रचिबौ करैं ॥
फिर फिर फेरिलैलै इत उत आतु जातु ।
उठि उठि बैठि बैठि अति पचिबो करै ॥
सुनहु सुजान प्यारी आंखें अनियारी बारी ।
रोकै हू कहां लगियै तापैं बचिबो करैं ॥
उमगि अनंग रागरङ्ग मधु भृङ्ग भयो ।
तेरे संग संगमन मेरो नचिबो करैं ॥९॥
वदन मयंकपै चकोर ह्वै रहत नित ।
पंकजनयन देखि भौंरलौं भयो फिरै ॥
अधर सुधारसके चखिबे कौं सुमनसु ।
कूतरी ह्वै नैननिके तारन फयो फिरैं ॥
अङ्ग अङ्ग गहन अनंगको सुभट होत ।
बानिगान सुनि ठगे मृगलौं ठयो फिरै ॥
तेरेरूप भूप आगैं पियको अनूप मन ।
धरि बहुरूप बहुरूपसो भयो फिरै ॥१०॥
दुपहर ग्रीखमके तपत करेजा जानि ।
चन्दन उसीर फूल हारन क्यौं उपचार ॥
दूनी बढ़ैं देखिवट छांहि जलमाझ घुमै ।
कांपत करेजा बूढ़िबेकै डर कुचभार ॥
कोऊ और नाहीं आय जकी हैन उवाला मांहि ।
सुनहु सुजान चख कोरन मरोरदार ॥
इतचित दीजै करयाझ कर कांज कीजे ।
बूड़त हूं अंक भरिलीजे उपकार कार ॥११॥

हनुमत कवि ।

झाड़ा हनुमतसिंहजी मोहकमसिंहो जो बलवन्तसिंहजीके बेटे और दलपतसिंहजीके पोतेहैं अव्वल दरजेके सरदार राज बूंदीके हैं२००००की जागीर कौनसलकी मेम्बरी नेणवेके किलेकी किलेदारी और

परगनेको हुकूमत राजसे इनको मिली हुई हैं ये संस्कृत और भाषाके अच्छे विद्वान हैं शस्त्र विद्या और शालिहोत्र शास्त्रमें अति निपुण हैं बड़े सज्जन और परोपकारी हैं ६३ वर्षकी अवस्था हो गई है तो भी बड़े साहसी और मजबूत सिपाही हैं कविता भी करते हैं उनके कई कवित्त कवि रायगुलाबसिंहजीने भेजे थे उनमेंसे ये २ कवित्त यहां लिखे जाते हैं।

आई है बसन्त कंत अन्त मेरो गयो सखि।
होय नहीं प्राणहाण पीवको गमन जाण॥
शीतल सुगन्ध मन्द वायुको संचार होत।
औरहू शोभायमान बाटिका नदी निवाण॥
देखि याद आत दिनरात आली पीव प्यारो।
कहा करूं जाऊं कहां प्राणनां करै प्रयाण॥
कहै हनुमन्त यातें भांमिनि बिकल भई।
तिक्ष्णधार होत पार मारके कुमार बांण॥१॥
कंज बिना सर औ सुगन्ध बिना फूलमाल।
लाल है न जड़या बिना मेघ बिना दामिनी॥
नदी बिना नीर खीर बिना गाय भैंस धन।
वृक्ष बिना बाटिका औ वापिका भयावनी॥
नीति बिना भूपति सुशील बिना विद्यावान।
बुद्धिवान बिना बात लागे ना सुहावनी॥
कहै हनुमान या समान कवि देखिपल।
चन्दा बिना यामिनी ज्यों कन्त बिना कामिनी॥२॥
वैभवमें बिबुधेश रमेश बीरताई मैं।
तेज मैं दिनेश रूप मांहि दूजे काम हैं॥
बुद्धिमैं गणेश दान देवेमैं हमेश कुबेर।
धर्म्म मरजाद मांहि रामकोसो नाम है॥
धनमें धनेश बरतात प्रजापालनमें।
नीतिमें निपुण ब्रह्मानन्दके सुधाम हैं॥
कहै हनुमंत मैं विचार कहे बुंदी पति।
राजनके राजा महाराव राजा राम हैं॥३॥

देहरूपी देहरामें केशव विराज मान ।
बेदहू प्रमाणगामें चित्त तून लवै क्यूं ।
देहरूपी देहरो है कौनको बणायो जाण ।
वाको नाव याद कर ताकूं भूल जावै क्यूं ॥
देहरूपी देहरो है और देहरासूं ऊंचो ।
नीचो जाणयामें वृथा चितकूं डुलावे क्यूं ॥
कहै हनुमन्त मान सोचि या कूं जाणकर ।
देहपै दयाकूं राखि देहरा ढ़हावै क्यूं ॥४॥
पानीकौं राखिबे मैं सनमुख संग्राम जाय ।
घाव खाय कठिन प्राण देत नरमानी ॥
पाणीकौं राखिबे मैं और हू अनेक कष्ट ॥
कहै राहचालै या निसचय कर जानी ।
पाणीकौं राखिबे मै माथे हू करज करकै ।
भुक्तै कोऊ दुःख तोऊ दान देत दानी ॥
यारी हनुमंन कहै पाणीको जतन राखो ।
उतर जात पाणी जब जनम धूलधानी ॥५॥

राव चतुर्भुज सहायजी सिरोहिया ।

ये किसी बादशाहके यहां रहा करते थे एकदिन बादशाहने इनसे कहा कि हम जैसा तुमको दानमान देनेवाला कोई नहीं है यह सुनकर रावजीने अर्जकी कि और भी राणा जगतसिंहजी जैसे हैं इसपर बादशाह नाराज हो गये जब रानाजीने यह बात सुनी तो इनके वास्ते हाथी घोड़ा वस्त्र भूषण कई हजारकी जागीरका पट्टा भेजकर इनको अपने यहां बुला लिया और बहुत आदर मान बढ़ाया यहांतक कि जैसे होली दशहरे पर परस्पर मुजरा करनेको साधारण मनुष्य आया जाया करते हैं उसी तरह राणाजी भी इनके मकानपर पधारते थे और इनका स्थान शरणागत रक्षक कहा जाता था इस हालको सूचन करनेवाली कुलकी रची गई है ।

॥ यथा ॥

दूसरे दीनको काम कहा, जबलौं बखिये जगदीश बचावै ॥

गायको मारन हारन मारिके। धर्म घटै धन हाथ न आवै॥
दै पठये गज गांव तुरंगम। चत्रभुज देखि दुनी सुख पावै॥
भोजन नम्पत राज तपै। परमान कथै सोई दान बधावै॥१॥

और इन रावजीका आना जाना बूंदीमें भी था वे एक बार बूंदी महाराज रावरत्नके साथ दिल्ली गये थे वहां बादशाही दरबारमें रावरत्नजीके मोटे बुरे कपड़े देखकर औरोंने हसीकी तब इन्होंने यह कवित्त कहकर उनको सुनाया था।

॥ यथा ॥

ऊंची तरवारि मारें ऊंच होत चत्रभुज।
पहिरै कहा होत है ऊंची महमूदीके॥
सादा सिरदारी रजपूती सुधा सादा सोभ।
कौन जेब जीन बनबाय फूंदाफूंदीके॥
हारे दल दुवन पछारे एक पारै खेत।
एकैं भये रेत खेत मोर कूंदा खूंदीके॥
दिल्लीके मसन्द दौरि दक्खिनिन बंद कीनैं।
दक्खिनी रतन बंद कीनैं राव बूंदीके॥२॥

रावरत्नके परलोक वास होनेपर यह मरसिया इन्होंने बनाया था॥

यथा।

सिंहरूपी शाहजहां खाडव खण्डित करै।
आडी कौन दैय तेग तोरि डारियतु है॥
कलियुग जोर असुरानको प्रताप ऐसो।
जलाल सलीम कौनरीति धारियतु है॥
निरधनी ह्वै गई धेनु आग कहैं दाहैं सुख।
चत्रभुज कवीनका छाती जारियतु है॥
दूनी हुती हाड़ा रतनमनी भई हिन्दू राह।
रतन बिहूनी गायें सूनी मारियतु है॥३॥

प्रतापसहायजी।

ये राव चतुर्भुज सहायजीके पोते या परपोते थे और अपने दादा परदादाके आगे ही छोटी उमरमें अच्छे गुणी हो गये थे एक

कार वर्षा ऋतुमें उदयपुरमें दो तीन दिन तक श्रीसूर्य्यनारायणके दर्शन न हुये तब इन्होंने सूर्य्य उपासकोंसे कहा कि हिन्दुओंके सूर्य्य राणाजी है उनके दर्शन करके भोजन करो । यह बात सबके मन भाई तब राणा राजसिंहजासे अर्ज करवाई तो राणाजी दर्शन देनेको झरोखेमें आये प्रजाने दर्शन पाये यह सवैया उस समयका है ।

यथा ।

उद्दित आज अदीत उदैपुर, पेखिजियैं जग ताहिके पेखैं ।
पुक्खन ज्यौं परताप तपै, परताप तपै परताप विसेखैं ॥
दीजिये आदर कौरति लीजिये, तोजैं खुमानके दान अलेखैं ।
जग तो भानहे राज सीरान चलो, हिंदवानको सूरज देखैं ॥१॥

अपने पूर्वजोंके अनुसार ये भी बूंदी आया जाया करते थे इसलिये बुंदीश शत्रुसालजीकी प्रशंसामें इनकी बनायी हुई जो [illegible]ता थी उसमेंकी ये दो छप्पय हाथ लगी हैं ।

यथा ।

ससि कलङ्क अपवास जलधि सुर भो पश किन्निय ।
इन्द्र सहस द्रग अरु न पंगु आदित ग्रह लिन्निय ॥
काम दग्ध कपि सुग्ध नीलकण्ठ सु विष धारिय ।
अच सुमेरु कुवेर कृपन ब्रह्मा व्यभिचारिय ॥
सुर असुर एक गुन भङ्ग हुव नहि कलङ्क गुपिनाथ सुव ।
परताप कवन उप्पम करव तो समान सत्रु सल्लतुव ॥२॥

आतङ्किय अय राक कहर कंप्पवहर हू हिय ।
पुरनट्टिय कर नाट कोपि कलमलिय कच्छाजिय ॥
बीजापुर बल बलिय वैरिं न विदुर धर कंड़िय ।
विभीषन हु भय करिय फेरि सायर पुनि उन्थिय ॥
परताप कहिय खगताप तुव मरहट्ठ न मुक्किय मनिय ।
गढ गढ चिगट्ठ हठ सठ करिय धनि सत्रुसलसंभर धनिय ॥३॥

इन प्रतापसहायजीकी प्रशंसामें किसीने दो कवित्त कहे थे उनमेंका यह एक कवित्त है ।

कवित्त ।

पूरब और पश्चिम लौं मालवे बुंदेलखण्ड,
बड़े बड़े भूप करैं दर्शनकी चावरे ।

जोधपुर जैपुर दिल्लीके सुलतानमैं,
राखो कहि भांट जानि ऐसे महा भावरे॥
आवैं फरमान बहुमान देश देशनतैं,
ल्यावैं सजि वाजि घर बैठें गज गांवरे।
ऐसो है प्रताप राव रावरो प्रताप माहि,
राना हू लिखत रजपूत हम रावरे॥१॥

फिर बूंदीमें इनका प्रवास होनेका यह कारण हुआ कि राणाराजसिंहजीके और उनके महाराज कुमार सरदारसिंहजीके परस्पर विरोध होनेसे महाराजकुमार इनकी हवेली आ गये। इन्होंने अपने पास रक्खे। कितने महीनों पीछे होली अथवा दशहराका मुजरा लेनेको इनकी हवेली रानाजी पधारे। उस समय इन्होंने पिता पुत्रका विरोध मिटा देना कल्याणकारी समझकर रानाजीके कद-मोंमें महाराज कुमारको हाजिर कर दिया। तब रानाजीने प्रसन्न होकर धर्म्म ईमानके साथ शपथ खाकर कहा कि मैं अबसे इसके साथ कुछ भी अनबन नहीं रक्खूंगा यही बालक है। ऐसा विश्वास देकर साथ ले गये फिर उसी रातको मार डाला। प्रभात ही ये रावजी रानाजीके हजूरमें हाजिर हुआ करते थे सो उस दिन वहीं उस पाप कर्म्म होनेका हाल सुनकर रानाजीसे मुजरा करनेको न गये।

और यह सोरठा कहकर बूंदी चले आये मार्गमें रानाजीके राज्यका अन्न जल नहीं लिया।

सोरठा।

पहिली मार्‌यो बाप, पाछै पूत पछाड़ियो।
पग लीधो परताप, राजन मांगूं राजवी॥१॥

यहां महाराव राज बुधसिंहजीने इनको हरणावदा गांव २५०००) की जीविका सहित और इतना कुरब दिया।

१ बांह पसार कर मिलना।

२ हरणावदेसे जब बूंदी आवें तो लेनेको पधारें।

३ बूंदीसे हरणवदे जावें तो विदा करनेको उनके डेरेपर आवें।

४ राव राजाजीकी पदवी ।

फिर जब बुधसिंहजी उदयपुरका व्याह करनेके वास्ते जाने लगे तो इनको भी साथ चलनेका हुक्म दिया इन्होंने अपनी वह प्रतिज्ञा जताई तो फरमाया कि तुम्हारे वास्ते अन्नजल यहांसे चलेंगे फिर भी जो तुम नहीं चलोगे तो मैं व्याह करनेको ही नहीं जाऊंगा ।

धनीकी ऐसी हठसे उनको जानापड़ा परन्तु राणाजीके राज्यमें बूंदीसे गया हुआ अन्नजल लिया जब राणाजी बरातकी पेशवाईको आये तो महाराव राजाजीने पहिले इनका सत्कार उनसे कराया और फिर सब सरदारोंका ।

व्याहके समय रावजीके दरबारमें नहीं गये तो राणाजी इनके डेरे आये और कहा कि पहिले दिन भी तो हमसे आपने सत्कार करा लिया था फिर अब जो हम देते हैं सो क्यों नहीं लेते हो । तब रावजीने २ कवित्त कहे जिनका यह आशय था कि सरकार तो वह मैंने धनीकी आज्ञासे अङ्गीकार किया था परन्तु दान नहीं लूंगा यह कहकर मुंह फेर लिया इनका कुछ वृतान्त वंश भास्करमें भी लिखा है ।

यह वृत्तान्त इन कविजीका बूंदीसे कविराव रामनाथसिंहजीने लिखकर भेजा था मैंने उसको पढ़कर विशेष सूचनाके लिये वंश-भास्करको देखा तो बुद्धसिंह चरित्रके तीसरे और चौथे मयूखमें राव राजा बुधसिंहजीके उस विवाहका वृत्तान्त लिखा मिला जो सम्वत् १७५८ में राना जयसिंहजीकी राजकुमारीसे हुआ था और इससे प्राय: २ महीने पहिले ही राव राजा बुधसिंहजी बूंदीके राज सिंहासन पर बैठे थे परन्तु इसमें प्रतापसहायके राना राजसिंहसे रूठ-कर बुधसिंहजीके राज्यमें बूंदी आने और उनसे सन्मान पानेकी बात तो नहीं मिलती । बाकी घटनायें प्राय: मिल जाती हैं सम्भव है कि वे बुधसिंहजीके दादा भावसिंहजीके समयमें उदयपुरसे बूंदी आये हों क्योंकि मेवाड़के इतिहाससे राना राजसिंहके कंवर सुलतान सिंह और सरदारसिंहके मारे जानेकी घटना सम्वत् १७१८ के पहलेकी मालूम होती है और उस समय बूंदीमें राव राजा भाव-

सिंहजी राज करते थे जो सम्वत् १७०९ में गद्दीपर बैठे थे और सम्वत् १७३८ में उनके परलोक जानेपर अनिरुद्धसिंहजी राव राजा हुए। राना राजसिंहजी सम्वत् १७३७ में मरे थे और उनके पीछे जयसिंहजी राना हुए थे इस लेखे राव राजा बुधसिंहजी राना राजसिंहजीके समकालीन नहीं थे पर इसमें भी सन्देह नहीं है कि प्रताप सहाय दोनों ही राजदर्बारोंमें प्रतिष्ठित थे क्योंकि बुधसिंह चरित्रमें लिखा है "कि जब बुधसिंहजी बरात सजने लगे तो सब कवियों और पण्डितोंको साथ चलनेका हुक्म दिया तब रावप्रतापने प्रार्थना की कि मुझको मत ले चलिये मैंने रानाजीके राजका अन्न-जल लेना छोड़दिया है।"

"यह कवि कुलपति भाटके वंशका था और राना राजसिंहके समयमें उदयपुर गया था। रानाका मन्त्री हीरदास था। उसने बड़े राजकुमारको झूठा कलंक लगाकर रानाके हाथसे मरवा डाला था तब उसका छोटा भाई सरदारसिंहजी जहर खाकर मर गया था। यह कवि उनको पढ़ाता था इसलिये रानाजीके राजका अन्नजल न ग्रहण करनेका प्रण करके बून्दीमें चला आया था।

राव राजा उसका यह प्रण निबाहनेके लिये बून्दीका अन्नजल साथ लेकर उसको बरातमें ले गये ब्याह होजानेके तीसरे दिन राजा जयसिंहजीने अपने पिताका दोष मिटानेके लिये प्रतापसहायको उसके डेरेपर जाकर मनालिया और पट्टा दे दिया।

मेवाड़के इतिहासमें सुरतानसिंह और सरदारसिंहके प्राण जानेकी घटनाका वर्णन इस प्रकारसे लिखा है कि सरदारसिंहकी माने अपने बेटेको राज दिलानेके लिये राना राजसिंहको सुरतान-सिंहकी तर्फसे बहकाया कि वह छिपकर १ रानीके पास जाया करता है और अपनी बात सच्ची करनेके लिये सुरतानसिंहकी १ कृत्रिम मूर्त्ति बनाई और उसे अपनी १ दासीके पीठपर चढ़ाकर दूरसे चांदनी रातमें रानाजीको दिखा दी कि इस तरहसे यह उस रानीके पास जाता है रानाजीने उसके कहनेका विश्वास करके तब तो कुछ निर्णय नहीं किया और तड़के ही सुरतानसिंहको अपने

हाथसे गुर्जमारकर मार डाला फिर सरदारसिंहकी मांने १ पुरोहि-तको जो रानाजीके पास रहता था रुक्का लिखकर भेजा कि मैंने सुरतानसिंहका तो पाप काट दिया है अब तुम रानाजीको जहर दे दो तो सरदारसिंह राना हो जावें पुरोहित वह रुक्का कटारीमें रखकर भूल गया उसका नोकर दयाल नामक १ बनिया था जिसने रातको अपनी सुसरालके गांव जातेहुए कटारी मांगी, तो पुरोहितजीने वही कटारी उसको दे दी उसने घर आकर खोली तो वह रुक्का मिला पढ़कर रानाजीको दे दिया रानाजीने उसी गुर्जसे पहले तो रानीको मारा और फिर पुरोहितको बुलाकर उसका सिर तोड़ दिया। सरदारसिंह यह हाल सुनते ही जहर खाकर सो गये और यह दोहा लिखकर सिराने छोड़ मरे।

दोहा।

पाणी पिंडतणह, पिंड जातां पाणी रहे।
चीतारसी घणाह, सुपना ज्युं सर्दारसी।

रानाजी पहिले भी ऐसे ही बारहट उदैभानको मार चुके थे इ चारो हत्याओंका पाप उतारनेके लिये उन्होंने पण्डितोंके कहनेसे बड़ा तालाब बनानेकी चेष्टा करके सम्वत् १७१८ में राजसमंद नींव रखी थी।

इन प्रमाणोंसे मतापसहायका उदयपुर छोड़कर बूंदीमें स १७१८ से पहिले ही आना सिद्ध होता है।

राव छत्रसाल।

ये बूंदी दरबारके पोलपात थे कविता अच्छी करते थे कवित्त इनके कवि राव गुलाबसिंहजीने भेजे थे।

कवित्त।

सहज सिकार असवार हैं अभंगी वीर।
सूरनको संग लैन खंगी घेरियतु है॥
भाजिके बचै न गिरिकन्दर महान वीची।
सिन्धु रहतेयनकों मारि गेरियतु है॥

कहै हरलाल गंग रचन खिनाय कर ।
बैठो कैलासकों महेस टेरियतु है ॥
सिंहनको गाहन रच्यो है रामसिंह ।
तातें वाहनके कारन भवानी हेरियतु है ॥१॥
सम्भर नरेश विसनेस सुतरामसिंह ।
चढ़िकै सिकार वन विकट उजारमें ॥
घेरि घेरि ताहरतें वाहर निकारे सिंह ।
जाहर भयेसो मारि डारे इकवारमें ॥
कहै हरलाल उमावोलदै परीक्षा करि ।
चाहियों न अजहू दिगम्बर अपारमें ॥
काढिरे विश्वंभर पुरानो खाल कम्बरको ।
अंबर ज्यौं हो गये बघम्बर बजारमें ॥२॥
सहज सिकार ऐसी पढ़त अपार सेन ।
राम अवतार जिमि राम सदा भावरे ॥
दुखित धरनि गिरि कुप्यत खुरन होते ।
सुकृत करित पति तरनि उपायरे ॥
कमठी कमठ पीठि भिचगे फनीके फना ।
लचकी वराह डाढ़ भई गम नावरे ॥
डंका सुनि बंका भूत ढंका सुख भंका नाहीं ।
संका मानि लंकालौं अतंका होत रावरे ॥३॥
बावन खरार साढ़ मालवो सिवारधर ।
हाडोतीश फार घौंटु डारजद घासलौं ॥
मागे दौर लार ताको कीनो सतकार खूब ।
दखमखारको लुटाये बिन नावलौं ॥
कहै हरलाल जमराजके हटाये जोर ।
नरके वढ़ाये तौरदेवनके वासलौं ॥
त्रेता रामचन्द्रनै अजोध्या ही उधारी राम ।
कलिमें उधारे देवकूंही आसपासलौं ॥४॥

छप्पय।

हयन खुरन धरधमत धुरि उड़ि लगत सुअम्बर।
छपत भान शशि नखत देव मग लखत सुअम्बर॥
बहत नीर थकत खलत सरितपति जलकुल्लत।
सगर सब्ब खलभलत डगर दूक डुल्लत सुक्कत॥
तहं परतपंथ गजरथ हंकत सुनत लंक आतंक हुव।
विशनेश नन्दरामेश नृपज दिन क्रोध करि चढ़त धुव॥५॥
चलतसेन चतुरंग जंग जीतन अनभंगह।
मिलत भूप जुरिपाति आन मानत दल पंगह॥
भुलत भान अरि आन डुलत तजि थान असानव।
सुनि आतंक खलभलयदेव गंधर्व पर दानव॥
कलस लिय शेष करकय कमठहल तमेरु गिरिलंक धुव।
विशनेश नन्दरामेश नृप अदिन क्रोध करि चढ़त धुव॥६॥

रामनाथजी।

ये राव हरलालाजी के बेटे थे ये भी कविता करते थे इनकी जागीरका गांव बालापुरा अब इनके पुत्र ईश्वरजी हैं। यह कवित्त रामनाथजीका कवि राव गुलाबसिंहजीने भेजा

कवित्त।

केतेही दिनाकी हुई आपदे मनाकी जान।
नृपति घनाकी औ बनाकी छाड हो तैं वास॥
लागा थो तनाकी बांह कर नयनाकी सम।
हाटकपनाकी जना जनाकी विसारि धाम॥
विशन दिवान सुत तोसौं हित काको पाको।
दस हूं दिशाकी औ प्रभाकी पुंज आठौं जाम॥
भाषी कवि सोधिकै दुनीपै राव राखी करि।
राखी वसुधाकी किर्त्ति राखी राजाराम॥१॥

कविराव गुलाबसिंहजी।

बून्दी दरबारके कवि राव गुलाबसिंहजी महताबसिंहजीके बेटे रामजीके पोते हैं सेठ रामजीको मलारके राव राजा व

सिंहजीने सुकविकी पदवी दी थी गुलाबसिंहजी भादो सुदी ५ सम्वत् १८८७ को जन्मे और ५ बरसकी उमरमें भाषाकाव्य और सारस्वत-चन्द्रिका कण्ठस्थल करके अलवरमें गये। वहां पूरणमलजीसे संस्कृतके ग्रन्थ भाषा सहित पढ़े फिर पण्डित जगन्नाथजीसे कुवलियानन्द और काव्यप्रकाशादि देखकर साहित्य विद्यामें निपुण हो गये। अलवर महाराज शिवदानसिंहजी इनकी योग्यता देखकर जीविका देनेके विचारमें थे कि एजन्टी हो जानेसे अधिकार-हीन होकर कुछ न दे सके तब कवि रावजी उनकी सलाहसे सम्वत् १९३८ में करौली जाकर वहांके राजा जयसिंहपालजीसे मिले और १० रोज रहकर बून्दी आये। वहांके महाराव राजा रामसिंहजी संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश पिङ्गलादी भाषाओंके जाननेवाले थे, उन्होंने कवि रावजीकी काव्य कुशलतासे प्रसन्न होकर उनको अपने पास रख लिया और २ गांव देकर सालग्रहके उत्सवमें जरी हुई बहुत लागतकी पोशाक और ५००) का दुशाला ताजीम हाथी और सरपेच बखशा और हाथी पर चढ़ाकर बड़े जलूससे घर पहुंचाया फिर महाराव राजा रघुबीरसिंहजीने सम्वत् १९४६ में सोनेका कड़ा पावोंमें पहिननेको इनायत फरमाया जो राजपूतानेमें बड़ी इज्जतकी बात है।

कवि राव साहिब राजका काम भी करते हैं बूंदी ष्टेटकौनसल और वालटर कृत राजपुत्रहितकारणी सभाके मेम्बर और महकमें रजिष्ट्रीके हाकिम भी हैं।

शील स्वभाव मिलनसारी कवि रावजीकी बहुत अच्छी है मुझसे बहुत दिनोंकी मुलाकात है कई दफे अपनी बनाई हुई कितावें कृपाकरके भेज चुके हैं।

कविरावजीकी कविता उत्तमतामें प्राचीन कवियोंसे मिलती हुई है और वे जैसे स्वयं कवि हैं वैसे ही कवि-विदोंकी कदर भी करते हैं हिन्दुस्थानके बहुधा कवि समाजोंको आपसे बड़ी सहायता मिलती है। रसिक कविसभा कानपूरने आपको साहित्यभूषणकी पदवी दी है।

आप अबतक इतने ग्रन्थ रच चुके हैं और इन ग्रन्थोंने कविस-माजमें बड़े आदर और सतकारको जगह पाई है ।

रुद्राष्टक १ रामाष्टक २ गंगाष्टक ३ शारदाष्टक ४ बालाष्टक ५ पावपच्चीसी ६ मनपच्चीसी ७ रसपच्चीसी ८ समस्यापच्चीसी ९ गुलाब-कोश काण्डचार १० नामचन्द्रिका ११ नामसिंधुकोश भागचार १२ व्यङ्गार्थचन्द्रिका १३ बृहदव्यङ्गार्थचन्द्रिका १४ भूषणचन्द्रिका १५ ललितकौमुदी १६ नीतिसिन्धु खण्डचयार १७ नीतिमञ्जरी १८ नीति-चन्द्र भाग दो १९ काव्यनियम २० वनिताभूषण २१ बृहद्वनिताभूषण २२ चिन्तातन्त्र २३ मूर्खशतक २४ ध्यानरूपसवतिकाबद्ध कृष्णच-रित्र २५ आदित्यहृदय २६ कृष्णलीला २७ रामलीला २८ सुलोच-नालीला २९ विभीषणलीला ३० दुर्गास्तुति ३१ लक्ष्मणकौमुदी ३२ कृष्णचरित्रमें गौलोक खण्ड, वृन्दावनखण्ड, मथुरा खण्ड, द्वारका खण्ड, विज्ञान खण्ड ३३ कृष्णचरित्र सूची ३४ ।

अब कविरावजीकी कुछ कविता इन ग्रन्थोंमेंसे लिखी जाती है ।

ललितकौमुदी उदाहरणके कवित्त ।

शोभामैं निशाकरसो तेजमैं दिवाकरसो,
दानमैं रमावरसो कीरतिको धाम है ।
रूपमें मनोजसो अलिसमैं सरोज सोहै,
भोज काव्य मौज मांहि चोजहीसौं काम है ॥
सुकवि गुलाब कहै ज्ञानमैं जनक सोहै,
वनक सरीरको सुरेशसो नमाम है ।
वैरिनमैं विम राम नीति मांहि जदुराम,
बूंदीनाथ राजाराम शील मांहि राम है ॥१७॥
पूरन गंभीर धीर बहु बाहिनीको पति,
धारत रतन महा राखत ममान है ।
लखि द्विजराज करै हरष अपार मन,
पानिप विपुल अति दानी छमावान है ॥
सुकवि गुलाब शरनागत अभयकारी,
हरि उरधारी उपकारी हू महान है ।

वत्तावन्ध शैलपत साहु कवि कोल भानु,
रामसिंह भूतलेन्द्र सागर समान है ॥१८॥
करन समान मन पारथसो पूरो पन,
कानसो अनूपतन मथुसो प्रथीकोवर ॥
बलिसो विचार उपकार कर विक्रमसो,
हरिसो हुस्यारकार हरसो दयाको घर ॥
सुकवि गुलाब रणधीर रघुबीरसिंह,
सिन्धुसो गंभीर द्विजदीन उर पीरहर ।
परम प्रतापो अरि तापी निज हुक्म थापी,
सुज्जनउथापी जुवराज सुत राम कर ॥२५॥

छएदण्ड्यचन्द्रिकाके कवित्त ।

शोभाको सदन तन मर्दन मदन मान,
परम उदार सनद्विज दुख टारनौ ।
ज्ञानी क्रूर दूरसो क्रसाकर उजागर है,
गुनरिझ वारदीम दारिद विदारनौ ॥
सुकवि गुलाब शील सागर क्रयाको धाम,
जाचक न धाम गज ग्राम धन धारनौ ।
रामसिंह नन्द कुलचन्द रघुवीरसिंह,
अक्करको सिंह अरि सिंहमद मारनौं ॥१२॥

प्रादुर्भूत अनंगाके कवित्त ।

मदन दुलारीसी कुमारीसी कलानिधिकी,
अधिकी लुनाई भरी विधिकी घरीन है ।
कामको कलासी कमलासी विमलासी लसै,
हँसै हरषाय शिर धरै गगरीन है ॥
सुकवि गुलाब रचि जाके तट आवछाई,
फिरत लुभाईसी सुहाई अहिरीन है ।
मेरे जानि नीर मिस आई गिरजाई यह,
छिम्रती नरीन ऐसी आतुरी तुरीन है ॥१२०॥

काव्य लिंगको कवित्त ।

चक्र हरि हाथमांहि गङ्ग शिव माथमांहि,
छत्र नर नाथनके साथ सनमानसैं ।
कुन्द वृन्द बागनसैं नागराज नागनसैं,
पङ्कज तड़ागनसैं फटिक पषानसैं ॥
सुकवि गुलाब हेर्‌यौ हास्य हरिनाक्षिनसैं,
हीरा बहुखानिनसैं हिम हिमथानसैं ।
राम जस रावरौ गुमान करै कौन हेतु,
याकी सम देखौ लखै चन्द असमानसैं ॥५२॥
बन्धु विज अग्रजको प्रभुपङ्क पूतनको,
सन्तत तुसारनको समत मै सोर है ।
सिंहनको कलपवृक्ष वादी बुध वृन्दनको,
सैंधव गयन्दनको सोदर अमोदर है ॥
सुकवि गुलाब नारि हारनको मीत महा,
सन्तनके मनहीको वैरी अति जोर है ।
सत्य व्रतधारी महिपाल रामसिंह लखौ,
रावरौ सुयश चोर चन्दनको चोर है ॥५३॥

[illegible] नियम कवित्त ।

शंकरमै कुपताई छलताई विष्णु मांझ,
अजसै अगस्यताई दोषकै परेख्यौ मैं ।
भानुमै चपलताई शशिमैं कलङ्कताई,
अति कृपनाई जुत राज राज लेख्यौ मैं ॥
सुकवि गुलाब गणनायकमैं स्थूलताई,
इन्द्रमै अधीरताई अङ्क रङ्क पेख्यौ मैं ।
नन्द विसनेशके प्रतापी रामसिंह तेरी,
समता न पावती विचार करि देख्यौ मैं ॥५४॥

[illegible] ॥८०॥ कवित्त ।

मृगसे सरोसदार खञ्जनसे दौरदार,
खञ्जन चकोरनके चित्त चोर याके हैं ।

मीनन सलोनकारे जलज लद्दौनकारे,
भंवर नखोनकारे असित प्रभाके हैं ॥
सुकवि गुलाबकंत चिक्कन विशाललाल,
श्याम के सनेह सुने अति मद छाके हैं।
वरुनी विशेषधरें तिरछी चितौनि वारे,
सैन बानहूतें पैने नैन राधिकाके हैं ॥२८९॥

चरण कवित्त।

मृदुता लुनाई माहि पल्लव कतल करै,
शुचि शुभ तानें करे कमल निकाम हैं।
लालोनै लटाय दियो लालन प्रवालनको,
सुख माने सोखे यल कमल तमाम हैं॥
सुकवि गुलाब तोसी तूही है त्रिलोकी माहि
सुमरत तोहि घनश्याम आठौं जाम हैं।
कीरति किशोरी तेरी समता करै को आन,
चरण कमल तेरे कमलाके धाम हैं॥३३८॥

आद्यन्तोपमा कवित्त।

पदकर पल्लवसे केलिसे जुगल जंघ।
पुलिन नितम्बकटिके हरिसी खीन है॥
पानसो उदर कुच कुम्भसे लतासी भुज।
कंबुकंठ बिंबाधरसशि पतलीन है॥
मुकुर कपलनासा शुक नैन खञ्जनसे।
भृकुटी कमान सुख आनैश शिहीन है॥
जैसी वृषभानुकी कुमारी सुकुमारी तैसी।
आसुरी सुरीन नरी किन्नरी नगीन है॥२३३॥

मुग्धा विप्रलब्धा सवैया।

मोहन मोहिनि बाल वधू समरी समसांच ढलोसी।
सांझियली निकसी न गुलाब चली सुगलीन अलीन छलीसी।
धामथली वनवातदली पहुंची हठि कुञ्जन माल मलीसी॥
सुञ्ज तहां पिय पुञ्जनको सुनि सूकिगई कलकंज कलीसी॥३७३॥

अथ विप्रलब्धा सवैया।

सेज निहारि सुकै विलजात भई अहिनी कबरी कबरीसी।
अङ्ग अगैछवि छीनलगै सुरनाग सुता सबरी सबरीसी॥
जो सखियां संगलै घरतें निकसी करिकै जबरी जबरीसी।
देखि भलो रंगभौन कहो कब हौंन लगी अबरी अबरीसी॥३४४॥

पावसपच्चीसीसे कवित्त।

छैहैं बकमण्डली उमड़ि नभ मण्डलमें।
जुगुनु घुमण्डि ब्रजनारिनजरैहैंरी॥
दादुर मयूर झींगेझींगर मचैहैं सोर।
दौरि दौरि दामिनी दिसान दुःखदैहैंरी॥
सुकवि गुलाब ह्वैहैं किरचैकरेजनकी।
चौंकि चौंकि चौपनसों चातक चिचैहैंरी॥
हंसनलैहंस उड़िजैहैं ऋतु पावसमें।
ऐहैं घनश्याम घनश्याम जोन ऐहैंरी॥१॥
आवै ना मुरारि तौलों दरजि दखीनकौंरी।
दरबतवारिमें किवार आनि खोलैना॥
चंचला चलाकै चित्तचौंथै ना चहूंघा दौरि।
घोरि घन वैरीघेलगालाय डोलैना॥
सुकवि गुलाब टारिसल बकजालनकी।
सुरवा विडारिदै पुकारि उरको लैना॥
मारि मारि दादुर निकारि दूरदेशनतें।
चूंचन उपारि ज्यौं पपीहा पीव बोलैना॥
मोरि मोरि मनकौं मचावो मति मोर सोर,
झूमि झूमि झींगर झिंगारि झकझोरैना।
जोरि जोरि जुगनू जग तें जो जमावो जोर,
चौंकि चौंकि चातक चिचाय चैन चोरैना॥
सुकवि गुलाब ऐहैं भोर ही हमारे नाथ,
दौरि दौरि दामिनी दवाय तन तोरैना।
घोरि घोरि उरमैं विदारे वीर नीर दानि,
डारि डारि गारि मोहि वैर बांधि वोरैना॥

प्रेमपच्चीसी सवैया।

दाजन दै दुर जीवनको अरु लाजन दे सजनी कलवारे।
बाजन है सबको नवनेस निवाजन दै मनमोहन प्यारे॥
गाजन दै न नदी न गुलाब विराज दै उरमैं गुन भारे।
भाजन दै गुरु लोगनको डर बाजन दै अब नेह नगारे॥

साहित्यभूषण श्रीकवि रावजीने हमको इस ग्रंथके बनानेमें बड़ी सहायता दी थी। इसके खर्डोंको देखकर शुद्ध करनेकी भी कृपा की थी, जिसका धन्यवाद देनेमें हम सर्वथा असमर्थ हैं।

संवत १९५८ में हम ग्रंथको फिरसे घटा बढ़ाकर उसकी दूसरी प्रतिकवि रावजीके पास भेजनेके वास्ते तैयार कर रहे थे कि अकस्मात् यह ब्रजपात हुआ कि जेठ सुदी ८ को कुवर रामनाथसिंहजीका पत्र कवि रावजीके वैकुंठवासी हो जानेका आया जिसमें क्या कहूं मुझको कैसा दुखी किया मानो दीन पक्ष बहीन पक्षीको अथाह शोकसाग-रमें डाल दिया।

कवि रावजीका ध्यान अंत समयतक भगवतचर्णोंमें रहा जो भक्तोंको भी दुर्लभ होता है। उनकी मृत्यु संतपुरुषोंकीसी हुई और वे सत्पुरुष ही थे उनके ग्रंथोंसे भी यह बात भलीभांति भासती है।

हम उस पत्रको इतिहास, भक्ति भाव और प्रेमशिक्षामें उप-योगी समझकर यहां भी नकल करते हैं जो इस ग्रंथके पाठकोंको भी शिक्षाप्रद होगा।

सिद्धि श्रीसर्वोपमा विराजमान सज्जन शिरोमणि परम मित्र मुंशीजी श्रीदेवीप्रसादजी योग्य लिखायतं बुंदीसैं राव रामनाथसिंह चिरंजीवी माधवसिंहके नजयैश्री जीकी बंचियोजी। अपरंच यहांसे विधाता ऐसो वाम भयो कि ताकी कथा अकथनीय है सो या है—जेठ सुदि ३ सोमवारकों दोपहरां पीछै जेठ बदि १४ को लिख्यो हुयो आपको पत्र पहुंच्यो तब साहित्यभूषण कविरत्न राउयश्री दादाजी साहिब श्री ५ दादाजी राव गुलाबसिंहजीकै महाभयंकर ज्वर चढ़ि रह्यो हो तासौं चेत कम हो आपके पत्र आनेकी आपसौं मालूम करी तब मोसौं फरमाई अब ऐसे परोपकारी सुजन पत्र द्वारा मित्रनसौं वीपत्र द्वारा मुलाकात करि वाको भी हमकौं अवकाश नहीं है यौं फरमायकै नयन मूंदिके

श्रीकृष्णचन्द्रके ध्यानमें निमग्न हो गये फेरि वाही दिन च्यारि घड़ी रात गयांके अनुमान इस असार संसारकों त्यागिकै आप गोलोक निवासी भये । ई असह्य दुःखको हाल लिखवा मैं आवै नहीं लुकतो जेठ सुदि १४ शनिवारकों होयगो तौंपै कृपा करि पधारैं ॥

इस सूक्ष्म वृत्तान्तसे पाठकोंको विदित होगा कि कविरावजी कैसे उदारचित्त प्रेमी और परोपकारी थे । उनके घरमें बाहर और भीतर विद्याका प्रचार रात दिन रहता था । बाहर विद्यार्थी लिखते पढ़ते थे और भीतर चन्द्रकला बाई जैसी दासी पुत्रियां काव्य रचना किया करती थीं ।

कविरावजीके शिष्यों और विद्यार्थियोंकी संख्या तो बड़ी है पर यहां मुख्य मुख्यके नाम लिखे जाते हैं ।

अलवरमें—१ किशनपुरेके चौहान ठाकुर विड़दसिंहजी २ ईश्व-रीसिंहजी ३ धंवालाके ठाकुर नरूका हनवन्तसिंहजी ।

बूंदीमें—१ चौबे जगन्नाथजी आदि ।

कविराव रामनाथजी ।

ये कवि राव गुलाबसिंहजीके भतीजे हैं । कविरावजीके सन्तान न हुई जिससे इनको गोद लिया है । ये भी सिद्धान्त कौमुदी तक संस्कृत पढ़े हैं और भाषाके बहुत ग्रन्थ देख चुके हैं कविता भी अच्छी करते हैं कवि रावजीके पीछे यही उत्तराधिकारी हैं दरबारकी कृपा तो इनपर भी वैसी ही है जैसी कि कविरावजीपर थी । परन्तु सुना है कि राजके कर्म्मचारियोंने जागीरमें कुछ बाधा डाल दी है इन्होंने समस्या सार, सतीचरित्र, रामनीति, नीतिसार, रामशतक, परमेश्वराष्टक, गणेशाष्टक, सूर्य्याष्टक, दुर्गाष्टक, शिवाष्टक, नीतिशतक अबतक ये ११ ग्रन्थ बनाये है जिनमेंसे यह कुछ कविता उनकी लिखी जाती है ।

समस्या सारसे सवैया ।

होत प्रभात विवेकिनकों बुलवाय कहै धृतराष्ट्र सुबैना ।
कालिह भली विधिसों सुख संजुत सोवत बीति गई सब रैना ॥
पै पिछले कछुक तरके अस स्वप्न भयो कस है फल दैना ।
सोचि विचारि कहौ मुनिनायक कज्ज लखे नभमैं बिन नैना ॥१॥

प्रश्न कह्यो तिय कछु खिलैं कबको सब कारक हारक होई ।
कौ निसि देखि सदा दुख पात बतावहु जो बरजी सब कोई ॥
कौन कहा जननी बन जावत लक्ष्मण राम सियाहि बिजोई ।
उत्तर दीन सुजान पिया हंसि प्रात बसै चकई अति रोई ॥२॥

उपमानते समस्या पूर्त्ति ।

दोहा ।

विमल कलानिधि करधरा, तारा तेज बिलास ।
बसैनीलांबर धारिनी, जामिनि कामिनि भास ॥१२७॥
प्रफुलित सुमना गुणवती, मोतिवती अलि मांहि ।
सुरसा माला मोदकी, बाला माला आहि ॥१२८

मिथ्यातें समस्या पूर्त्ति ।

सवैया ।

सिंहन त्यागि दियो पल भोजन बालकके बलनैं गजटार्यो ,
सागर जंतु तृष्णातुर नाशत वात प्रवाह हराचल हाल्यो ।
बैठि रह्यो थिर होय प्रभंजन दीप शिखा कनकाचल गाल्यो ,
है यह मिथ्या बात कहै कोऊ पूरबकौं रविस्यंदन चाल्यो ॥ १३०

गणेशाष्टक ॥ छप्पय ।

वंदन चर्चितभाल पाश अंकुशकर राजत ।
विघन विनाशन नाथ पुष्प माला गल भ्राजत ॥
गौरिनंद जगवंद्य भक्तजन आरति नाशन ।
रामनाथ कवि कहतु दुरितगन हरनैगजानन ॥
अणिमादि सिद्धि दायक अखिल खल घालक मंगल करन ।
मद मोह हरन दारिद दरन जय जय लंबोदर चरन ॥ १ ”

सूर्य्याष्टक छप्पय ।

कनक बरन समरंग भक्तजन पाप निवारन ।
तारा शशि दुतिछीन करनशतपत्र विकाशन ॥
विविधि व्याधि अरि हरन कोकमुदकरन हरित हय ।
कश्यप सुत आदित्य कुमुद दुःखकर पावनपय ॥
अति चण्ड किरन सारथि अरुन सरनागत आरति हरन ।
कुमन दपत दिनपति लोकपति जय जय जग मङ्गल करन ।।४।।

दुर्गाष्टक छप्पय।

रक्तबीज बध करनि शुंभ निशुंभ बिनाशिनी।
महिषासुर दल दलनि शंभु अर्द्धांगनि वासिनि॥
रामनाथ कवि कहत चण्ड मुण्डहि मदगंजनि।
धरि त्रिशूल असि चाप चर्म खल प्रबल विभञ्जनि॥
मधु दैत्य दमनि कैटभ शमनि रणजयदा माहेश्वरी।
जनदुःखहरनि सम्पति करनि जयति जयति राजेश्वरी॥१॥

परमेश्वराष्टक छप्पय।

मीन होय जिहिं बेद लेत शंखासुर माखौ।
कमठरूप धरि सिन्धु मथत मन्दरगिरि धाखौ॥
धरि नरहरि अवतार कनकश्यप वपु फाखौ।
परशुराम ह्वै वंश अखिल क्षत्रिनको गाखौ॥
बनि राम कृष्ण रावन हन्यौ कंस पछाखौ कोह करि।
तिहिं नमस्कार जनको धरम राखत नाना देह धरि॥१॥

शिवाष्टक॥ छप्पय॥

भस्म अंग शशिभाल कंठ विष अजगवधारी।
मुंडमाल खल कालकाल गजधर गिरिचारी॥
सीस गंग अहि संग वरद बाहन अविनासी।
रामनाथ सुखरासि विषम समशान निवासी॥
त्रिपुरारि असुर सुर पुज्य हर शशि दिनकर पावक नयन।
जनपाल प्रलय कर जगतपति नमो नमो मर्दन मयन॥१॥

राजनीति दोहा।

मीतिरु वैर विचारिकर, उपकारहु अपकार।
करै अन्यथा जुगल तौ, होय अनर्थ अपार॥१॥
कोकिल हंस मयूर, शुक, टारत मानि अनीक।
गीध काक बक आदरैं, तंह निशिबास न नीक॥२॥

नीतिसार दोहा।

आयु मंत्र गृहछिद्र पुनि, मैथुन भेषजवित्त।
दान मान अपमान नव, राखै गुप्त सुचित्त॥१॥

मृगया चौपरि मद्य नहिं, भूपनकौं हितकार।
पांडुनकुल यादव भये, इनतैं दुखी अपार ॥२॥

नीतिग्रकाल दोहा।

विद्या धन है श्रेष्ठतर, तिंहिं संग हैं धन आन।
भार करै न चुरै खुसै, बांटे बढ़ै निदान ॥१॥
तप विद्या धन लाभ अरु, दान शूरता मांहि।
भयो जासु जस ख्यात नहिं, सो जननी मलग्राहि ॥२॥

सती चरित्र ॥ दोहा ॥

मोर मुकुट मुरली लकुट, पीतांबर बनमाल ॥
कालिन्दीधर काली दमन, कृपा करौ नंदलाल ॥ १ ॥

फुटकर कवित्त।

मनोहरम।

सूरजसो तपमांहि रूपमें मनोभवसो,
गुरुसो उपज मांझ धनमें धनेशसो।
सिंधुसो गंभीरतामैं विधिसो सुजानतामैं,
गुनमें गनेश सोहै वैभव सुरेशसो ॥
कहे कवि रामनाथ शोभामैं निशाकरसो,
थिरतामैं शेषसो है रीझमैं महेशसो।
बूंदीनाथ परम प्रतापी रामसिंह भूप,
दानमैं सुरद्रुमसो शीलमैं रमेशसो ॥१॥
चंदन वलित अति मंडित बिचित्र भाल,
तमके समूह सम भ्रात गिरिराजके।
मद जल झरत चलत लचकत भूमि,
पर दल मिलत सुनत गल गाजके ॥
कहे रामनाथ भननात भौंर च्यारयौं ओर।
लखि अभिलाष होत मन सुरराजके ॥
कज्जलतैं कारे बलवारे दिग दंतिनतैं।
उन्नत दतारे भारे गज रामराजके ॥२॥

सवैया।

गाहक है गुनको उपहारको वाहक वैरिन शीश दुधारो।
कञ्जनाल समान सुशोभन है खल क्षोभन पन्नगकारो॥
दीननको कलपद्रुम है शरनागत हेत अभै ध्वज भारो।
हिन्दकी हद्दको राखनहार है राम महीपति पानि तिहारो॥३॥

मनोहरम्।

कवित्त।

वैननमैं गुरुसी सुरेश प्रजपालनमैं,
धरमधुरीन धीर राम उर आन्यौंमैं।
गञ्जन गनीमनको रञ्जन गुनीगनको,
भञ्जन दुनी दुख विक्रम पिछान्योंमैं॥
कोविद सरोजनकौं उष्ण भानु रामनाथ,
कवि गनकै रवकौं शीत भानु मान्यौंमैं।
बूंदीनाथ अधिक उदार रघुवीरसिंह,
देन मन वांछितमैं कल्प वृक्ष जान्यौं मैं॥४॥

छप्पय।

जब लगि हिमकर गङ्ग ईश शिर शेष धरनि धर,
जब लगि गिरिजा गिरिश गिरागणनाथ दिवाकर॥
जब लगि हरि गुन कथन पापहारकमहि मण्डल।
जब लगि करत प्रकाश नषत जुत शशि नभ मण्डल॥
कवि रामनाथ नृप मुकुटमनि रामसिंह सुत मति अमल।
रघुवीरसिंह पालक अखिल राज्य करहु तब लगि अचल॥५॥

मनोहरम्।

कवित्त।

द्रुपद सुताकी राखी लाजहि बधाय चीर,
धारि गिरि राख्यो गाय गोपकुल सारो है।
उदर अघासुरतैं ग्वालन बचाये जिहिं,
कालीनाग नथि हयो विषको पसारो है॥
रामनाथ गोपबाल गोपिनको प्रान प्यारो,

आनन्दको कन्द नन्द जसुदा दुलारो है।
मुरली लकुट बनमाल पट पीतधर,
मोर पखवारो रखवारोसो हमारो है॥६॥
चरन करन पर जलज ग्रलजवारौं,
तारा रवि नखकी अतोल झलकनपै।
बाहुनपै करीकर अहि अरगल वारौं,
वारौं मीन कुण्डल सुडोल ढलकनपै॥
रामनाथ ओठनपै पल्लव प्रबाल वारौं,
मुकुर मधूकतौं कपोल झलकनपै।
वारौं अहिबाल अलिमाल श्याम घन जाल,
बांकुरे बिहारीकी अमोल अलकनपै॥७॥
जमुनाके तीर नीर भरन गई ही तहां,
तुमहि निहारि लगे नैन हित बोरीके।
तलफत तबहीतें चूके जल सफरीलौं,
ज्वरमें जरत गात बैस अति थोरीके।
रामनाथ हाल चलि ताहु हाल लाल लखौ,
न तु पछितैहौ चलि जैहें प्रान भोरीके।
चैन है न रैन दिन पलहू परै न कल,
छिनहू लगैं न नैन नवलकिशोरीके॥८॥
ऐरी वृषभानुकी कुमारी सुकुमारी तेरी,
दीठि अनियारीनैं दबायो दिल दौरिकै।
हांसी हरखाय मुलकाय बरबैननसैं,
बसमैं बनाय ताहि नासानैक मोरिकै॥
रामनाथ कीनौं कछु टोनासो भ्रमाय भौंह,
लीनौं मोलि मोर वारो बेसरिसैं जोरिकै।
नन्दके कुमार वृन्दा बिपिन विहारी पर,
जुलम करौ न जाल जुलफन छोरिकै॥९॥
सावन सघन घन छावैं चहुं ओर घोरि,
आवैं ना प्रवेश भानु भानु अंधियारसैं।
निकसि सकै न जीव कोऊ निज आलयसैं,

अन्तर परै न पल वारिलकी धारमैं ॥
रामनाथ मानस विचारे बिरही जनकौ,
छिन छिन छीन होत छिन भा वियारमैं।
ब्याकुल रहत कोक कोकी निशि जानि नित्य,
दिन नहिं जानि परै पावस पसारमैं ॥१०॥
सुनिके सघन घन घोर चहुं ओरनतैं,
चातक चकोर बक अमित हुलासी हैं।
प्रगटे अनेक जीव शस्य परिपूर खेत,
केतकि कदम्ब कुन्द फूले सुख रासी हैं ॥
केकिनकी बानी मन मोहै अति रामनाथ,
सबठां बरखि वारि तपन बिनासी है।
करत विशेष दूर प्राणिनकी प्यास यह,
बरषा वियोगिनके प्राणनकी प्यासी है ॥११॥

कवि कुमार माधोसिंहजी।

ये होनहार कवि कुमार कवि राव रामनाथसिंहजीके सुयोग्य पुत्र हैं। इन्होंने अपने घरकी विद्याके सिवाय फारसीमें भी अच्छा अभ्यास कर लिया है। हिन्दी कविता भी अच्छी करते हैं। इनमेंसे ये १२ कवित्त यहां लिखे जाते हैं।

सवैया।

आनन चंद समान लसै कटिके हरिकी कटिसी छबी छाई।
नाक सुवासम खञ्जनसे दृग भौंह कमान समान सुहाई ॥
माधवसिंह लसैं कुच कुम्भ सुचाल गयंदन देत दबाई।
सो मनमांहि बसी निशिबासर रूप उजागरि कीर्त्ति जाई ॥१॥
तीरथ जा असनान करौ अरु दान करौ सबठां सुखदाई।
सन्तनको सनमान करोरु करौ गुनबाननसौं हितवाई ॥
माधव माधव राघव राम मुकुन्द गुपाल रटौ मन लाई।
है अतिही बर बात यहै जगमैं सबसैं करि लेहु भलाई ॥२॥

कवित्त।

लोभमें लिपत मतिहीन नर भूलि रहे।
जानैं नाहीं कोऊ ठाम जानेकी न जानेकी ॥

हरि गुन त्यागि लोग जगके जञ्जार गावैं।
यों न लखैं याहै बात गानेकी न गानेकी॥
माधव भण्डार भरैं लाय बहुभांति भूति।
मनमैं विचारैं नाहिं लानेकी न लानेकी।
खात मनमानी वस्तु बश रसनाके होय॥
यों न जानैं याहै चीज खानेकी न खानेकी॥३॥
बागनमैं विमल बनाय कोट चयारौं ओर।
रौंस रचवायकै सुधारैं ढंग तिनके॥
तिनमैं अपार तरु वेलि जमवाय चारु।
नानाभांति चारी चित चोरैं नाहिं किनके॥
माधव मदांध सुत मित्रादिक संगलेय।
देखैं फल फूल रङ्ग रङ्गनके तिनके॥
मोह बश होय लोय तजि घनश्याम सेव।
राति दिन देखैं ये तमासे चयार दिनके॥४॥
होयके कराल इन्द्र ब्रजहि बहान लाग्यो।
गिरिनखधारि गोप गोपिन उबारे हैं॥
हाथी गह्यो ग्राहनैं तबैहू खगराज त्यागि।
भागिकै पयादे बेग ताके दुःख टारे हैं॥
माधव दुशासनसैं द्रौपदी बचाय लीनी।
उदर अघासुरसैं बालक निकारे हैं॥
पालक चराचरके नन्द मनभावननैं।
होयकै कृपाल काम कौनके नसारे हैं॥५॥
तेरे कहैं आली आज पीके पास चलिहौंमैं।
तेरे पास बैठिहौं मैं तेरे संग आऊंगी॥
रहिहौं चित्रीसीबार पीतमके पास मांहि।
तब ही गिनोसी बात हंसि बतराऊंगी॥
माधव सुकवि मनमोहनके मीठे बैंन,
सुनि सुनि नेहसने नांहि ललचाऊंगी।
लाख मनुहार करैं तेरेहू सिखायें पर,
छाकभांति अंग्नसैं अंग न लगाऊंगी॥६॥

सांझ ही सिधारे काल्हि बनक बनाय अङ्ग,
रवबस होय कहां रतियां बिताना है ।
जावकलिलारसैं लगायो पीक नैननसैं,
ओठनसैं अञ्जनकी दुति दरसानी है ॥
माधव कपोलनसैं दन्तनके घाव लगे,
छाती नखजातनकी तति सरसानी है ।
प्रात नित आवो तऊ नैंक सरमावो नांहि,
हंसि बतरावो यह कौंन रीति ठानी है ॥७॥

सवैया ।

भाल महावर लोचन लाल रङ्गी पल पीक मंझार लखाइये ।
ओठन अञ्जन गातन लच्छत सास बिना गुनकी उर पाइये ॥
माधव ताहि दुरावत हौ यह घाव लगा करि लौंन न लाइये ।
मैं कर जोरि करौं विनती यह मो घर मोहन प्रात न आइये ॥८॥
सासइतैं ननदी दिवरानि जिठानि रहैं छिगनैं कट रैंना ।
बैठि रहैं गुरु लोग सदा घरकै इकहू छिन पौरि परैना ॥
माधव मो पति मो सुख जोवत पास रहै कुलकानि करैंना ।
बाजत है वसुरी उतरी कसरी कहिये जिय धीर धरैना ॥९॥
दीखन बादर लाल लगे चरणायुध शोर भयो इकबार है ।
तारनकी दुति मन्द भई छवि चन्द मलीन भई इहिं बार है ॥
माधव आन दिनां असि प्रात भाई नहि सो कहि कौंन विचारो है ।
आंवहिंगे कि न आंवहिंगे सखि आज भई कछु तार कुतार है ॥१०॥
आय यहां मिथिलापतिकी दुहिता कह नाथ कहा करिहौ ।
है यह श्रीरघुनायककी वनिता इहितैं दुखसैं भरिहौ ॥
माधव वे करता हरता हरि हैं तिनसैं कह ना डरिहौ ।
जानि परी मुहि बात यहै बचिहौ न सही निहचै मरिहौ ॥११॥
दोष बन्यौं सियहारनको छुबिनै करिकै अपने शिरजे ।
त्यौं अब भूमि सुताहि अगै करि चालि वहां पदमैं शिर दीजे ॥
माधव हैं हरि दीनदयाल तिन्है लखि रूप सुधारस पीजे ।
सो मत मानि दशानन माफ कराय कसूर गरूर न कीजे ॥१२॥

चन्द्रकला बाई।

कवि राव गुलाबसिंहजीकी दासी पुत्री हैं तौभी कवि राव-जीके साहचर्य्यसे भाषा कवितामें प्रवीण होकर नवीन नवीन उक्ति-योंसे हिन्दुस्थानके प्रसिद्ध कवि सभायोंकी समस्याओंकी पूर्त्ति किया करती हैं, जिनके लिये इनको कई कवि सभाओंसे मानपत्र मिले हैं और ३० जून सन् १८८५ कौं गांव विसवां जिला सीतापुर अवधकी कविमण्डलीसे वसुंधरारत्नकी पदवी प्रदत्त हुई है।

करुणाशतक (१) रामचरित्र (२) पदवीप्रकाश (३) और महोत्सवप्रकाश ये (४) ग्रन्थ बाईजीके बनाये हुए हुवे हैं।

ये कुछ वर्त्तमान कवित्त उनके बनाये हैं।

वर्त्तमान कवित्त।

सागर धरमको उजागर प्रवीन महा,
परम उदार मन जन दुख टारनौं।
गुन रिझवार कविको विद निहालकार,
वैरी अदगार उपकार उर धारनौं॥
चन्दकला कहै रणधीर पर पीर टार,
जस विसतार कर जग सुख कारनौं।
मारवाड़नाथ सरदारसिंह शीलसिन्धु,
आनन्दको कन्द दीन दारिद विदारनौ॥१॥
बूंदीनाथ प्रबल प्रतापी रामसिंहजूकी,
तनया सुशील रनीपद दुखहारी है।
पति सरदारसिंह परम प्रवीन पाये,
गुनरिझवार तुव पूरे हितकारी है॥
चन्द्रकला सकल कलानमें निपुन आप,
मति मांहि शारदासीनीकै निरधारी है।
भाग अहि बात तेरो सदा ही अचल रहौ,
जौलौं शिव मस्तकपैं गंगा सुख कारी हैं॥२॥

सवैया।

पाल कहौ महिमण्डलको खल घालक वैरिनके शिर गाजो।
मोहन मूरति दीनदयाकर मित्रनके मनमाहि विराजो॥

चन्द्रकला सरदार महीपति नन्दतुम्हार महा छविछाजौ।
जौलगि है अहिपै महि तौ लगि राजकुमार महा सुख साजौ ॥३॥

चौपाई।

जबलगि महि रह अहिपति शीशा॥
गंगहि शिरपर रखैं गिरीशा॥
तबलगि श्रीमहाराज कुमारा॥
लहहु सुमेरु सिंह सुखभारा ॥४॥

वर्तमान समयकी पहेली।

आधो दरजी और बजाज, राखत हैं अपने हित काज॥
आधो आवै जाके हाथ, रहै सकल जन ताके साथ॥
सगरो जाके सदन रहाय, महा प्रतापी पुरुष कहाय॥
है कारो दृढ कहौ विचारि, चन्द्रकला तुम मानौं हारि ॥१॥

गजराज।

कारो है पैकाग न होई, भारोहै पशौलन सोई॥
करै नांक सौं करको कार, अर्थ करौ कैंमानौं हार ॥२॥

राजा।

आदि कटे तौं दिल ही जावै, मध्य कटेतैं सरसुख धावै॥
अन्तकटेतैं होय सुनारी, मैं यह अद्भुत बात विचारी॥
तीन बरनको जासु शरीरा, हैजग पूज्य कहत मतिधीरा॥
याको जलदी अर्थ बतावो, चन्द्रकला नतु चुप होजावो ॥३॥

बादल।

आदि भागद्वै जिहिकर माही, सोसब जग वसकारक आही॥
द्वितिय भाग या जगत मझारा आवै सबकै काम उदारा॥
तृतिय भाग है अति बलवाना प्रबल प्रतापी सूर महाना॥
तीन भाग मिलि है जगपाला, चन्द्रकला अति बल छविवाला ॥४

सरदारसिंहजी।

प्रथम भाग कञ्चनको योना, दूजो महावीर बलवाना॥
तीजो लहि सब गुरुता पावै, चौथामैं सबही मनलावै॥
पञ्चम भाग सबनको प्यारो सब मिली भयो जगत रखवारो ॥५॥

सुमेरुसिंह महाराजकुमार।

दोहा।

आदि भाग है कुल नृपनामी, दूजो रनमैं निर्भयगामी।
तीजो भाग भयङ्कर भारौ, महा प्रतापी अति बलधारी॥
तीन भाग मिलिकै इक आही, सील सिन्धु तिंहि सम कोउ नांही।
है जगपालक सहित विचारा, अर्थ करौकै सुनहु उदारा॥६॥

रघुवीरसिंहजी।

दोहा।

आदि भाग है दीनदयाला, दूजो देवनको प्रतिपाला।
तीजो है बनराज सदाही, चौथो प्रभुता दायक आही॥
पञ्चम सबहीको हितकारी, छठन लगै सबहीकौं प्यारी।
सब मिलिकै सुजगत जस छावै, पण्डित होय सुअर्थ बतावै॥७॥

राघवेन्द्रसिंह महाराजकुमार।

कवित्त।

सब गुन खानी महारानी रघूवीरजूकी,
परम सयानी दयाधाम सुखकारी है।
जोधपुर भूपतिकी तनया सुहाग भरी,
मति विसतार मांहि शारदा विचारी है॥
चन्द्रकला ताकै भये जग सुखकार सुत,
राघवेन्द्रसिंह अरिसिंह मदगारी है।
शीलता उदारतामैं जन प्रतिपालमांहि,
यासमयही है ऐसी औरन निहारी है॥१॥

फुटकर कवित्त।

एक बार आलिनकौं संगले सलौनीबाल,
सूरजसुताके तीर कोऊ ना जिते रहैं।
करि असनान चीर पहरि सुढार अति,
ताको मुख देखि कौंल छबिकौं रिते रहैं।
चन्द्रकला ताही समै आगये अचानकहीं,
प्यारे मनमोहन हू भरि जोहिते रहैं।

इकटक होइ देखि राधिकाके आननकौं,
चित्रके लिखेसे घरी चारलौं चितै रहैं ॥१॥

सवैया ॥

जो अति दुर्लभ देवनकौं तन मानुष सौ निज पुण्य न पावै ।
इन्द्रिनके सुखमैं लय होय जु ईश्वर ओर न नैंक लखावै ॥
चन्द्रकला धिक है तिंहिं जीवन नारि सुतादिकसैं मन लावै ।
है मतिहीन मवीन बन्यौं वह काचके लालच लाल गमावैं ॥२॥

वनिता बिछुरी पतिसैं जिनको दुख कौन सुनै अरु कासौं कहै ।
छिन हूं कल नाहिं परै कबहूं निशिवासर जीव कसालो रहै ॥
कहि चन्द्रकला उर लाग लगै तब तामधिही अति पाग्यो चहै ।
जल स्वाति सनेह सन्यो कहिकैं पपिहा पिव पीय पियासो रहै ॥३॥

सीतहि लेय महाधन देय करौ हित राम रमेश हरी है ।
जो नहि मानहुगे मति मोर तु आपति भीति अथाह भरी है ॥
चन्द्रकला तुम हौ न कछू उन बालि महा बल मृत्यु करी है ।
रावण नारि कहै पियसौं सिय ह्यां विषबेलि प्रचन्ड परी है ॥४॥

मैं पठई हरि आगम हेत गयी जब तौ बर वेग विचारे ।
का गति होय गयी तहं तोरि शरीरहुके सब होस बिसारे ॥
"चन्द्रकला" दरकी अंगियां पलट्या पटकौ न विचार विचारैं ।
बोलत नाहिं न लेत उसास मिले कि नहीं कहु प्राणपियारे ॥५॥

नखतौं सिखलौं सब साजि सिंगार छटा छबिकी कहि जात नही ।
संग लाय अलीन लली ललचाय चली पिय पास महा उमही ॥
कहि चन्द्रकला मग आवतही लखि दौरि पिया तिय बांह गही ।
नहिं बोलि सकी सरमाय लली हरषाय हियैं मुसक्याय रही ॥६॥

बाजत ताल मृदङ्ग उपङ्ग उमङ्ग भरीं सखियां रङ्ग बोरी ।
साथ लिये पिचकी करमांहि फिरैं चहुंघा भरिके सरकोरी ॥
चन्द्रकला छिरके रङ्ग अङ्गन आपसमाहिं करैं चितचोरी ।
श्रीवृषभानु महीपति मन्दिर लाल लली मिलि खेलत होरी ॥७॥

अनोछन्दम्।

कवित्त।

देखी एकबाल आज न्हावती जमुन जाके,
भाल भौंह अर्ध चन्द्र धनु निदरत है।
नैन देखि मीन कञ्ज खञ्जनकौं दुःख होत,
नासिका कपोल उर मोर बिचरत हैं॥
"चन्द्रकला" पूरन कलाधरसो आनन हैं,
चिबुक अधरदन्त मनको हरत हैं।
कौंन भांति कबधौं मिलैगी वह मोहि जाके,
उरज अमोल गोल घायल करत हैं॥ ८॥

सवैया।

बाल बियोग वरी मुरझायहुती चित आलिनसैं शिर नायकै।
मोहनके गुन ग्रान अपार बखानत ही सखिया भल भायकै॥
चन्द्रकला तब ही प्रिय आगम आय कह्यो सखिनै सभुभायकै।
आवत दूरहितें लखि दौरि रही पियके हियसौं लिपटायकै॥ ९॥

कवित्त।

सुन्दर सिंगार साजि अमल असीनमांहि,
बैठी वृषभानसुता उपमा न ताकी है।
ताही समैं आया घनश्याम ले सखयेन सङ्ग,
जिनकी अनेक कामदेव सम झांकी है॥
चन्द्रकला देखि तिन्है बोली ललचाय लली,
त्रिभुवननाथ कृपा मोपै महा यांकी है।
तुम ही करत मजारचनारु पालनाहू
जिनमैं करत प्रलै रोरी दीठी बांको है॥१०॥

सवैया।

कपिनाथ महा बल बालि नशाय, कस्यो कपिराज सुकराड सुभाती।
दल बानर भालनको संग लेय गये निरखो अति लङ्क कपाती॥
कहि चन्द्रकला हनि रावनकों बुलवाय लई सिय ही हरषाती।
मुसकावत बाल विनोद भरी जब ही जब राम लगावत छाती॥११॥

ध्यान करै तुम्हरो निसिवासर नाम तुम्हार रटै विसरै ना ।
गावत है गुन प्रेमपगी सग जोवत है छिन दीठि टरै ना ॥
चन्दकला वृषभानसुता अति छीन भई तन दीख परै ना ।
बेग चलो न विलम्ब करो अतिव्याकुल है वह धीर धरै ना ॥१२॥

कवित्त ।

सांवरे सलोने मनमोहन ललाके हेत,
त्यागी कुलकानि हम जग झरझारे हैं ।
सुत भरतादि देह गेहसौं सनेह त्यागि,
भई लवलीन तन मन धन वारे हैं ॥
चन्दकला कहै ऊधो वेहू हमहीमें लीन,
तन मन लाय होत रहे निरधारे हैं ।
तुमसे वसीठ आये जोगको सन्देस लाये,
अब हम जानी हेत हमरे बिसारे हैं ॥१३॥

कविराज चण्डीदान ।

ये मीसन जातिके चारण बूंदी दरबारके कविराज थे । इनका जन्म १८४८ में हुआ था और देहान्त कातिक वदी ३० सम्बत् १९८२ को हुआ । महाराव राजा विष्णुसिंहजी और रामसिंहजीके राजमें चारण भाटों तथा पण्डितोंको दान देनेका निश्चय इनकी अनुमतिसे होता था, इससे इनकी गति साहित्य शास्त्रमें विशेषकरके हो गयी थी । क्योंकि वे लोग पहले इन्हींसे मिलते थे और अपने अपने गुणोंका परिचय देकर इनके कृपाकांक्षी रहते थे । इस प्रसङ्गसे अनायास इनका अभ्यास काव्यकुशलतामें दिन दिन बढ़ता जाता था । जो निदान इनके महत्वका हेतु हुआ और जिसका इनको यह फल मिला कि महाराव राजा विष्णुसिंहजीने इनकी कविता और विरुद्प्रकाश नाम ग्रन्थकी रचनासे प्रसन्न होकर होलूदा ग्राम ताम्रपत्र करके दिया लक्ष-मणगज हाथी तथा लाख पसाव और रहनेको मकान देकर बड़े आदरसे विदा किया ।

चण्डीदानजी बड़े नशेबाज थे। परन्तु अन्तमें सब प्रकारका व्यसन छोड़कर पैदल नङ्गे पांव तीर्थयात्रा करनेको निकले और चारों धाम करके काशीमें गये और वहीं काल प्राप्त हुए। ये वेदान्तमें अद्वितीय थे और शास्त्र विद्यामें भी एक ही थे;

इन्होंने इतने ग्रन्थ बनाये हैं।

१ सारसागर, २ बलविग्रह—जिसमें गोठड़ेके महाराजा बलवन्तसिंहकी लड़ाईका वर्णन है जो १ वीर हाड़ावन्स थे और बूंदीकी सेनासे लड़े थे। ३ वंशाभरण, ४ तीजतरंग, ५ विरुद प्रकाश।

इनकी यह कविता कविराय गुलाबसिंहजीने भेजी थी।

मनोहरम् ।

कवित्त ।

झुम्मत घटासे घनघोरसे घुमड घोर,
उमडत आये कमठांनतें अधीरसे ।
चपर चपेट चरखीनकी चलाचलतें,
धूरि धूम धूमस धकात बलिबीरसे ॥
मत्त मतंग रामसिंह महिपालजूके,
कामिनि डराये मदछाकिनि छकीरसे ।
बाजे घांट भारन अखारनके जैतवार,
भारनके अचल पहारनके पीरसे ॥१॥
छूटे जमदूतसे जनून जोर जाजुलित,
मत्त मतंग मदमाते हमगीरमें ।
दन्तनकी दाबनैं सिंदूर सोणासम हैं,
झरत पहार झरनासे झरनीरमैं ॥
देखो रामसिंह ए धुरांनकी धकाधकतें,
धूजि धूजि धरनी धरै न मन धीरमैं ।
पीर पीर प्रकट पुकार संधि सुंडिनकी,
भौंरनके झुंडके भुसुंडनकी भीरमैं ॥२॥
तुखद बताब डग डारत डगर बीच,
तरल तताथी तुरताथी आवजावमैं ।
राग कोर पेटतैं उमंग अंग अजंमै,

नाचत निकायो तान चाल चितचावमैं ॥
रामसिंह नृपके तुरंग चतुरंग मोर,
ठौर ठौर ठाये कवि कीरति कहावमैं ।
ऐसी गति नावमैं न चपला चलावमैं,
न भामिनिके भावमैं न पातुरिके पावमैं ॥३॥
फागुनमैं फाग यूं रचायो नृप रामसिंह,
मुदित मनोज मनमानिनि मरदमैं ।
अंवर लूं उड़ैत अबीरकैं अबीरके जे,
अरुन अनेक हरियारे ह्वै हरदमैं ।
पलट पसंगनको दपट दराज दौर,
ठौर ठौर टेलि जाफरांनी के जरदमैं ।
गिरिसे उतंग गरज ले गजराज गज,
गड़ि गढ़िजातके गुलालकी गरदमैं ॥४॥

सवतिका।

सवैया।

नांहि कछू वढनूं घटनूं, सुखपंधु अरिन्दनके हिय दाहन ।
स्यामघटा समसे गजराज, पटालखदौरु वाज सुवाहन ॥
राम दिवान कृपाधन आनंद, प्रेमसखा सबकौं अवगाहन ।
मोहन मंत्र मनों महिपाल, पठ्यो वसकारसमीप सिपाहन ॥१॥

मनोहरम् ।

कवित्त।

पनीको प्रचंड अंड कीनूं पंचभूत पिण्ड,
जामैं धल्यो जीव मंडवानीको वनायरे ।
संकट गरभ हल्यो पोखन भरन कह्यो,
बुद्धिको प्रकास धल्यो वदन वतायरे ॥
अंतरको जामी जासौं मत ह्वै हरामी,
फेरि परि हैं तो खामी कौन करि हैं सहायरे ।
तारन तरन जाको कारन समझि उर,
चारन भयो तो गिरिधारनकौं गायरे ॥ १ ॥

कविराजा सूरजमलजी।

ये कविराजा चंडीदानजीके बेटे थे, कार्त्तिक वदी १ संवत् १८७२ को जन्मे और अषाढ़ बदी ११ सवत् १९२५ को धाम प्राप्त हुए। महान कवि थे और बहुत फुरतीसे षटभाषा अर्थात् संस्कृत, प्राकृत, सूरसेनी, मागधी, पैशाची और ब्रजभाषामें कविता करते थे इन्होंने यह विद्या विशेष करके तो अपने पितासे ही सीखी थी और इनके पिताके दानाध्यक्ष होनेसे इनके घर देशदेशान्तरके कवि और पंडित आते रहते थे; उनसेभी इनको साहित्यके विषयमें बहुत कुछ सहायता मिलती रहती थी। निदान २०।२५ वर्षकी अवस्थामें तो यह पूरे आशुकवि होगये थे, ऐसा लोग कहते हैं। और उसी समयमें इन्होंने महाराव राजा रामसिंहजीकी आज्ञासे वंशभास्कर ग्रंथ बनाना आरंभ करदिया था, जो इनके जीवन पर्यन्त समाप्त न हुआ जिसका कारण बारहट कृष्णसिंहजी, जिन्होंने वंश भास्करकी टिप्पनि की है, ऐसा कहते थे कि जब महाराव राजा साहिबने सूरजमलजीसे अपने वंशका इतिहास बनानेको कहा था तो इन्होंने निवेदन किया था कि मैं आपकी आज्ञासे बनाऊंगा तो सही, परन्तु जो सच बात होगी वही लिखूंगा आप बुरा न मानें। जब रावराजाजीने यह बात मान ली, तो ये ग्रन्थ रचनेलगे और अगलेराजाओंके गुण अवगुण जैसे कुछ निश्चय होते गये, लिखते रहे। जबराव राजाजीकी बारी आयी और उनके गुण दोष भी लिखे गये तो इन्होंने इनसे कहा कि आपने मेरे बापदादा परदादा वगैराके जो दोष लिखे हैं उनको पढ़कर तो मैंने जैसे तैसे सबर किया; परन्तु अपने दोषोंके लिये नहीं कर सकता। इन्होंने कहा कि, जब सबके दोष लिखे गये हैं तो आपकेभी लिखे जावेंगे। महाराव राजाजीने कहा कि ऐसे लिखने से तो नहीं लिखना अच्छा है यह सुनकर उसी दिनसे इन्होंने वंशभास्करका बनाना छोड़ दिया, जो इनके पीछे इनके बेटे मुरारिदानजीने महाराव राजाजीके कहनेसे पूरा करके उसका पुरस्कार भी प्राप्त किया।

सुना है कि सूरजमलजी भी बड़े विलासी और शराबी थे, परन्तु शराब पीकर संज्ञाहीन नहीं होजाते थे, बरन कविता बनानेकी झड़

बांधते थे। दो लेखक जो दावें बायें बैठे रहते थे, मुशकिलसे उनकी उस समयकी कविताको लिख सकते थे। वह दारू क्या थी मानो इनकी काव्यशक्ति बढ़ानेकी दवा थी।

एक बार भिनायके राजा बलवन्तसिंहजीने इनके वास्ते दारू भेजी थी, जिसकी प्रशंसामें इन्होंने उनको यह कवित्त लिखा था।

कवित्त।

मोद करि ऐसो मधु मधुर पठायो भूप।
आयो बैठ केतकी गुलाब सुम छाजेपे॥
स्वाद पुनि सरस सुधाहूते सवायो सूम।
लाखनके लखत नमायो नैन लाजेपे॥
ज्यौं ज्यौं रविमल्लको नजीक नचरायो गेहु।
त्यौं त्यौं होय मोहित सुगन्धि सुक ताजेपे॥
आयो जान आखर हमारे बलवन्त आये।
भैरव भवानी दौरि दौरि दरवाजेपे॥

सूरजमलजीका मिजाज भी तेज था, झट बिगड़ जाते थे। महाराज कुमार भीमसिंहजीकी बरातमें बांसवाड़े गये थे, वहां बोहरा रतनलालजीसे जो बूंदीके प्रधान थे किसी बातपर नाराज होकर चल दिये। जब रतलामके पास पहुंचे तो वहांके राजा बलवन्तसिंहजी २॥ कोसतक सामने आकर इनको ले गये और बड़े आदर सत्कारसे १० हजार रुपयेकी जागीर देने लगे परन्तु इन्होंने नहीं ली। महाराव राजा रामसिंहजीने यह सुनकर अपने हाथसे इनको बुलानेका पत्र लिख भेजा जब यह जानेकी तैयारी करने लगे तो राजा साहबने सेरजी पासवानको भेजकर कहलाया कि, बूंदी मत जाओ, २५ हजार रुपयेकी जागिर लेलो। इन्होंने कहा क क्या करूं? महाराव राजा रामसिंहजी बिना मेरा दिल नहीं लगता है। अंतमें राजाजीने अपने सरदारोंमेंसे सबलसिंहजी और भीमजीसे कहा कि जाकर सूरजमलजीको समझाओ सो यहीं रहें। उन्होंने आकर बहुतसी कहा सुनी की और यहां तक कह दिया कि यह याद रखना कि, ऐसा देनेवाला नहीं मिलेगा, तब तो यह भी

तड़ककर बोल उठे कि तुम भी याद रखना कि ऐसा नहीं लेनेवाला भी नहीं मिलेगा और उसीक्षण सवार हो कर बूंदी को चले आये।

इनके बनाये इतने ग्रंथ हैं ;—

१ वंश भास्कर महाचम्पू।

२ बलवन्तविलास।

३ छन्दोमयूख।

४ वीर-सतसई।

कविराव गुलाबसिंहजीने इनके विषयमें लिखा है कि "ये व्याकरण, न्याय, साहित्यादिमें एकही थे और वेदान्त मीमांसामें अद्वितीय थे। मैं बढ़ाके क्या लिखूं, उनके बनाये ग्रन्थावलोकनसे यथार्थ ही दृष्टिपथ होगा।"

इनके बनाये ग्रंथोंमेंसे वंशभास्कर हमारे पास है परन्तु इसकी कविता प्रासाद नहीं है। अत्यन्त ही गूढ़ और क्लिष्ट है। बारहट कृष्णसिंहजीने, जो टिप्पणी की है उससे कठिन शब्दोंके अर्थ तो निकल जाते थे परन्तु आशय सुगमतासे नहीं खुलता। इस ग्रंथमें चौहानोंके इतिहासके साथ और राजपूत जातियोंके इतिहासके सिवाय सब शास्त्रों और पुराणोंके आशय भी सविस्तर लिखे हैं जिससे ग्रंथकर्त्ताकी विद्वत्ता पायी जाती है और इस विषयमें तो यह ग्रंथ सब प्रकारके विद्यार्थियोंको बहुत उपयोगी है। परन्तु केवल इतिहासके अनुरागियोंको कठिन कवितामें होनेसे शीघ्रही फलदायी नहीं है।

इसकी कविता ६ प्रकारकी भाषाओंमें गद्य-पद्यमयी है। मैंने इसका उल्था भी हिन्दीमें कराया है। यदि कोई बड़ा प्रेस इसके छापनेका साहस करे, तो लाभके सिवाय यशका भी भागी हो। *

वंशभास्करके सिवाय दूसरी कविता इनकी कुछ सरल भी है और दोनों प्रकारकी कविताओंके कुछ नमूने नीचे दिये जाते हैं।

---

* इसमें जो बूंदीके हाडावंशी चौहान राजाओंका इतिहास है। उसका सारांश तो पण्डितवर गङ्गासहायजीने हिन्दीमें लिखकर छपा दिया है जिसका नाम वंशप्रकाश है।

कवित्त ।

लग्गे बाग टल्ला बेबरच्छी जात भल्लापर,
भल्ला रव कल्ला पद नूपर ठमकठमैं ।
सत्रुनके सुल्ला उर उल्लासन ताई पूर,
वयमैं नवल्ला तोये लल्लासे उमकठमैं ॥
राम दिन दुहके तरल तुरङ्ग ताते,
गजनको ठल्ला देत घल्ला जब गमठमैं ।
हल्लाकर हांकेतैं मचल्ला देत मेदनीको,
चिल्ला जाय डारत कुरङ्गनके कण्ठमैं ॥१॥
आरन बयाने जर तारनके जीनवारे,
आरनके अडर हजारनके मोलमैं ।
बेग बलबाहक अरिन दल दाहिकजे,
गमनके गाहक बलाहकसे बौलमैं ॥
राम दिन दुलहके तरल तुरंग ताते,
चक्कर समान फिरैं छक्कर न चौलमैं ।
डाकर भरेतैं रङ्क साकर कितोक बात,
चाकर ज्यों चलत दिवाकर चन्दौलमैं ॥२॥

अन्योऽप्यम् ।

कवित्त ।

आप भद्र आसनपैं रसना सनासनपैं ।
लच्छी निलयासनपैं बासनि बहतु हैं ॥
शिविका सुखासनपै सुकवि सुमेधा सूर ।
कर कमलासनपै असि उमहतु हैं ॥
हरि हृदयासनपैं जय बिशिखासनपैं ।
द्वीप सप्तकासनपै कीरति कहतु हैं ॥
धर्म्म धुर धोरी धन्य रामराव राजा जाको ।
सत्रु मुकुटासनपैं सासन रहतु हैं ॥१॥

ऐसा ही १ और कवित्त भी इन्होंने कहा था जिसका पिछला चरण यह था कि, "रोऊं राजधानीको राजधानीको न रोऊं राजाको" जिसका गूढार्थ तो यह था कि, मैं राव राजासे पहल

मर जाऊं परन्तु इसपर और अगले कवित्तके प्रथम चरण आठ भद्र आवनपर भी इनके शत्रुओंने महाराव राजा साहवको इनकी तरफसे बहका दिया था कि इन्होंने आपके वास्ते अशुभ शब्दोंका प्रयोग किया है और इसका परिणाम यह हुआ था कि इन्हें कुछ दिनोंके लिये बूंदीको छोड़ देना पड़ा था।

वंशभास्करसे कुछ कविता।

मल्हारराव हुल्करकी जयपुरपर चढ़ाई।

छन्दनाराच।

चढ्यो मलारलैं तुखार नौं हजार नज्जुते,
धये सधीर तानितोर जंगधीर जज्जुते।
बजे निसान स्वानजे दिसा दिसान वित्थरे,
चमंकि पाद्दि चिक्कुरी डिगेरु दिक्करी डरे॥१॥
हजार पंच सेनदेस छोरु काज मुक्कली,
रुसापुरी समीप लौं गये ति लूटते वली।
हजार अंक हे लिये मलार उप्पलोंइतें,
जितें जितें चलात खात खप्पतें तितें तितें॥२॥
दुलैं नकीब ढक्कमे हुलैं हरौल हक्कदैं,
तुलैं तुरंग तक्खरे धरा धुजात धक्कदै।
उमेद माधवेसहू सजे दुरूह सत्य ह्वै,
करिद्ध जास कुम्भमैं पिले प्रचारि पत्थ ह्वै॥३॥
जरीनके कलापके कलाप केतुके खुले,
चले समग्ग खूक खग्ग सेन अग्ग संकुले।
खिचैं कमान वीचवान दण्ड तुण्ड दन्त ह्वै,
करैं कटारके कपार देवदार कंत ह्वै॥४॥
झरैं तुरंग फेट भंग पक्खरंग झण्डके,
खिरैं खलीन खग्ग खील दुंदुभी न खण्डके।
कटैं कपाल भिन्न भाल आंखिलाल उच्छटैं,
वटैं विसाल ग्रीवगाल जन्तुजाल त्यौं फटैं॥५॥
कुकैं हुकैं फुकैं कलेज कुम्भके रुकैं लुकैं,
सुकैं करीन दान तान गान अच्छरी चुकैं।

छिकैं चिकैं किरीटकेक ओट चोटकी टिकैं,
थकैं जकैं हकैं कितेक बाढ़ बन्हि कैं लिकैं ॥६॥
जगैं प्रकोप अङ्क ओप केकतोप त्यौं दगैं,
झगैं बिसाल सोर झाल दीपमालसी लगैं ।
जचै सुमल्ल जंगके तुरंग तापमैं तचैं,
रचैं नकारि रारिकै डकारि डाकिनी नचैं ॥७॥
गजैं गरूर पूर सूर कूर नूरके तजैं,
सजैं रजैं भजै न नीरके अनीरके भजैं ।
तनैं प्रहार लुत्थिलार मार मारके भनैं,
घनैं घुमाय घोर घाय लाय सत्तसे बनैं ॥८॥
थपैं प्रयान मानकेक ज्ञान कानपैं जपैं,
विसार ज्यों अपार वेग धार सम्मुहे धपैं ।
छवैं छलंगि छोनि है तुसार रंगि गै दवैं,
फवैं अगोट चण्ड चोट ढाल ओटके दवैं ॥९॥
सनङ्कि चौंकि चिल्हनी भनङ्कि गिद्धनी भ्रमैं,
खमैं घटाग खाग भोग भाग नागके नमैं ।
करैं अनेक दावकेक पाव अग्गही परैं,
झरैं प्रसून भूरिमीर बीर अच्छरी बरैं ॥१०॥
सिलैं अभीत जस्पिजीत पीलु बीत है पिलैं,
खिलैं सयान खेचरी भयान भूचरी भिलैं ।
स्वसैं नसैं अनेक सूरकेऊ हुल्लसैं हसैं,
घसैं कितेक नाककेक नाक जायकैं बसैं ॥११॥
थरत्थरी थिराहु पिक्खि तेगकी तरत्तरी,
वगल्लरी लगैं न जास फग्गकी चरच्चरी ।
छगच्छगी छलक्कडड्ढु कोलकी डगड्डगी,
झगझ्झगी दवग्गि लग्गि नाकलों टगट्टगी ॥१२॥
खरी खरी अघाय खायके परे करी करी
घरी घरी घुमाय जाय डाकिनी डरी डरी ।
लजे लजे लकैं लुभाय भीरुके भजे भजे,
लजे सजे सिपाह लेत मार दै मजे मजे ॥१३॥

बटे बटे पिचास वृन्द फिप्फरे फटे फटे,
कटे कटे गहैं कलेज लांगहैं नटे नटे ।
बची बची भिरैं सम्हारि वाहिनी बची बची,
नची नची फिरैं निहारि जुग्गिनी जची जची ॥१४॥
धके धके लरात लोह छोहमें छके छके,
थके थके गिरैं कुथाल ढालतें ढके ढके ।
कढ़े कढ़े किरन्त लोम बक्के बढ़े बढ़े,
गढ़े गढ़े गरडत गिद्ध लुत्थिपैं चढ़े चढ़े ॥१५॥
मिची मिची अनेक अंखि सोनमें सिची सिची,
भिची भिची भुजा अमन्त अन्तरी इची इची ।
कुपे कुपे जुरैं किते कदंगमैं रुपे रुपै,
लपे लुपे लिखात पाप धारतैं धुपे धुपै ॥१६॥
अनी अनी अरैं पटाक्कि घुम्मरी घनी घनी ।
जनी जनी लुभात गात अच्छरी बनी घनी ॥
भई भई भनैं विभिन्नके करैं दई दई ।
नई नई रचंत रारि जोधजे जई जई ॥१७॥
मुरे मुरे मरैं कुमोति देखिवे दुरे दुरे,
बुरे बुरे बजंतबंब ढोलके ढुरे ढुरे ।
हिले मिले बढैं कितेक खीजमैं खिले खिले,
झिले झिले झुकैं अनेक संगितैं सिलेसिले ॥१८॥
चसे चसे फिरैं मलार राहुके ग्रसे ग्रसे,
लसे लसे लखैं तमास धुज्जटी हसे हसे ।
कहे कहे जुरैं कितेक चंडिका चहे चहे,
रहे रहे फिरैं बपा सुगिद्धनी गहे गहे ॥१९॥
झटक्कि इक्क इक्कसौं पटक्कि बज्जसौं परैं,
खटक्कि खग्ग खुप्परी अटक्कि पग्ग उत्तरैं ।
दरक्कि दन्ति देखियौं भरक्कि जैपुरे भजैं,
करक्कि सन्धि कंकटी वरक्कि बाढ़के बजैं ॥२०॥
लचक्कि सेस सकुली मचक्कि भुम्मि बिक्खरैं,
मचक्कि पिट्ठि कामठी गचक्कि पंकमैं गरैं ।

खिलाग्गी सोरकी शिखा फुलिंग फैलते बसैं,
मनोज्ञ मुंड मालिका रचैं'र कालिका रसैं ॥२१॥

खिरंत दंत कंतके करंत हंत दिग्गजी,
गिरन्त शृङ्ग मेरुकी भरन्त स्वास भग्गजी ।

कृपीट खोनके धुनीन कोपके कृशानु व्हे,
दुस्यो बितान धुन्धि भानु दीहसीत भानु व्हे ॥२२॥

रजो मई तमी मई भटालि भीर भूमई,
बिमान जाल देवतान ताल रीझिकैं दई ।

धसैं छुरी छुसार वीर पार नीर धारणी,
स्वसैं उतङ्गके परे मतंग भुल्लि सारणी ॥२३॥

समुद्र उत्तलै हिलोर और और उफनैं,
भनैं शिराह चन्द्रभाल काल कल्पको बनैं ।

अनन्त मांहिं अन्तलै उडन्त चिल्ह चंग व्हे,
हनन्त हत्य अंगके भनन्त सत्य भंग व्हे ॥२४॥

वितण्ड वाटि कान दन्त हस्ति दन्त उप्परैं,
फिरैं सुकुम्भ कोहले पलांडु घण्ट निछ्रैं ।

कटन्त सुण्डिकञ्छुरी प्रवृत्त पाय पीनके,
किलास नास ईपिकारु आलु अंखि कीनके ॥२५॥

कट्टिल कर्णिकावली भटा हृदावली भये,
अरिष्टके अपष्ठ वृन्द लोम कन्द उन्नये ।

बनै अरी पलास कान अन्दु नाग वल्लरी,
कलेज पीलु पर्णिका कसेरु तोर ईकरी ॥२६॥

वनात यों अनेक प्रेत साक व्यञ्जनावली,
कृपानया प्रकार मारकी सलारकी चली ।

कहूँ कितेक हाय माय गाय कायके गहैं,
लहैं कपाय लायके घुमाय घायके सहैं ॥२७॥

चहैं व आय जैपुरे सगैपुरे ससांकरैं,
मल्हार भीमसेनकी गलार गज्जिको लरैं ।

इतैं प्रबुद्ध राम भूप क्रुद्ध युद्ध यौं मच्यो,
सुनों समस्त मौतिकैं उतैं जुरी तिकैं रच्यो ॥२८॥

कविराज मुरारिदानजी।

ये कविराज सूरजमलजीके दत्तकपुत्र थे। इनका जन्म श्रावण सुदी ३ मंगलवार सम्वत् १८८७ को हुआ था और देहान्त संवत् १९६४ में हुआ। ये भी सूरजमलजीके समान ही षट्भाषामें कविता करते थे परन्तु उतनी फुरतीसे नहीं; और वंशभास्करको बहुत अच्छे उच्चारणसे पढ़ते थे। मैं जब सम्वत् १९३२ में पुलिटिकेल एजेण्ट हाड़ोतीके हुक्मसे बूंदीका गेजेटियर लिखनेको गया था तो महाराव राजा श्रीरामसिंहजीकी आज्ञासे इन्होंने मुझको वंशभास्करके कई स्थल जो मैंने सुनने चाहे पढ़कर सुनाये थे। पण्डितवर गंगासहायजी भी वहां आ गये थे, क्योंकि उनको भी हुक्म था कि कहीं संस्कृत श्लोक आ जावें तो उसका अर्थ करनेमें मुरारिदानजीको मदद देवें। उसके पीछे मैंने वंशभास्कर कई चारणोंसे मारवाड़में सुना, परन्तु वह आनन्द नहीं आया। हां अर्थ करनेमें बारहट कृष्णसिंहजीको सबसे अच्छा पाया।

वंशभास्करको सूरजमलजीने जहां छोड़ा था वहांसे इन्होंने आगे चलाकर महाराव राजा रामसिंहजीकी मरजीके अनुसार पूरा किया जिससे प्रसन्न होकर महारावराजाजीने हाथी सिरोपाव और गांव दिया। अगले पिछले सब मिलकर ५ गांव इनकी जागीरमें थे। इन्होंने इतने ग्रंथ बनाये हैं।

१ वंशसमुच्चय, २ डिंगलकोष।

इनकी भी कुछ कविता कविराव गुलाबसिंहजीने भेजी थी जो नीचे लिखी जाती है।

मनोहरम्।

कवित्त।

छोरे भद्र्द्रजके सवालनपै उत्तरदै,
वृद्धनतैं आगैं बढ़ि भाखी भूमि भूतीकी।

* यह छन्द बूंदीके छपे हुए उमेदसिंह चरित्रके पेज ३०६ से ३१३ तक।

हड्डकेल भूषन सुबूंदी पुट भेदनके,
संग्रहि सपूती उक्ति इस पनजतीको ।।
सर्व महिपालपैं समाजके सुरेससुनूं,
कल्पतरु सूज्यौं कल्पवक्षो कविकृतीको ।
रामसिंह भूप यूं तिहारे भुज-दण्डनतैं,
लाज आज लागी राज राज रजपूतीकी ॥१॥

नृपति कितेही द्विज द्वेषी ताहि नाम कहै,
दानवीर ताको औ गंभीर ताको धाम है ।
जन अनुसार मुकुन्दादिकतैं सेवित हैं,
बांधव गुपाल आदि नेह आठ जाम है ॥
लक्खनतै सोभा अति सोभित सदा ही रहै,
वीर शत्रुघ्न तातैं प्रताप अति वाम है ।
भृगुपति राम है कि, यदुपति राम है,
कि रघुपति राम है कि राव राजाराम है ॥२॥

कीरति तिहारी सेत सत्रुनके आननमें,
ठौर ठौर अहो निसिमेचक मिलावैं हैं ।
बहुत प्रताप तम साधु जन मानसकों,
रलो सीर अमृत ज्यौं शीतल करावैं हैं ॥
प्रभुसे प्रतापी प्रजापालन प्रचण्ड दण्ड,
उत्तम मर्य्याद चित्त सज्जन चुरावैं हैं ।
महाराव राजा श्रीदिवान रघुवीर धीर,
रावरे गुनूंके रवि लच्छन लखावैं हैं ॥३॥

डिंगलकोश डिंगल भाषाके कवियोंके लिये बहुत उपयोगी है । इसके ४ खण्ड हैं । पहिलेमें तो मंगलाचरण राजा तथा कविका वंश और राजकर्मचारियोंके गुणोंका वर्णन है दूसरे और तीसरे खण्डमें डिंगलशब्दोंका संग्रह अमरकोशकी रीतिपर है । चौथे खण्डमें डिंगल भाषाके गीतोंकी जातियां तथा बनानेकी विधि कही है । इसका भी कुछ नमूना नीचे दिया जाता है ।

मंगला चरण ।

गीर्वाणभाषा-अनुष्टुब ।

गजास्याय नमो नीलाम्बुज राजीव कान्तये ।
सर्व देवाधिदेवा यामित भास्कर तेजसे ॥१॥

शुद्ध प्राकृतभाषा आर्या ।

वन्दे अहयं वाणो अम्माण ज्ञांत हारिणी देवीं ।
भत्ते दुक्खिवा कत्तारिं सद्दं समुद्दस्स जण हतीं ॥२॥

पिङ्गलभाषा ।

कथ्यते मनोहरम

सेस असरेस औगनेस पार पावैं नाहिं,
जाके पद देखि देखि आनन्द लियो करैं ।
अक्षर है मूल फेरि व्यक्त और अवयक्त भेद,
ताहीके सहाय सब उपमा दियो करैं ॥
अव्यहै संज्ञा तीनौं कालमैं अमोघ क्रिया,
जाके रसलीन होय पीयुख पियो करैं ।
रचना रचावै केही भांतितैं मुरारिदास,
ऐसे शब्द ईश्वरकों नर्मन कियो करैं ॥३॥

घनाक्षरी ।

कवित्त ।

मोह तम प्रबल निकंदन प्रकासरूप,
विघन विदारनको अन्तक स्वरूप जोउ ।
पालनमैं तत्पर कृपालु बिलुकार नहीं,
आसुतोस बरद अनाद कालहींतैं दोउ ॥
जाकी कृपा वाक्य द्वारा मनको प्रकासै भेद,
सेवक मुरारिके हियेमैं पग धारी सोउ ।
गुरुकों गनाधिपकों पितु रविमल्लजूकों,
शिवकों शिवाकों वानी रानीकों प्रनाम होउ ॥४॥

दोहा ।

आड अद्रिके पार्श्व इक, उत्तम दक्खिन ओर ।
पुर बूंदिय आनन्द प्रद, ठीक बसत सब ठौर ॥५॥

गणेशनामानि।

गवरीनन्द १, गणेश २। गणपत ३, गज-आनन ४, गणप ५॥ कंडो अरघ अरेस। आपो उकति नवीन अब ॥१७॥ गजानन्द ६, गणराज ७। लम्बोदर ८, कालोसुतन ९॥ मेटन विघन समाज। उमा कंवर १०, गणवै ११, अबै ॥१८॥ मूसावाहण १२ माण। दाख विनायक १३ इकरदन १४। जेमहुडम्बी १५ जाण। परलीतस १६, हेरम्ब १७, पढ़ ॥१९॥

कविराज चण्डिदान।

ये सैयारिया जातिके चारण कोटे दरबारके अजाची थे अर्थात् महारावजीके सिवाय और किसीका दिया हुआ नहीं लेते थे। इनके दादा रतनाजीको एक बार कोटेके कामदार झाला जालिम-सिंहने कुछ देना चाहा तो नहीं लिया। इससे नाराज होकर उन्होंने इनकी जीविका छीन ली। इन्होंने महाराव किशोरसे कहा, परन्तु उनकी कुछ चलती नहीं थी। जालिमसिंह जो करते थे वही होता था। इसलिये रतनाजी रोटी छीन जानेके दुःखसे हिमालयमें जाकर गल गये। इनके बेटे शङ्करदान बालक ही थे। उनको काका करनीदान बांसवाड़ेमें ले गये, जहांके छूटे हुए १ गांवका तांबा पत्र इनके पास था वही रावलजीको दिखाया। रावलजीने इनकी दुर्दशापर दया करके वह गांव फिर दे दिया।

शङ्करदानके ३ बेटे भवानीदान, ऊदजी और लछमनदान हुए। इस बीचमें जालिमसिंह और महाराव किशोरसिंह मर चुके थे। रामसिंहजी महाराव हो गये थे और राजका काम झाला मदन-सिंह करते थे, दोनों खटपट हो रही थी, इस अवसरपर भवानीदान अपनी बापोतीके गांव तूणपुरमें आ गये। यह सुनकर मदनसिंहने इनको बुलाया परन्तु ये उनके पास तो नहीं गये और परभारी टिप्पस लगाकर महारावजीसे जा मिले। महारावजीने जब तो इनके ३) रोज अपने हाथ खर्चमेंसे कर दिये परन्तु सम्वत् में मदनसिंहको तीसरा भाग कोटेके राज्यका देकर झालरापाटनमें भेज दिया और राज्यमें अपना हुक्म जमा लिया। तब इनकी पुरानी जीविकाके सिवाय कोटड़ो नाम १ और गांव भी कोटेके पास ही

दे दिया, उस दिनसे दरबारमें इनकी प्रतिष्ठा दिन दिन बढ़ती गयी और सम्बत् १९१४ के गदरके पीछे तो ये मुसाहिब ही हो गये। राज्यका सारा काम करने लगे, उस समय इनको "सोना तीजीम कविराज" पदवी, सिरोपाव और ८।९ हजार रुपयेकी उपजका १ और गांव बणोद नाम मिला।

भवानीदान जब ये सब बातें अपनी मासे कहनेको गये तो माने कहा कि यह तो तुमको धारीजणा (मुबारक) हो, परन्तु मैं तुमको जब सपूत कहूंगी कि हड़ोतीके चरणोंपर जो दण्ड राज्यका लगता है वह छुड़ा दोगे। भवानीदानने महारावजीसे अर्ज की। महारावजीने इनकी खातिरसे वह दण्ड छोड़कर परवाना लिख दिया, जिसको लेकर ये माके पास गये। माने शिरपर हाथ फेरा और शाबाशी दी। इस तरह इनके मुसाहिब होनेसे हाड़ोतीके सब चरणोंका भला हो गया। फिर इन्होंने अपने भाई लछमनदानको भी ३०००) की जागीर दिलवा दी और बांसवाड़ेका गांव ऊदजीके पास रहने दिया।

सम्वत् १९२५ में भवानीदानकी मुसाहिबी उतर गयी और सम्बत् १९२७ में वे भी मर गये। उनके सन्तान न होनेसे ऊदजीके ३ तीन बेटोंमेंसे चण्डीदान उनको गोद आये। भवानीदान तो भाग्यवान ही थे। विशेष पढ़े लिखे नहीं थे, न कुछ कविता करते थे। भाग्यबलसे कविराज हो गये थे परन्तु चण्डीदान जो उनके पीछे कविराज हुए इस पदवीके पूरे पात्र थे क्योंकि संस्कृतमें महाभाष्य और शेखरतक पढ़े थे और कविता भी अच्छी करते थे। इन्होंने अपने काका लछमनदानसे जो बड़े चाबुकसवार थे पूछ पूछकर "हयगतिप्रकाश" नाम ग्रन्थ घोड़ोंके विषयमें बनाया। दूसरा ग्रन्थ "छन्दद्दिवाकर" संडाइच हरदान सीगड़ेवालेकी सम्मतिसे बनाना आरम्भ किया, परन्तु अधूरा रहा। हरदानजीने उनके मरे पीछे पूरा किया।

हरदानजीने भी इनसे लघुकौमुदी, तर्कसंग्रह और कुछ कुवलयानन्दकी टीका, अलङ्कारचन्द्रिका पढ़ी थी।

सम्बत् १९१४ के गदरमें जब लाला जैपालने कालोंसे मिलकर

महारावजीको किलेमें घेर लिया था तो बूंदीके प्रसिद्ध सूरजमलने कोटेके हाड़ोंके उपहासका यह कवित्त बनाकर चण्डीदानजीके पास भेजा ।

कवित्त ।

पन्नु परे श्राह व श्रवन्तिके उछाह पर,
जा जय बिलग्गो राम धाराकर बालकी ।
पित्थलक वर राजमहल रिझाई रम्मा,
जोध नगरूके जङ्ग रङ्ग भूप लालकी ॥
असर श्रछुती ठानि हुलकर सोहर भरयो,
रास वांकरें है अवधार कलिकालकी ।
जानत हैं जबतें मधानी बड़े मानी हैं पैं,
आज यह जानी खानी जूती जै दयालकी ॥१॥

चण्डीदानजीने विचार कर देखा तो तीसरे चरनमें जहां सोहर शब्द है वहां काव्यकी रीतिसे १ अक्षर ज्यादा पाया इसलिये उस जगह सोहरके बदले उसका अनुयायी शब्द अग्ग धर दिया, जिससे अर्थ भी नहीं बिगड़ा और कविताका नियम भी जो बिगड़ गया था सुधर गया और कविताका मोहरा (तुकान्त) बदलकर 'की' की जगहके बना दिया और पिछले चरनमें इस भांति परिवर्तन किया ; जानी यह हानी खामी जूती जैदयालकी

फिर चण्डीदानजीने वह कवित्त महाराव रामसिंहजीको सुनाया तो उन्होंने कहा कि सूरजमलजीनें हमें बुरा कहा है तुम भी रावराजा रामसिंहजीका बुरा कवित्त बनाकर सूरजमलके पास भेज दो, तब इन्होंने यह कवित्त कहकर बूंदी भेज दिया ।

कवित्त ।

कोटापति भीमकूं खोसलई बुधवारे बीच,
पीछी दई बूंदी जान भ्रात निरधार है ।
श्रीजित उमेद समें दाटी नृप जैपुरके,
भीम चढ़ि दुन्द जीत्यो जुद्ध बलसार है ॥
कोटीपति केऊ उपकार करे बुंदीपर,
कोटा समें विष्णुसुत लुक्यो जरि द्वार है ।

वृथवेस बारठपनेंको अधिकार पायो,
रावराजा रावरे वकारमें तकार है ॥१॥

चण्डीदानजीकी बहन मारवाड़के गांव पांचेटियामें व्याही थी। वे उसके लेनेको सम्वत् १८२२ में मारवाड़ जाते हुए रातको शाहपुरके पास ठहरे। ५०० आदमियोंकी भीड़भाड़ साथ थी, राजाधिराज लछमनसिंहजीसे कहलाया कि आप कहोतो कल शाहपुरा देखता हुआ चला जाऊं। राजाधिराजने कहा कि भले ही देखते जाओ पर नक्कारा मत बजाना। चण्डीदानजीने बल खाकर कहा कि मेरा नक्कारा हिन्दुस्तानमें कौन रोकनेवाला है मुझे आपके शहरको देखनेकी जरूरत नहीं है। यह कह कर बाहर ही बाहर नक्कारा बजाते हुए चले गये और बारहट कृष्णसिंहजीको एक कवित्त राजाधिराजको सुनानेके लिये दे गये। जब कृष्णसिंहजीने अर्थ करके वह कवित्त सुनाया तो राजा बहुत पछताये और कहने लगे कि हमने लोगोंके कहनेसे उन्हें नाराज किया। जाते समय जब वे यहां आवेंगे तो हम उनको राजी करेंगे परन्तु चण्डीदान तो परभारे निकाले गये और राजाधिराज रस्ता देखते ही रहे वह कवित्त यह है।

कवित्त।

अभ्यसन राखो शस्त्रविद्यामें सदीव शुद्ध,
कित्ती रस चाखो नीति गहिके अभेदकी।
भोज अरु करन रहेनां छिति मण्डलमें,
जीवे जस रूप देह कथन निवेदकी॥
पञ्चनमें मुख्य ह्वैकैं नक्कारा पकरि फेर,
आवे तन आयुध प्रवर्ति चार वेदकी।
ऐसे रजपूती कुल धर्म अवधारो आप,
घर ही समहारो रीति भूपति उमेदकी॥१॥

चण्डीदानजीने महारावजीके सिवाय उस समयके और बड़े बड़े राजाओंका भी यथायोग्य जस कहा है जैसे महाराणा सरूप-

* तुम राव राजा नहीं रात राजा हो।

सिंहजी अङ्गरेजोंकी बात कम माना करते थे तो उस भावका १ कवित्त उनकी प्रशंसामें कहकर भेजा, जिसकी अन्तिम भड़ यह है।

कवित्त।

अंकुस बनै हो हितवारे नितवारे आप।
ईसा मतवारे मतवारे कुञ्जरनके ॥१॥

जब जोधपुरके महाराजा तखतसिंहजी अजमेरमें लाट साहबके दरबारसे उठकर आ गये थे तो उस समयमें चण्डीदानजी भी वहां थे। उन्होंने इस विषयका १ कवित्त बनाया था, जिसके पिछले चरनका यह अर्द्धांश है। (तखतेस मुच्छ तानीलैं।)

फिर सम्वत् १९२९ में जोधपुरके महाराजा जसवन्तसिंहजी राज-सिंहासनपर विराजे तो चण्डीदानजीने यह कवित्त कहकर भेजा।

कवित्त।

पूजत चिरायु चटू चन्द्र गोख बाखिनके,
धरम अभिलाखनके सिरपर कर हैं।
रूप रस रणक समान ब्रजभाषापुरी,
चतके प्रमाण दान धीर भूमिधर हैं॥
पातक हरद धुपे दरस न होतें पद,
परसत उच्च फल बाहू बल बर हैं।
कामधुज वंश छत्रधारी जसवन्त चिन्ह,
हरि पद कमल कुमारीकी लहर हैं॥१॥

एक बार दसहरेके दिन जब कि महारावजोकी तलवार पूजाके वास्ते निकाली गयी थी, तब चण्डीदानजीने यह कवित्त महाराव-जोको सुनाया था।

कवित्त।

जीते कैक जुद्धनंचो रहो थान सिंहव पै,
बेर बेर बैरी रक्त चाख तीख डाढ़ाकी।
समर वहुरुजन बनो है कालपुत्री रूप,
छत्री सिर विजय विभूतो तपगाढ़ाको॥
अहो नृप राम ढाबी करमें सुहान भान,
छाबी पर भूमि जङ्ग जीत जोर डाढ़ाकी।

शत्रु, घमसानके बिनीत प्राण लेन काजे,
श्यामते कढ़ी है किरवान राव हाड़ाकी ॥९॥

चण्डीदानजीके फुटकर कवित्त बहुत हैं। जिनमें कई हजार
तो देवीकी स्तुतिके हैं। क्योंकि उनका नियम था कि रोज रोज
वे कवित्त इस विषके बनाकर भोजन किया करते थे।

चण्डीदानजीका देहान्त सम्वत् १८३७ में हो गया। अब उनके
बेटे कोटेके कविराज हैं।

गिरधारीलाल।

ये गिरधारीलाल पण्डित झालरापाटनमें रहते हैं और कविता
सरस और सरल करते हैं। इनके २ कवित्त कविराय गुलाब-
सिंहजीने कवितेन्दु मासिकपत्रसे लिखकर भेजे थे।

कवित्त।

कोई कहै शुभ भारतमें अरै,
दुष्ट बिना शुभ काम सरैगो।
कोई कहै सम देवको निन्दक,
रोगहिमें सच आय भरैगो॥
कोई कहै सब पत्रनमैं,
कवितेन्दुहि आय वराय धरैगो।
कारज तो गिरिधारीलला,
इक राम कृपा सब पूरि परैगो॥१॥

दोधक वृत्ति।

चौपाई।

पूर्व भये रघुनायक ईशा, वास कियो वनमें जगदीशा।
रावणने सियको छलली पै, प्राण दियो मिथिलेश लली पै॥१॥

श्रीनाथजी।

आप श्रीनाथजी पटशाली जेसलमेरके महाराव मूलराजजीके
सभासद् और संस्कृत तथा भाषाके अद्वितीय विद्वान थे। इन्होंने
इतने ग्रन्थ बनाये हैं।

(१) मूलराजविलास (भाषा)

(२) मूलराज काव्य (संस्कृत)

(३) अन्योक्तिमंजूषा

(४) लोलम्ब राजकी भाषा छन्दोबद्ध (वैद्यक)

ये संस्कृतमें तो सद्कवि थे ही परन्तु भाषा कविता भी बहुत सुन्दर और सरस रचते थे, जिसमेंसे कुछ नीचे लिखी जाती है।

रूपविलाससे छप्पय।

सुन्दर कटिपट बान वेद शिव विपुल पयोधर।
सहस किरण दृग चपल नार रिष नाह अवर धर॥
निधसि तभूह बखानि दससपज तीय लजावत।
प्रथम नन्द सुत निरखि सिद्ध कण्टक कसकावत॥
नयनासुर मारण कुंवर जतन करत तोवर हुवण।
व्यासनाथ खेचर सदन अरथ करौ पण्डित निपुण॥२॥

पुनश्च।

सवैया।

आज गई वृषभानके गेह सो नेहको रेहकी रीत नई है।
काल चलै नन्दलाल गोपालसो राधिका आज वियोगी भई है॥
खात न पीत न नैन निहार विहार लतासो तुखार हई है।
व्यास दुरे मन आध कथा बहु लजा भरी किन पैन कही है॥१॥

पुनश्च।

सवैया।

नर काहेंको सोचि करे विकरे अति आतुर होय वृथा तरसे।
भज नन्दको लाल गुपाल दयाल कृपाल सदा सुखमें बरसै॥
दुख भञ्जन रञ्जन सञ्जन ही चित ध्यान धरे हियमें सरसै।
कविनाथ कहै बसुवद्दल ज्यौ प्रभु याद करे बरसै बरसै॥२॥

तैलिङ्ग भट्ट।

ये जेसलमेरके महारावल रणजीतसिंहजीके आश्रित थे। इन्होंने "रणजीतरत्न माला" ग्रंथ बनाया है जो वैद्यक और कवितामें बहुत उपयोगी है। उसमेंका १ कवित्त यह है।

कवित्त।

पङ्कजको पखियां अखियानकी,
कांखनमें कषियान निवारूं।
चन्दको तेज प्रचण्ड भुजा दण्ड,
महाबली जिस कर्ण बखानूं॥
गाऊं गुमान गनीमनको,
जब रावरो रूप हिदेबिच धारूं।
वारूं अनङ्गकी कोटि अदा,
रनजीत महेन्द्रको रूप निहारूं॥१॥

कवि कल्यान।

कल्यानसिंहजी राजवंशी जेसलमेरके महारावल मूलराजजीके सभासद थे और भाषा कविता अच्छी करते थे। यह कवित्त उनका बनाया हुआ है।

कवित्त।

अकुलाई त्रिया चढ़ि है सो अटापर,
श्याम घटा दरसै दरसै।
लाग रह्यौ कर अम्बर धारसो,
नीर भरै बरसै बरसै॥
भरसे नद पूर तुताल भरै,
हीय हेत हतो हरसै हरसै।
कल्यान कहे घनश्यामको देखिके,
याद करे तरसै तरसै॥१॥

इति।